सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जून, 2011 ★ ज्येष्ठ, 2068

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

✦ सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न

✦ फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार

✦ शुद्ध चांदी के बरतन

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स™

आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520 | सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903 | उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644

Visit us at : rcbafnajewellers.com

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

ग्राहक सेवेची पंचसुत्री: १ | प्रामाणिकता २ | वाजिबता ३ | विविधता ४ | हजर स्टॉक ५ | सदाचार

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

चिरजिणं नगिणिणं,
जडी-संघाडिमुण्डिणं।
एयाणि वि न तायंति,
दुस्सीलं परियागयं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.21

चीवर अरु मृगचर्म, नग्नता,
जटा, कंथ, सिर का मुण्डन।
दु:शील व्रती के लिए कभी,
ये सभी न कर सकते रक्षण।।

जून, 2011

वीर निर्वाण संवत्, 2537

ज्येष्ठ, 2068

वर्ष 68 अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	भ्रष्टाचार	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	दृष्टि-परिवर्तन	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	निष्कामता के लिए है नवपद आराधना	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.	12
	जानें मृत्यु और मुक्ति का भेद	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा.	18
अध्यात्म-	संयम की साधना	-आचार्य महाश्रमण	25
तत्त्व-बोध -	अन्तराय कर्म का विवेचन	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	29
चिन्तन -	जैन समाज में बढ़ती व्यक्ति पूजा	-डॉ. अनेकान्त जैन	33
	मोक्ष मार्ग में प्रविष्ट भ्रष्टाचार कैसे दूर हो?	-श्री जशकरण डागा	61
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Jaina Doctrine of Non-Violence (2)	*-Dr. Kokila H. Shah*	37
पुण्य-स्मरण-	आचार्य हस्ती की निःस्वार्थ करुणा	-श्री प्रशान्त करनावट	44
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (66)	-श्री धर्मचन्द जैन	48
	दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (12)	-संकलित	51
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(4)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	55
जीवन-व्यवहार -	गणित के सवाल नहीं होते रिश्ते	-श्री राजकुमार जैन	60
नारी-स्तम्भ -	घर को बनाएँ संस्कार शाला	-डॉ.शैलजा अरोड़ा	63
युवा-स्तम्भ -	समाज की दिशा और दशा का बदलाव	-श्री उत्तमचन्द डागा	67
बाल-स्तम्भ -	शान्ति का रहस्य	-आचार्य आनन्द ऋषि जी	70
स्वास्थ्य-स्तम्भ-	जैन श्रमण की स्वास्थ्यवर्धक जीवन शैली	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	73
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (15)	-संकलित	78
	प्रश्नव्याकरण प्रतियोगिता का परिणाम		106
प्रेरक-प्रसंग -	प्रभु महावीर का वैशिष्ट्य	-श्री शंकरलाल चण्डालिया	59
कविता/गीत-	हे मना!	-श्री नीलेश कुमार जैन	17
	शान्त सुधाकर मान गुरुवर	-श्री धर्मचन्द जैन	54
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	82
दीक्षा रिपोर्ट-	मुमुक्षु कान्ता की दीक्षा	-श्री प्रकाश सालेचा	85
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		92
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		118

सम्पादकीय

भ्रष्टाचार

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

समाज में जो आचरण का प्रतिष्ठित मानक होता है उससे हीन या विपरीत आचरण भ्रष्ट आचरण के रूप में माना जाता है। भ्रष्टाचार व्यक्तिगत दोष तो होता ही है, किन्तु सामाजिक स्तर पर वह तब भयंकर रूप ग्रहण कर लेता है जब उस पर कोई रोक न हो अथवा उसके विरोध में कोई आवाज न उठे। भ्रष्टाचार या घपले का भण्डाफोड़ होने पर व्यक्ति की प्रतिष्ठा दांव पर लग जाती है। मिलने-जुलने वाले व्यक्तियों की निगाह में वह गिर जाता है। समाज में मुख दिखाने लायक नहीं रहता। सरकार एवं न्यायालय भी उसे दण्डित करके ही दम लेते हैं। दण्ड का विधान भी समाज एवं राष्ट्र की सुव्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है।

यह शुभ संकेत है कि देश में भ्रष्टाचार के विरोध में एक अभियान चला है। व्यक्ति, समाज एवं सभी के हित में भ्रष्टाचार का निवारण आवश्यक है। भ्रष्टाचार पहले व्यक्ति के जीवन को गंदला करता है तथा फिर वह गन्दगी समाज एवं राष्ट्र को भी दूषित करती है। भ्रष्टाचारी को लगता है कि वह भ्रष्टाचार द्वारा अपना हित एवं सुख साध रहा है, किन्तु यह उसका भ्रम है। भीतर में वह स्वयं को तो मैला करता ही है, साथ ही उस मैलेपन का अन्यत्र भी विस्तार करता रहता है। उसके इस मैलेपन से जब दूसरों को हानि होती है तो समाज जागता है।

समाज बड़ी मुश्किल से जागता है। भ्रष्टाचार में जब दो या अधिक व्यक्तियों को सन्तोषप्रद लाभ होता है तो यह निरन्तर चलता रहता है। जब किसी को हानि होती है तो फिर वह अपने अधिकार का प्रयोग करता है एवं दूसरे की भ्रष्टता को सामने ले आता है। देशव्यापी एवं समाजव्यापी अभियान तो अन्ना हजारे एवं बाबा रामदेव जैसे समर्थ व्यक्ति ही चला सकते हैं। समाचार-पत्र एवं मीडिया आज ऐसी खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित-प्रसारित करते हैं जो भ्रष्टाचार से जुड़ी हों।

संसार में बुरे या भ्रष्ट व्यक्तियों की कमी नहीं है। सदाचार के सूत्रों का ईमानदारी से पालन करने वाले व्यक्ति कम ही होते हैं। सबसे कहीं न कहीं चूक होती रहती है। क्योंकि जब तक व्यक्ति में लोभ है, राग है, परिग्रह की भावना है,

प्रसिद्धि की चाह है, बिना श्रम के धनार्जन का लक्ष्य है, वासनाओं का गुलाम है, कामनाओं का दास है तब तक व्यक्ति में भ्रष्टता की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। क्योंकि इनसे ग्रस्त व्यक्ति नैतिक मूल्यों की अपेक्षा अपने भौतिक लाभ और ऐन्द्रियक सुख को अधिक महत्त्व देता है। वह चारित्रिक दृष्टि भ्रष्ट होने के पूर्व सम्यक्त्व से भ्रष्ट होता है। सम्यक्त्व अथवा सम्यग्दर्शन के अभाव में व्यक्ति चरित्र या चारित्र से कब फिसल जाए, कहा नहीं जा सकता।

जिस प्रकार व्यक्ति दूसरों को मरते हुए देखने पर भी अपने मरने की कल्पना नहीं करता उसी प्रकार भ्रष्टाचार के आरोप में नित्यप्रति लोगों के पकड़े जाने पर भी भ्रष्टाचारी सजग नहीं होता। देश में अब ऐसा माहौल बन रहा है कि भ्रष्टाचार करते हुए कुछ लोग ठिठकने लगें।

भ्रष्टाचार आज के युग की ही समस्या हो, ऐसी बात नहीं है। यह प्राचीन काल में भी प्रचलित रहा है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में पुलिसकर्मी एक मछुआरे से रिश्वत मांगते हैं। पुराणों में एवं नाटकों में वासना के शिकार अनेक राजा और मंत्री वेश्या और परस्त्री से सम्पर्क रखते हैं। चोरी, लूटपाट, व्यभिचार, परिग्रह आदि बुराइयां सदा से रही हैं, फिर भी हर काल में और हर समाज में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा रही है। समाज में व्यक्तिशः लोग कैसा भी दुराचरण करते हों, किन्तु सामूहिक रूप से सब दुराचरण की निन्दा ही करते देखे जाते हैं। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो अपने प्रति किसी अन्य से दुराचार की अपेक्षा रखता हो एवं उसे उचित मानता हो। स्वयं सदाचार का पालन करता है या नहीं, किन्तु अन्य से सदैव सदाचार की अपेक्षा करता है। इसी से विदित होता है कि दुराचार की अपेक्षा सदाचार की महत्ता सबको स्वीकृत है।

जो आध्यात्मिक साधना के मार्ग पर लगे हैं वे राग, लोभ आदि दोषों को विकार समझ कर इनका निराकरण करने के लिए सन्नद्ध रहते हैं। वे आत्महित में नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हैं तथा स्वतः ही नैतिक होते हैं। उन्हें नैतिकता ओढ़नी नहीं पड़ती। दूसरे, वे लोग हैं जो सामाजिक नियमों एवं सरकारी नियमों का पालन आवश्यक मानकर करते हैं। वे नैतिक होना अपना कर्त्तव्य मानते हैं। तीसरे, वे लोग हैं जो नैतिक नियमों का पालन समाज और दण्ड के भय से करते हैं। वे चोरी छिपकर शिथिलाचार या भ्रष्टाचार को अपनाते हैं, किन्तु उन्हें सदैव भय बना रहता है कि कहीं पकड़ा न जाऊँ, कोई देख न ले, कोई शिकायत न कर

दे। दण्ड और बदनामी का भय उन्हें कुछ अंशों में नैतिकता का पालन करने के लिए मजबूर करता है। चौथे प्रकार के वे लोग हैं जो लोभ-लालच, वासना-कामना, अथवा परिग्रह-भावना से इतने अधिक ग्रस्त हो जाते हैं कि वे भ्रष्ट आचरण की पुनरावृत्ति करते रहते हैं अथवा एक के बाद दूसरा बड़ा भ्रष्टाचार करते जाते हैं। उन्हें न समाज का भय होता है और न लज्जा। ऐसी स्थिति में बचना मुश्किल होता है। गलत रीति से एकाध बार लाभ होने के बाद जब लोभ के वशीभूत व्यक्ति बड़े-बड़े अपराध करने पर उतारू हो जाता है तो फिर दण्ड और बदनामी से वह नहीं बच सकता। उसका सारा स्वाभिमान मिट्टी में मिल जाता है। अपने कृत कर्मों का फल उसे कई प्रकार से प्राप्त होता है।

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, निरभिमानता, क्षमाशीलता, सरलता, संतोष आदि गुणों का पालन सदाचार की श्रेणी में आता है तथा इन गुणों में रही न्यूनता व्यक्ति के दोषों की सूचक होती है। किन्तु भ्रष्टाचार शब्द का प्रयोग आधुनिक युग में अंग्रेजी भाषा के Corruption का पर्यायवाची बन गया है। इसलिए हिंसा को कोई भ्रष्टाचार नहीं कहता, सामान्य झूठ को भी कोई भ्रष्टाचार नहीं कहता। आवश्यकता से अधिक संग्रह करने वाले को भी कोई भ्रष्ट नहीं कहता, किन्तु रिश्वतखोर, घोटालाबाज, धोखा देकर धन हड़पने वाला तथा चारित्रिक दृष्टि से व्यभिचारी व्यक्ति भ्रष्टाचारी कहलाता है। सरकारी नियमों को ताक में रखकर निजी स्वार्थ के लिए उनमें तोड़-मरोड़ करने वाला व्यक्ति भी भ्रष्टाचारी होता है। 'करप्शन' शब्द चारित्र पर दाग का सूचक है जो छवि को धूमिल कर देता है। कोई अपनी अंकतालिका में फेरफार करे, बहीखातों में हेराफेरी करे, छलछद्म पूर्वक दूसरों को ठगे तो यह सारा व्यवहार भी भ्रष्ट व्यवहार ही है। भारतीय नीतिशास्त्र के अनुसार तो हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार आदि सब भ्रष्ट आचरण ही है। आध्यात्मिक स्तर पर ये सारे दोष व्यक्ति की भ्रष्टता के सूचक हैं, किन्तु सामाजिक स्तर पर हम उन्हीं दोषों को भ्रष्टाचार के अन्तर्गत लेते हैं, जो सदाचरण के प्रतिष्ठित मानक से हीन होते हैं।

साधना की दृष्टि से सदाचार के दो रूप हैं- एक देशचारित्र एवं दूसरा सर्वविरति चारित्र। साधु-साध्वी सर्वविरति चारित्र में होने से भ्रष्टाचार रहित हैं, किन्तु कदाचित् उनमें भी भ्रष्टता पायी जाती है। महाव्रतों अथवा समिति-गुप्ति का पालन दोषयुक्त होना ही उनकी भ्रष्टता है। देश चारित्र गृहस्थ श्रावक में होता

है। वह भी अणुव्रती होने के कारण भ्रष्ट नहीं होता, किन्तु वह अतिचार युक्त हो जाए तो भ्रष्ट कहलाता है। चारित्र की अपेक्षा चरित्र शब्द जनसामान्य के आचरण को द्योतित करता है। वह समाज में प्रतिष्ठित आचरण के मानक से भ्रष्ट होता है तो भ्रष्टाचार युक्त कहलाता है। वैसे तो सभी आवश्यक सद्गुणों से मनुष्य के चरित्र का निर्माण होता है, किन्तु जन सामान्य के चरित्र को प्रमाणित करते समय यही देखा जाता है कि किसी चोरी, लूटपाट, व्यभिचार आदि दोषों के कारण उसके विरुद्ध कोई केस तो नहीं है।

जो भी हो, भ्रष्टाचार शब्द सीधा-सीधा सामाजिक परिप्रेक्ष्य रखता है, जिसका सम्बन्ध राष्ट्र एवं विश्व से भी हो सकता है।दोष तो व्यक्तिगत होता है, किन्तु उसका प्रभाव समाज पर पड़ता है। उससे समाज को हानि होती है। वह हानि चारित्रिक भी हो सकती है एवं आर्थिक भी। जो आचरण समाज को गलत दिशा की ओर ले जाता है अथवा जो समाज को पीड़ित करता है वह समस्त आचरण भ्रष्टाचार के दायरें में आता है। बुद्धिमान मनुष्य अपनी बुद्धि का उपयोग इस तरह करता रहता है कि वह बाहर में भ्रष्टाचारी न कहलाए, किन्तु गोपनीय रीति से भ्रष्ट आचरण को सीने से लगाए रखता है। हजारों-लाखों भ्रष्टाचारियों में से कोई एक पकड़ में आता है और वह भी किसी की शिकायत पर अथवा सरकारी स्तर पर अभियान चलाए जाने पर। अन्यथा आम जनता मूक बनकर भ्रष्टाचार को देखती रहती है। चाहते हुए भी उसका विरोध नहीं कर पाती, क्योंकि भ्रष्टाचरण से उसका भी कहीं न कहीं सम्बन्ध रहता है। यदि भ्रष्टाचारी व्यक्ति सदैव लाभ में रहे तो आम जनता भी उसका अनुकरण करने के लिए तत्पर हो जाती है। इसीलिए भ्रष्टाचारी को दण्ड देना आवश्यक माना गया है।

भ्रष्टाचार का निवारण सामूहिक प्रयत्नों एवं सरकारी समर्थन से कुछ अंशों में शक्य है। जब व्यक्ति दृढ़ संकल्प के साथ तथाकथित भ्रष्टाचार के निवारण के लिए कटिबद्ध हो जाए एवं उसे समाज के द्वारा नैतिक समर्थन मिलता रहे तथा भ्रष्ट आचरण करने पर दण्ड की आशंका एवं भय बना रहे तो व्यक्ति उत्तरोत्तर नैतिकता पूर्ण आचरण को अपना सकता है। इससे भी बढ़कर आवश्यक है व्यक्ति का दृष्टि-परिवर्तन। लोभ, लालच, कामना, वासना एवं परिग्रह भावना को जब व्यक्ति बुरा समझ कर संतोष, पवित्रता, निरभिमानता आदि सद्गुणों को अपनाने हेतु तत्पर होगा तो भ्रष्टाचार को पलायन होते देर नहीं लगेगी।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

आसक्ति ही शल्य है

आसं च छंदं च विगिंच धीरे।
तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु।
जेण सिया तेण णो सिया।
इणमेव णावबुज्झंति जे जणा मोहपाउडा।

अर्थः- हे धीर पुरुष! तू आशा और स्वछन्दता (स्वेच्छाचारिता)-मनमानी करने का त्याग कर दे। उस भोगेच्छा रूप शल्य का सृजन तूने स्वयं ही किया है। जिस भोग-सामग्री से तुझे सुख होता है उससे सुख नहीं भी होता है। (भोग के बाद दुःख है)। जो मनुष्य मोह की सघनता से आवृत हैं, ढंके हैं, वे इस तथ्य को (उक्त आशय को- कि पौद्गलिक साधनों से कभी सुख मिलता है, कभी नहीं, वे क्षण-भंगुर हैं, तथा वे ही शल्य-कांटा रूप हैं) नहीं जानते।

महामोह

उदाहु वीरे- अप्पमादो महामोहे, अलं कुसलस्स पमादेणं, संतिमरणं सपेहाए, भेउरधम्मं सपेहाए। णालं पास। अलं ते एतेहिं। एतं पास मुणि! महब्भयं। णातिवातेज्ज कंचणं।

अर्थः- भगवान् महावीर ने कहा है-महामोह (विषय) में अप्रमत्त रहे। अर्थात् विषयों के प्रति अनासक्त रहे। बुद्धिमान पुरुष को प्रमाद से बचना चाहिए। शान्ति (मोक्ष) और मरण (संसार) को देखने/समझने वाला (प्रमाद न करे) यह शरीर भंगुरधर्मा-नाशवान है, यह देखने वाला (प्रमाद न करे)। ये भोग (तेरी अतृप्ति की प्यास बुझाने में) समर्थ नहीं हैं। यह देख! तुझे इन भोगों से क्या प्रयोजन है? हे मुनि! ये देख, यह भोग महान् भयरूप हैं। भोगों के लिए किसी प्राणी की हिंसा मत कर।

भिक्षाचारी में समभाव

एस वीरे पसंसिते जे ण णिव्विज्जति आदाणाए।
ण मे देति ण कुप्पेज्जा, थोवं लद्धुं णं खिंसए।
पडिसेहितो परिणमेज्जा।
एतं मोणं समणुवासेज्जासि त्ति बेमि।

अर्थः- वह वीर प्रशंसनीय होता है, जो संयम से उद्विग्न नहीं होता अर्थात् जो संयम में सतत लीन रहता है। 'यह मुझे भिक्षा नहीं देता।' ऐसा सोचकर कुपित नहीं होना चाहिए। थोड़ी भिक्षा मिलने पर दाता की निंदा नहीं करनी चाहिए। गृहस्वामी दाता द्वारा प्रतिबंध करने पर- निषेध करने पर शान्त भाव से वापस लौट जाये। मुनि इस मौन (मुनिधर्म)का भलीभांति पालन करे।

-आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, द्वितीय अध्ययन, चतुर्थ उद्देशक, सूत्र-83, 85-86

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

स्वाध्याय

- 'चर-गतिभक्षणयोः' धातु से आ उपसर्ग एवं घञ् प्रत्यय लगने पर 'आचार' शब्द बनता है। 'आ' का अर्थ मर्यादा है तथा 'चर' से तात्पर्य चलना है। "आचर्यते इति आचारः" यानी मर्यादापूर्वक चलना ही आचार है। दूसरे शब्दों में व्यवहार और विचार की दृष्टि से मन, वचन और काया द्वारा मर्यादापूर्वक चलने को आचार कहते हैं।
- जैसे भौतिक मार्ग पर चलने के लिए दो पैर बराबर चाहिए, उसी तरह मोक्षमार्ग में, साधना-मार्ग में गति करने के लिए भी दो पैर चाहिए। वे दो पैर हैं- ज्ञान और क्रिया। पहला नम्बर ज्ञान का है और दूसरा नम्बर क्रिया का है।
- स्वाध्याय आपको अंधेरे में से लाकर प्रकाश में खड़ा कर देगा, लेकिन प्रकाश में मार्ग तय किया जाएगा स्वयं आपके द्वारा। आगे बढ़ने का वह काम केवल स्वाध्याय से नहीं होगा। उस काम के लिए चारित्र का पालन करना होगा। इसीलिए श्रुतधर्म के पश्चात् चारित्रधर्म बताया गया है।
- भूलना नहीं चाहिये कि जीवन एक अभिन्न-अविच्छेद्य इकाई है, जिसे धार्मिक और लौकिक अथवा पारमार्थिक और व्यावहारिक खण्डों में सर्वथा विभक्त नहीं किया जा सकता। ज्ञानी का व्यवहार परमार्थ के प्रतिकूल नहीं होता और परमार्थ भी व्यवहार का उच्छेदक नहीं होता। अतएव साधक को, चाहे वह गृहत्यागी हो या गृहस्थ हो, अपने जीवन को अखण्ड तत्त्व मानकर ही जीवन के पहलुओं के उत्कर्ष में तत्पर रहना चाहिये। जैन आचार-विधान का यही निचोड़ है।
- आचारविहीन ज्ञान भारभूत है। उससे कोई लाभ नहीं होता। सर्प को सामने आता जानकर भी जो उससे बचने का प्रयत्न नहीं करता है, उसका जानना किस काम का? ज्ञानी पुरुषों का कथन तो यह है कि जिस ज्ञान के फलस्वरूप आचरण न बन सके, वह ज्ञान वास्तव में ज्ञान नहीं है। सच्चा ज्ञान वही है जो आचरण को उत्पन्न कर सके। निष्फल ज्ञान वस्तुतः अज्ञान की कोटि में ही गिनने योग्य है।
- जब तक जीवन में चारित्र नहीं है, जब तक जीवन में संयम नहीं है, तब तक यह कहना चाहिए कि हमारा वह ज्ञान, हमारी समझ और हमारे भीतर की विशेष प्रकार की जो कला है, वह कला हमारे लिए भारभूत है, बोझ रूप है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

उद्‌बोधन

दृष्टि परिवर्तन

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

(19 मई 2011 को समता भवन में फरमाये गये प्रवचन के आधार पर)

संसार में अनन्त मिथ्यात्वी पहले भी थे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे। परिवर्तन अपने आपका करना है। अपनी दृष्टि में परिवर्तन हो गया तो दूसरे को बदलने की आवश्यकता नहीं। यदि दूसरे बदल गए एवं अपनी दृष्टि नहीं बदली तो भी कुछ होने वाला नहीं है।

मूला सेठानी ने चन्दनबाला का जितना बुरा करना चाहा उतना बुरा कर दिया। सिर का मुण्डन कर दिया, पाँव में बेडियाँ डाल दी, हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी, खाने के लिए उड़द के बाकुले के अलावा कुछ नहीं छोड़ा। चन्दनबाला को दुःख देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। किन्तु चन्दनबाला ने मूला सेठानी का बुरा नहीं माना। उसकी दृष्टि बदली हुई है। वह उसका अपकार नहीं, उपकार मानती है– अगर माँ ने मुझ पर कृपा नहीं की होती तो भगवान महावीर यहाँ नहीं पधारते। माँ मुझे मुण्डित नहीं करती, हाथ में हथकड़ी और पांव में बेड़ी नहीं डालती तो प्रभु यहाँ नहीं पधारते। वह माता मूला के कृत अपकारों को भी उपकार के रूप में स्वीकार करती है। यह सोच दृष्टि परिवर्तन के बिना संभव नहीं।

मिथ्यादृष्टि व्यक्ति को दूसरों में दोष ही दोष दिखाई देते हैं तथा सम्यक्त्वी को दूसरे के द्वारा किए गए दोषपूर्ण कार्य भी स्वयं की साधना के लिए हितकारी प्रतीत होते हैं। दृष्टि दृष्टि का भेद है। एक में कर्म बंधते हैं तो दूसरी में कर्म कटते हैं। एक में भावों की मलिनता बढ़ती है तो दूसरी में भावों की विशुद्धता। एक को संसार में समायोजन करना नहीं आता है तथा सदैव दुःखी रहता है तो दूसरा किसी भी परिस्थिति में अपने मन को निर्मल बनाकर रहना सीख लेता है। एक दूसरे को दुःख देकर सुख का अनुभव करता है तो दूसरा उसे अपने लिए उपकारी मानता है। गज सुकुमाल ने सोमिल द्वारा जलते अंगारे सिर पर रखे जाने पर भी उससे द्वेष नहीं किया। दृष्टि बदलने पर ही ऐसी समता सम्भव है। दृष्टि बदलने पर संसार में सब अपने हैं तथा मिथ्यादृष्टि के लिए जो उसका स्वार्थ पूरा करते हैं, बस वे ही उसके अपने हैं।

प्रवचन

निष्कामता के लिए है नवपद आराधना

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

महान् अध्यवसासी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा दिनाँक 12 अप्रेल, 2011 को पिचियाक (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

बन्धुओं!

प्रत्येक प्राणी के लिए हितकारी, मंगलकारी और श्रद्धा प्रदान करने वाले नव-पद आराधना के दिवस चल रहे हैं। एक तरफ सकाम भक्ति वालों के नवरात्रि पर्व चल रहे हैं तो दूसरी ओर निष्काम भक्ति वालों के लिए नवपद की आराधना करके भव-भ्रमण को समाप्त करने के पर्व चल रहे हैं।

नवपद आराधना का आज तीसरा दिवस है। नवपद आराधना का तीसरा दिवस आचार्यों के गुणगान का संकेत दे रहा है- नमो आयरियाणं। 'नमो आयरियाणं' अर्थात् आचार्य भगवन्तों को नमस्कार। वर्तमान में हमें धर्म का मर्म समझाने वाला, जीवन का स्वरूप बतलाने वाला, हेय-ज्ञेय का ज्ञान कराने वाला कोई आराध्य है तो वह तीसरा पद है आचार्य का। अरिहन्त-सिद्ध का स्वरूप बतलाने वाले आचार्य हैं। नवपद में अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु की तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना की जाती है। आपको खाना, पीना, सोना, घर-परिवार, आराम सब याद आता है, किन्तु भगवान का नाम भी याद आता है या नहीं? यह मानव-जीवन किसलिए मिला है? मानव-जीवन के लिए अनुभवी संत कह रहे हैं कि कहीं यह बासी खाने जैसा तो नहीं चल रहा है?

एक भिखारी भीख मांगने निकला- 'दो रे कोई टुका, तीन दिन का भूखा।' सेठ ने सुना, सेठ के वहाँ नई बहू आई हुई थी, उसने भी सुना। बहू ने जबाब दिया- "हम तो बासी खाते हैं, आगे उपवास करेंगे।" बहू की बात ससुर ने सुनी तो उसे अटपटी लगनी ही थी। बोले- इस घर में बासी खाने का क्या काम? ससुर ने कहा- "बहू! विचार करके बोलो।" इधर सेठ ने सोचा कि बहू

प्रकृति से ठीक नहीं है, इसे घर में नहीं रखना चाहिये। सेठ ने सोचा–बहू को पीहर भेज देना चाहिये।

सेठ ने बहू से कहा– "तुम्हारे पिताजी की तबीयत अच्छी नहीं है इसलिये तुम पीहर चली जाओ।" बहू को पता नहीं था कि सेठजी के मन में क्या चल रहा है? सेठजी ने बहू से चर्चा भी नहीं की, अन्यथा उनकी भ्रान्ति दूर हो जाती। कभी-कभी भ्रांति के कारण घोटाला हो जाता है। अनुभवी संतों ने ठीक ही कहा– "जो भ्रांति में जीता है वह शांति से नहीं रह सकता। शांति से रहना है तो भ्रांति को निकाल दो।"

बहू पीहर चली गई। पिता ने सोचा– आज बेटी बिना बुलाये आई है, क्या बात है? कभी बुलाया भी जाता है तो भी आना नहीं होता। बहू भी सोचने लगी–ससुर जी ने भेजा तुम्हारे पिताजी ठीक नहीं, पर यहाँ आकर देखा– पिताजी की तबीयत ठीक है। आ गई हूँ तो कुछ दिन रहूँ, पर देखते ही देखते पखवाड़ा और फिर महीना बीत गया। न कोई लेने आया, न किसी ने सार-संभाल ही ली।

ससुरजी को तो बहू जमी नहीं, इसलिये उन्होंने तो झटपट लड़के के दूसरे विवाह की तैयारी कर ली। बहू को समाचार लगे कि सेठजी अपने लड़के की दूसरी शादी कर रहे हैं। पिता को भी जानकारी मिल गई। सोचा– "बेटी की जिन्दगी बर्बाद हो जायेगी। मैं अपनी बेटी की जिन्दगी बर्बाद होते नहीं देखना चाहता। मुझे बेटी के ससुराल जाकर निर्णय करना चाहिये।"

पिता बेटी के ससुराल गया। जब भी वहाँ जाता तो आदर-सत्कार होता था, किन्तु इस बार कोई पूछने वाला तक नहीं था। आदर कहाँ होता है? जहाँ मन मिलता है वहाँ आदर है, सत्कार और सम्मान है। मन नहीं मिले वहाँ बोलने वाला भी नहीं मिलता। आदर-सम्मान भी स्वार्थ पूरा होने तक मिलता है।

बेटी के पिता ने पूछा– "आपने बच्ची को पीहर क्यों भेज दिया?" ससुर जी बोले– "आपकी बेटी हमारे घर में रहने लायक नहीं है। आप हमसे क्यों पूछ रहे हैं, अपनी बेटी से ही पूछ लिया होता? आप अब भी पूछ लें, उसने क्या कहा था?"

बात बढ़ गई, इसलिये पूछताछ की गई। बेटी ने कहा– "मैंने जो कहा, किसे कहा, क्यों कहा, इसका अभिप्राय जानने के लिए आप पहले उस भिखारी

को बुलाओ।'' भिखारी को बुलाया गया। भिखारी ने कहा- हाँ, मैंने आवाज लगाई- ''दो रे कोई टुका, तीन दिन का भूखा।'' भिखारी ने कहा- ''मैंने पहले कुछ दिया, नहीं इसलिये यहाँ नहीं मिला।''

ससुर जी ने पूछा- ''क्या तुमने नहीं कहा था कि हम बासी खा रहे हैं?'' बहू ने कहा- ''हाँ, मैंने ऐसा कहा था।'' बहू सुज्ञ थी बोली-''कल की बनी रोटी बासी कहलाती है। आज की ताजी बनी रोटी बासी नहीं होती। इसी तरह पूर्व पुण्यवानी से हमें बहुत कुछ मिला है इसलिए खा रहे हैं, पी रहे हैं, मौज कर रहे हैं, लेकिन यह सब बासी खाने के समान है। हमें मानव जीवन को सार्थक बनाना है तो दान-शील-तप का आराधन करना होगा।''

ज्ञानी कह रहे हैं कि हमें नमस्कार मंत्र पर दृढ़ श्रद्धा हो जांय तो बेड़ा पार होते देर नहीं लगती। नमस्कार मंत्र पर दृढ़ श्रद्धा हो तो अग्नि शीतल हो सकती है, शूली का सिंहासन हो सकता है, सर्प फूलमाला बन सकता है। नमस्कार महामंत्र पर श्रद्धा के कारण चम्पा नगरी के बंद द्वार खुल जाते हैं। श्रद्धा, भक्ति एवं विश्वास से फल मिलता है। भावना है तो लाभ है।

आप अमर कुमार की कथा सुनते हैं। माता-पिता ने उसे राजा को बेच दिया। राजा को किसी ने कह दिया कि बत्तीस लक्षणों वाले बालक की बलि देने पर महल खड़ा होगा। राजा ने महल बनवाना शुरू किया। दिन में जितना महल खड़ा किया जाता, रात को गिर जाता। ऐसा एक-दो दिन नहीं, कई दिनों तक चलता रहा। राजा ने महल खड़ा करने के लिए पण्डितों से परामर्श किया। ज्ञानी कह रहे हैं- दूसरों के लिए खड्डा खोदोगे तो तुम्हारे लिए कुआ तैयार है। आज आदमी अपना भला चाहता है, दूसरों का भला हो या नहीं, इससे उसे कोई मतलब नहीं। पण्डितों ने बत्तीस लक्षणों वाले पुरुष की बलि की बात कह दी। राजा ने घोषणा करवा दी कि जो कोई अपना पुत्र देगा उसे पुत्र के बराबर वजन जितना सोना दिया जायेगा।

अमर के माता-पिता ने लोभ में आकर अपना बच्चा बेच दिया। देखिये स्वार्थ क्या-क्या करवाता है? स्वार्थ पूरा होता है तब तक बेटा, बेटा है, पत्नी, पत्नी है। पत्नी प्राण प्यारी कब तक? जब तक आवश्यकता-पूर्ति है तब तक।

अमरकुमार ने बहुत आ-जी-जी की। जब आदमी के पास अन्य कोई सहारा दिखाई नहीं देता तब भगवान याद आते हैं। हम संत भी आपको दुःख में

याद आते हैं।

अमरकुमार को कोई बचाने वाला नहीं था। दुनियाँ में कोई किसी का नहीं है। राजा प्रजा का रक्षक होता है, पर वही आज बलि लेने को तैयार था। बालक ध्यान में बैठ गया। नमस्कार महामंत्र के जाप में वह ऐकमेक हो गया। देखिये, मंत्र की क्या शक्ति होती है। उसकी बलि नहीं ली जा सकी। आगम में एक नहीं, अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। श्रद्धा के साथ समर्पण हो तो क्या-कुछ नहीं होता? बादल कितने ही घने क्यों न हों, घटाटोप बादल छाये होने पर एक दक्षिणी हवा चलते ही बादलों को बिखरते देर नहीं लगती। हिरन चाहे जितने क्यों न हों, सिंह गर्जना से सब तीतर-भीतर हो जाते हैं। ज्ञानी कह रहे हैं धर्म का आचरण और उस पर विश्वास हो जाय तो जीवन में चाहे कितनी विपतियाँ आएँ, विघ्न-बाधाएँ सामने हों सब-पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

आप भी नवकार मंत्र जपते हैं, माला फेरते हैं, लेकिन जब तक श्रद्धा नहीं जगती तब तक आत्म-कल्याण संभव नहीं है। नवपद आराधना के ये दिवस प्रेरणा दे रहे हैं कि हम भावपूर्वक-श्रद्धा सहित आराधना-उपासना करें। आचार्य भगवन्त सामने विराज रहे हैं। आज चैत्र शुक्ला नवमी है, हम रामनवमी के रूप में भी इस दिन को मनाते हैं। आप राम का जन्म अयोध्या में हुआ यह तो बता देंगे, पर कितने वर्ष पूर्व राम का जन्म हुआ, शायद बता नहीं सकेंगे। लम्बे अन्तराल पश्चात् भी राम को आज भी याद किया जा रहा है। आज राम का नाम लेने वाले अनेक हैं, किन्तु राम ने जो किया वैसा करने वाले कितने हैं? अनुभवियों ने कहा- हृदय से काम निकाल दो, राम रह जायेगा। काम का मतलब है कामना-वासना। जब हृदय में वासना नहीं होगी तो वह राम की तरह पवित्र बन सकता है।

रावण ने सीता का हरण किया। उसे छल-कपट से ले गया। रावण उसे राजरानी बनाना चाहता था, महारानी बनाना चाहता था, पट्टरानी बनाना चाहता था। वह बार-बार कहता, आग्रह-अनुरोध करता कि तुम मेरी बात मान जाओ, लेकिन सती सीता पतिव्रता थी, बार-बार कहने पर भी उसने सामने तक नहीं देखा। एक-दो नहीं, छः महीने हो गये रावण हैरान हो गया। रावण ने कुम्भकर्ण से कहा कि सीता तो सामने देखने तक को तैयार नहीं। कुम्भकर्ण ने कहा- "मैं उपाय बताता हूँ।" रावण ने उत्सुकता से पूछा- "क्या उपाय है?"

कुम्भकर्ण ने कहा- ''सीता सामने नहीं देखती, इसलिए तूं राम का रूप बनाकर सीता के सामने उपस्थित हो, वह दौड़ी-दौड़ी आयेगी।'' रावण ने कहा- ''मैं राम का रूप बनाकर जाता हूँ तो मुझे वह सीता माता नजर आती है।''

जब तक मन में काम है, विषय है, वासना है, भोगवृत्ति है तब तक राम नहीं बन सकते। भगवान का कहना तो यह है कि हर आदमी राम बन सकता है। हर आदमी आचार्य श्री हस्ती बन सकता है, हर आदमी आचार्य श्री हीरा बन सकता है। आत्मा में परमात्मा बनने की सामर्थ्य रही हुई है। राम बनना है तो उस रास्ते पर चलना भी पड़ेगा। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने मर्यादा का पालन किया, आप भी मर्यादा का उसी तरह पालन करेंगे तो राम बनना हो सकेगा।

राम की कथा आपको ज्ञात है। कैकेयी ने वर मांगा। ऋषि वशिष्ठ ने मुहूर्त निकाला। राम कहने लगे- रघुवंश में और-और मर्यादाएँ तो अच्छी हैं लेकिन राज्य बड़े को मिलता है, छोटे बैठे रहते हैं, यह ठीक नहीं।

राम को वनवास मिला। वे वनवास के लिए रवाना हुए। मैं पूछता हूँ लक्ष्मण और सीता साथ में क्यों गये? राम को वनवास हुआ उस समय सारी अयोध्या नगरी में हा-हाकार मच गया। लक्ष्मण कहता है- माँ! मैं भी एक वरदान मांगना चाहता हूँ। वरदान क्या? लक्ष्मण माँ से कहता है- ''माँ! तू मुझे आज्ञा दे तो मैं राम के साथ जाना चाहता हूँ।'' माता सुमित्रा कहने लगी- ''आंज मेरी कोख धन्य हो गई।'' माँ ने कहा- ''तू साथ जा और राम की प्रत्येक बाधा का सामना करना।'' भाई लक्ष्मण राम के साथ वनवास जा रहा है, सीता के लिए कहा जा रहा है कि तुमको साथ जाने की जरूरत नहीं। भरत आया, वह कहने लगा- मेरे को राजगद्दी नहीं चाहिये। राम-भरत राजगद्दी को गेंद बनाकर खेल रहे हैं वह कैसा दृश्य रहा होगा?

आज क्या स्थिति है? एक बाप की सम्पत्ति पाने के लिए बेटे क्या करते हैं, मुझे कहने की जरूरत नहीं। आज तो कई ऐसे भी मिलेंगे जो पाँच में से तीन पहले से अपने पास रखकर शेष रहे दो में बराबर की पांती करने की बात कर जाते हैं।

आज राम का जन्म-दिवस है। राम मोक्ष-गमन करने वाले हैं। माता के प्रति भक्ति, पिता के प्रति श्रद्धा, भाई के प्रति प्रेम कहाँ है? राम का नाम लेने वाले अनेकानेक हैं, किन्तु राम का आदर्श जीवन में उतारने वाले कितने हैं, यह

चिन्तन का विषय है।

रावण को एक गलती का दुष्परिणाम भोगना पड़ा। आज मानव कितनी गलतियाँ करता जा रहा है? आज अन्याय-अत्याचार-दुराचार-व्यभिचार कितने बढ़ रहे हैं? आपको राम बनना है तो काम को जीतें, राम की तरह व्यवहार करें। जीवन में परिवर्तन आना चाहिये, अन्यथा व्याख्यान रिवाज की तरह केवल सुनने तक रह जायेगा। प्रवचन ज्ञानवृद्धि का कारण है साथ-ही-साथ प्रवचन नवीन संकल्प स्वीकार करने की प्रेरणा भी देता है। आप नव पद आराधना के इन मंगलमय दिवसों पर एक गुण भी ग्रहण करने का भाव रखेंगे तो एक गुण भी आपके जीवन को सार्थक करने वाला बन सकता है। श्रद्धा है तो राख की चिमटी काम कर जाती है और श्रद्धा नहीं तो चाहे जितने उपाय कर लो, एक भी उपाय कारगर नहीं होता। आप श्रद्धा जागृत करें तथा श्रद्धापूर्वक साधना-आराधना में कदम बढ़ायें तो सफलता निश्चित है। ■

हे मना!

श्री नीलेश कुमार जैन

कौनसा है पथ विजय का, कौनसा है पथ प्रलय का
क्यों फँसा है फिर इसी उलझन में हे मना!
करने को अहं तुष्टि, करने को फिर स्वार्थ-सृष्टि
चाहे जैसा पथ तूने चुना, चाहे जैसा ताना बुना
छोड़ दे अब स्वार्थ भाव को, चुन उस निर्विकार भाव को
खोल के अन्तः नेत्र देख! पथ है खुला, वो स्वच्छन्द पवन है रही तुझे बुला
अब मुक्ति के ये पंख पसार, कर दे इस बन्धन से विहार
भर अब के वो लम्बी उड़ान, मिट जाए जन्मों की थकान
कर अक्ष का अमिट विकास, हो तुझे भी निरन्तर आभास
अरि को तजकर अरिहंत का वरण कर, परम ज्ञान को पा ले मना!
कौनसा है पथ विजय का, कौनसा है पथ प्रलय का
क्यों फँसा है फिर इसी उलझन में हे मना!

-116/170, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

प्रवचन

जानें मृत्यु और मुक्ति का भेद

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा सोमवार दिनाँक 9 मई, 2011 को अमरनगर, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

अशुद्ध अस्मिता को मिटाकर शुद्ध अस्तित्व को प्रकट करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और वीतराग भगवन्तों द्वारा उपदिष्ट इस वीतराग वाणी का अवलम्बन लेकर अस्तित्व पर भरोसा करके आस्तिकभाव जगाने की प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दना करने के पश्चात्.......!

जड़ से उत्पन्न 'मैं' असली मैं की उपलब्धता में बाधक बनता है और उस नकली मैं को बार-बार मरना पड़ता है। अभी मुनिराज से आप मरने की बात सुन रहे थे। मरना उसे ही पड़ता है जो नकली 'मैं' में जीता है, नकली मैं की प्रशंसा में जीता है, दूसरों की निन्दा करके अपने को ऊँचा समझता है। पुद्गलानन्दी पुद्गल-धन्धी, पुद्गल-परिग्रही, बहुआरम्भी बारंबार जन्मता है, बारंबार मरता है। योगिराज आनन्दघन जी ने मरने का मूल कारण मिथ्यात्व को बताते हुए कहा-

अब हम अमर भये, ना मरेंगे
या कारण मिथ्यात्व दियो
तज क्यूँ कर देह धरेंगे ॥
अब हम अमर भये ना मरेंगे।

जिज्ञासु भक्त ने पृच्छा की- मृत्यु क्या है? मुक्ति क्या है? सार में फरमाइये लाक्षणिक व्याख्या कीजिए। मृत्यु क्या है, मुक्ति क्या है? एक अनुभवी ने कहा- इच्छा रहते प्राण समाप्त हो जाय वह है मृत्यु और प्राण रहते इच्छा समाप्त हो जाय उसका नाम है-मुक्ति।

इस विषय को रूपक से समझ सकते हैं। कोई व्यक्ति सामान की लिस्ट लेकर बाजार गया। सामान खरीदते-खरीदते जेब में रहे पैसे समाप्त हो गये। सामान लिस्ट के अनुसार पूरा नहीं खरीदा जा सका। सामान खरीदना है तो उसे घर जाकर पैसे लाने पड़ेंगे। कदाचित् उधार भी लिया तो पैसे चुकाने पडेंगे। लिस्ट के अनुसार पूरा सामान खरीद लिया गया, पैसे बच गये तो उसे बाजार में पुनः आने की जरूरत

नहीं। बस, यही बात है। आयुष्य बल प्राण है तब तक जीव इस शरीर में जीता रहेगा। आयुष्य बल प्राण पॉवर हाउस है। प्राण दस हैं। श्रोत्रेन्द्रिय बल प्राण, चक्षुरिन्द्रिय बल प्राण, घ्राणेन्द्रिय बल प्राण आदि नौ प्राण पॉवर हाउस नहीं हैं, ये सब अलग-अलग क्षेत्रों की लाइनें हैं। आयुष्य बल प्राण चला जाय तो एक से लेकर नौ तक सभी बल प्राण बन्द हो जायेंगे। शेष कोई गया तो थोड़ा नुकसान हो सकता है, मरण नहीं होगा। पावर हाउस से बिजली गुल हो जाती है तो सभी गली-मौहल्ले की बिजली नहीं रहती। उस आयु बल प्राण के पूर्ण होने के पूर्व जिसकी इच्छा समाप्त हो गई जो 'नौ' सन्ना बाहुल, बन गया उसके आयुबंध होगा नहीं, तो उसकी हो गई मुक्ति।

आयुष्य कर्म का बंध तीसरे गुणस्थान को छोड़कर छट्ठे गुणस्थान तक शुरु होता है। छट्ठे गुणस्थान में प्रारम्भ करने वाला सातवें गुणस्थान में आयुष्य बंध को पूरा कर सकता है। सातवें में आयुष्य का बंध प्रारम्भ नहीं होता। अभी मुनिराज कह रहे थे-"समयं गोयम! मा पमायए" अर्थात् क्षण मात्र का प्रमाद मतकर।

प्रमाद किसको कहते हैं? एक अपेक्षा से मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा ये पाँच भेद कर दिये जाते हैं। आत्मविस्मृति प्रमाद है। जानते हैं पर मानते नहीं, कर सकते हैं पर करते नहीं, इसका नाम भी प्रमाद है। अपेक्षा से समझें। जान रहे हैं कि शरीर यहीं छूट जाता है, साथ जाता नहीं, विनाशी है, पर फिर भी मान रहे हैं क्या? सारी भागदौड़ किसके पीछे? यहाँ छोड़कर जाना है फिर भी जोड़ रहे हैं-जानते हैं, पर मानते नहीं। पहला गुणस्थान मिथ्यात्व अर्थात् विपरीत श्रद्धान, जो धर्म साधना कर सकते हैं वो करते नहीं। चौथे, पाँचवें, छट्ठे गुणस्थान वाले जानते हैं वैसा ही मानते भी हैं, पर प्रवृत्ति वैसी नहीं हो पाती, इसलिये वहाँ तक आयु का बंध हो सकता है। संज्ञा है, आरंभिकी क्रिया है, असाता वेदनीय का बंध है। वहीं तक आयु बंध का प्रारम्भ है। इच्छा रहते आयु का बंध है। कुछ गहरा डूबना होगा कई बार बोला गया -

मैं पगली रोती रही, नदी किनारे बैठ।
जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ॥

आज जो थोड़ा बहुत कर रहें हैं- उतना अनन्त बार कर रखा है। आप इस भूल-भूलैया में मत रहना कि हम इतना धर्म कर रहे हैं ना। जब तक राग-द्वेष की ग्रन्थि नहीं खुलती तब तक यथार्थ में धर्म नहीं होता, सम्यक् दर्शन बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना चारित्र नहीं। देश-विरति सर्वविरति के लिए आवश्यक है जानना और

मानना एकरूपता वाला होना। द्वेष के परिणामस्वरूप ही पर निन्दा का प्रसंग आता है। सूक्ष्म रूप से भले ही बाद में छूटे, पर नीच गोत्र का बंध कराने वाली निंदा छूटे बिना पहला गुणस्थान छूट ही नहीं सकता। अभी जिस निन्दा की बात मुनिराज ने कही, अनुभवी आचार्यों ने बताया कि सम्यक्त्व की भूमिका में परनिन्दा बन ही नहीं सकती। सम्यक्त्वी परनिन्दा नहीं कर सकता। आचार्य विद्यासागर जी ने कहा- सम्यक्त्व की भूमिका में परनिन्दा का कोई स्थान नहीं। नीच गोत्र का बन्ध दूसरे गुणस्थान तक होता है। दूसरे गुणस्थान के ऊपर नीच गोत्र का बंध नहीं होता। तत्त्वार्थ सूत्र के छठे अध्ययन का 24वां-25 वां सूत्र देखिये। नीच गोत्र के बन्ध का कारण है दूसरे की निन्दा करना, अपनी प्रशंसा करना। भगवती शतक 8, उद्देशक 9 जाति मद, कुल मद को नीच गोत्र का कारण कह रहा है। दशवैकालिक सूत्र के दसवें अध्ययन की 18 वीं गाथा उठाकर देख लीजिये। दूसरे की निन्दा करना, अर्थात् मिथ्यात्व में जाना, जन्म मरण बढ़ाना है।

एक सेठ के यहाँ चोरी हो गई। सेठ के बंगले की बगल में दूसरे सेठ का बंगला था। दूसरे सेठ के वहाँ चौकीदार रखा हुआ था। पहले सेठ के बंगले में चोरी हो गई, माल चला गया। पास वाले बंगले के चौकीदार से पूछा गया कि तुमने किसी को चोरी करते देखा क्या? चौकीदार का उत्तर होगा- मुझे ध्यान नहीं। मैं मेरे मालिक के बंगले का ध्यान रखता हूँ मुझे इस बंगले के मालिक से तनख्वाह मिलती है, मैं उस बंगले में कौन आता है, कौन जाता है इसका ध्यान क्यों रखूं?

वह चौकीदार तो एक बंगले की चौकीदारी करता है। जहाँ से वेतन मिलता है वहाँ की चौकीदारी करता है पर यह जीव क्या कर रहा है? कहीं यह दुनियाँ भर की चौकीदारी तो नहीं कर रहा? यह जीव अपनी खुद की चौकीदारी की बात तो भूल रहा है, दुनियाँ भर की बातें देख रहा है। इसको इतना गुस्सा आता है, यह तो एक नम्बर का अहंकारी है, वो- पूछो ही मत बात-बात में झूठ बोलता है। हम क्या करते हैं? हम अपने दोष देखते हैं या दूसरों के? जैसे ही हम दूसरों के दोष देखते हैं हम दूसरों के दोषों से सम्बन्धित हो जाते हैं और कालान्तर में हम उन्हीं दोषों से युक्त बनकर दोषी बन जाते हैं। जो खुद के दोष देखता है, उससे व्यथा जगती है, दोष का सम्बन्ध टूटता है और कालान्तर में वह दोष छूटता चला जाता है। क्या ही सुन्दर कहा-

एवमहं आलोइयं निन्दियं गरहियं दुगंछियं सव्वं।
तिविहेण पडिक्कन्तो वंदामि जिण-चउव्वीसं॥

उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्याय में आलोचना, निन्दा, गर्हा का फल बतलाया गया है जो जीव को भावविभोर करने वाला एवं आत्मा का भान जगाने वाला है।

शास्त्रों में सार भरा पड़ा है। हम अर्थ पर ध्यान देने का प्रयास करें। आचार्य भगवन्त की कृपा से स्वाध्याय हो रहा है और यह मेरे लिए उपादेय है। आगम दर्पण है। इस दर्पण में मैं अपने चेहरे के दोष देखूँ। दर्पण क्या करता है? दर्पण को जिधर रख दो, सामने क्या है वह बता देगा। मैं अपने-आपको देखूँ, अपने दोष देखूँ। मेरे में अनादिकाल से दोष रहे हुए हैं, इसीलिए मेरा जीव संसार में परिभ्रमण कर रहा है। प्रमादवश अनादिकाल से दर्पण का मुख दूसरी ओर कर मैं दूसरों के दोष प्रतिबिंबित कर रहा हूँ। इसीलिये तो गफलत में बार-बार मर रहा हूँ। "अब हम अमरभये न मरेंगे। छट्ठे गुणस्थान तक प्रमाद के योग में आत्म-स्वरूप से विस्मृत होने पर जीव कषाय के उदय से प्रभावित होता है। मिथ्यात्व के सहवर्ती कषाय जब तक सफल होते हैं तब तक आयु का बंध होता है, तब तक जीव का संसार परिभ्रमण चलता रहता है। मिथ्यात्व का क्षय हो जाने पर कर्म भूमि आयुष्य का बंध सिर्फ एक बार हो सकता है- अतः आनन्दघन जी कह रहे हैं-मिथ्यात्व समाप्त हो जाने पर हम अमर हो जायेंगे। अनुभवी कह रहे हैं- आयु रहते इच्छा समाप्त हो जाए उसका नाम है मुक्ति। हम खुद को देखने की कोशिश करें। भीतर का असली आत्म-देव कौनसा है? पन्द्रहवें बोले- आत्मा आठ। आप बोल-थोकड़े सीखने का ध्यान तो रखें ही उनका अर्थ ध्यान में लें, फिर उसमें अपने जीवन को टटोले- अर्थ, भावार्थ और परमार्थ।

कषाय आत्मा जब तक हावी रहेगी, जानकारी और जीवन में अन्तर रहेगा, पुद्गल में रमण, आत्म-विस्मरण तभी तक होता रहता है मरण, संसार का संसरण, चतुर्गति का भ्रमण। व्यावहारिक जीवन में पर-दोष दर्शन से होता है आत्म-विस्मरण। इसीलिये मरण से छुटकारा पाने के अभिलाषी को पहले पर-दोष दर्शन से बचना होगा। साधक निज विवेक के प्रकाश में अपने दोषों को देखता है, उनसे व्यथित होता है, छुटकारा पाने को व्याकुल होता है। एक क्षण भी दोषी नहीं रहना चाहता तब निर्दोष परमात्मा की स्तुति कर तीनों सावद्य योगों से प्रतिक्रान्त होता है। बुरे-दुष्ट विचार दुर्वचन और दुर्व्यवहार को तिलाञ्जलि देता है। जानता है, मानता है और आचरण भी करता है। प्राण रहते इच्छा समाप्त। बड़ी संलेखना में बोलते भी हैं "कालं अणवकंखमाणे-विहरामि', संलेखना के पाँचों

अतिचार जीवन, मरण,लोक, परलोक, कामभोग की इच्छा से सम्बन्धित ही हैं। संलेखना संथारा अर्थात् प्राण रहते इच्छा समाप्त। सकाम मरण, पण्डित मरण, आराधक बनाने वाला मरण उसी भव में मोक्ष, अधिकतम 15 वें भव में मोक्ष तभी सम्भव है। प्राण रहते इच्छा समाप्त- मुक्ति- उस भव में 15 वें भव तक। वह मृत्यु भी दुःखकारी नहीं। महोत्सवकारी है, दुर्गति दौर्भाग्य हारी है। सुगति सौभाग्य विस्तारी है। जन्म-मरण हारी है। पर इच्छा रहते प्राण समाप्त होना, अकाम मरण, बाल मरण, विराधना, पुनःपुनः मृत्यु एवं दुःख को आमन्त्रण देना है।

ज्ञानावरणीय के क्षयोपशम से जानकारी होगी। मोहनीय कर्म के कमजोर होने से धर्म का सीधा सम्बन्ध है। निज विवेक का आदर करेंगे तभी मोहनीय कर्म तोड़ पायेंगे। सबके भीतर में प्रकाश है, प्रकाश की रश्मियाँ आती हैं तभी तो बोलते हैं कि झूठ नहीं बोलना चाहिये। गुस्सा नहीं करना चाहिये। चोरी नहीं करनी चाहिये। चिन्तन करें कहीं मैं हत्यारा तो नहीं बन रहा हूँ? कहीं मैं झूठ तो नहीं बोल रहा हूँ? कहीं मैं चोरी तो नहीं कर रहा? दूसरा कोई चोरी करे या झूठ बोले तो हमें वह गलत नज़र आता है, लेकिन क्या मेरा यह जीव प्रमादवश हिंसा-झूठ-चोरी करता है, दूसरों के दोष देखना और अपने दोष नहीं देखना संसार की विडम्बना है।

हर व्यक्ति अपने-आपके लिए सोचे कि मैं प्रमाद से कैसे बचूँ? संसार दोषियों से बनता है। निर्दोष को संसार में जगह नहीं मिलती। वह तो लोकाग्र पर अवस्थित हो जाता है। निर्दोष को देखना हो तो सिद्ध भगवन्तों को देखो, परमात्मा को देखो। निर्दोष बनने के लिए प्रयासरत हैं महात्मा। महात्मा साधना करते हैं, अतः वे निर्दोष बनने के रास्ते पर हैं, निर्दोष सिर्फ परमात्मा हैं।

हमें परमात्मा को देखना है। हमारा ध्यान परमात्मा पर लगा होना चाहिये। वह परमात्मा हमारे भीतर में विराजमान है। हमारे भीतर परमात्मा विद्यमान है, फिर अनुभूति क्यों नहीं हो रही है इसका कारण भी खुद को खोजना है।

आत्मा-महात्मा-परमात्मा जुड़े हुए हैं, फिर भी हमारा ध्यान नहीं जा रहा है। हमें तत्त्व को समझना है। वह चाहे गुणस्थान के नाम से हो या तत्त्वार्थ सूत्र के नाम से अथवा दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन से चलें। एक बार चलना तो शुरु करना पड़ेगा। हमने अब तक चाहे कितने ही भव गवां दिये, लेकिन हमें इस भव में नहीं हारना है। हम करणी करके बाईस दण्डकों के ताले लगा सकते हैं। संसार के लिए समय चाहिये, संसार के लिए श्रम चाहिये। आत्मा का अनुभव

करने के लिए एक क्षण भी पर्याप्त हो सकता है। जरूरत है नकली आवरण हटाने की। नकली आवरण माया है, मिथ्यात्व है, वासना है, कामना है। जाति, कुल, पंथ, जनपद नाम के सब रूप अस्थिर हैं–

नित्य स्वतत्त्व को पहचान मिथ्या मोह विसराएँ।
चित्त में चार मंगल की अखण्डित भावना भाएं।।

अपने दोष देख व्यथित होना, पीड़ित होना, दूसरे के दोष देखना नहीं, दिख जाए तो करुणित होना, निर्दोष परमात्मा को देख श्रद्धान्वित होना, कृतज्ञ होना, रोम-रोम पुलकित होना- यह है अखण्डित भावना। अन्तर में जाने की उत्कट अभिलाषा। आपके चेहरे बता रहे हैं कि यह सुनकर भी आपको आनन्द मिल रहा है। अन्दर में चले जायें तो कितना अच्छा लगेगा ? आपने आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा.) का भजन कई बार गुनगुनाया है। आप बोलते हैं–

श्रद्धा नगरी वास हमारा चिन्मय कोष अनूप।
निराबाध सुख में भूलूँ मैं, सद्‌चिद् आनन्द रूप।।
मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया धूप।
शक्ति का भण्डार भरा है, अमल अचल ममरूप।।
मेरी शक्ति के सम्मुख नहीं, देख सके अरि भूप।
मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया धूप।।

निश्चित रूप से अदृश्य आत्मा को देखने के लिए पहले प्रत्यक्ष रूप में जो सद्‌गुरु हैं, उनको देखना होगा। श्रीमद रामचन्द्र जी ने कहा–

प्रत्यक्ष सद्‌गुरु सम नहीं, परोक्ष जिन उपकार।
एवो लक्ष थया बिना, ऊगे न आत्मविचार।।

रूपी पदार्थ को जान-देख सकता है, पर उसे देखने के लिए हाड-मांस के पिण्ड में रहने वाला जीता जागता आत्मद्रष्टा सद् गुरु परम आवश्यक है। गुरु सन्निधि-गुरु चरण सेवा से हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। गुरुगम्य और गुरु कृपा से मिला ज्ञान ही जीवन में उपयोगी होता है। विद्या सीखी कर्ण ने ब्रह्मास्त्र की, पर गुरु कृपा नहीं, आवश्यकता होने पर, विस्मृत हो गई भूलावे में पड़ गई विद्या। गुरु महिमा के अनेक उदाहरण भरे पडे हैं। आप दशवैकालिक सूत्र का नवम अध्ययन देखें, उत्तराध्ययन सूत्र का पहला अध्ययन लें, गुरु की सन्निधि-गुरु के चरणारविन्दों में कैसे आगे बढ़ सकते हैं? जरूरत है उस मार्ग पर बढ़ने की। केवल मात्र एक उपवास करके इतिश्री नहीं मानना, यह तो प्रारम्भ है। प्रारम्भ करके ही नहीं रहना है,

उस मार्ग पर सतत आगे बढ़ते जाना है। गुरु ने जो बातें बताई, उन पर चिन्तन करना है।

चेतन निज घर को भूल रहा, पर घर माया में झूल रहा।
सद्चिद् आनन्द को पाना हो तो, सामायिक साधन कर लो।।
जीवन उन्नत करना चाहो, तो सामायिक साधन कर लो।।

आप उपवास-दया या ग्यारह सामायिक करके इतिश्री न समझ लें। आपका सामर्थ्य है तो उपवास-पौषध, दया-संवर करें और वह भी नहीं हो सके तो दिन भर में ग्यारह सामायिक करके आचार्य भगवन्त के पुण्य स्मृति दिवस पर धर्म-साधना करनी है। आप करें, लेकिन धर्म दलाली से कोई मत चूकना।

परसों आचार्य भगवन्त का पुण्य स्मृति दिवस उपस्थित हो रहा है। निवृत्ति की ओर कदम बढ़ायें। निवृत्ति पूरी तरह नहीं कर सकें तो प्रवृत्ति कम करने का प्रयास करें। कामना हटाकर एकाग्र भाव से बैठकर भजन में, उपदेश में, डूबकर तत्त्व ज्ञान को पाने का प्रयास करें।

आचार्य भगवन्त ने दस वर्ष की उम्र में संन्यास ले लिया था। वे अखण्ड बाल ब्रह्मचारी थे। उन्होंने सारे पापों का त्याग कर दिया था। वे महापुरुष निवृत्ति मार्ग में बढ़ गये, पूर्ण निवृत्ति कर ली, वैसी निवृत्ति कदाचित् अभी संभव नहीं तो कम-से-कम प्रवृत्ति तो नहीं बढ़ायें।

आचार्य भगवन्त साधु और गृहस्थ के बीच प्रचारक खड़े करना चाहते थे। प्रचारक बनकर आगे बढ़ने की तैयारी करें। स्वयं साधना मार्ग में नहीं लगेंगे तो जो बात और-और कह रहे हैं, आप भी कहने लग जायेंगे कि संस्कार बिगड़ रहे हैं, वातावरण दूषित हो रहा है, पर उसे ठीक कौन करेगा? दुर्जन की दुर्जनता उतनी बुरी नहीं है, जितनी बुरी है सज्जन की निष्क्रियता। कहीं पढ़ने को मिला-

दुर्जन सज्जन बने, सज्जन संगठित बने, संगठित सज्जन सक्रिय बने। यह है समूह के प्रति हमारा दायित्व, इस सद्वृत्ति से समय का सदुपयोग करने पर निन्दा से बचेंगे, जड़ से उत्पन्न नकली मैं से बचेंगे, असली स्वरूप का अन्वेषण करेंगे, रागद्वेष की ग्रंथि का छेदन करेंगे, मिथ्यात्व का वमन कर असली मैं को उपलब्ध हो सकेंगे- मरण से मुक्त हो सकेंगे, मृत्यु को महोत्सव बनाने वाले आचार्य भगवन्त के गुण स्मरण कर सकेंगे। श्रद्धा सुमन अर्पित कर सकेंगे। मैं कुछ नहीं.....। ■

अध्यात्म

संयम की साधना

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय के प्रतिष्ठित आगम उत्तराध्ययन सूत्र के उनतीसवें अध्ययन में प्रश्न किया गया- **संजमेणं भंते! जीवे किं जणयइ?** भन्ते! संयम से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया- **संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ।** संयम से जीव अनास्रव की स्थिति का निर्माण करता है।

'संयम' शब्द धार्मिक साहित्य का एक प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण शब्द है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'यमु-उपरमे' धातु से संयम शब्द निष्पन्न होता है। सम्यक्तया विरति करना संयम है। प्रश्न हो सकता है कि विरति किससे करें? विरति उन चीजों से करें जो हमारी आत्मा को मलिन बनाने वाली हैं। विरति उन कार्यों से करें, उन आकर्षणों से करें, जो हमारे स्वभाव को विभाव में ले जाने वाले होते हैं।

यह जगत द्वन्द्वात्मक है। इसमें दो ही तत्त्व हैं- एक चेतन और दूसरा अचेतन। प्राणी चेतन है, चेतनावान है। चेतन के सिवाय दुनिया में जो कुछ भी है, वह सब अचेतन है। जैनदर्शन के अनुसार अचेतन जगत अमूर्त भी है और मूर्त भी है। चेतन अमूर्त ही होता है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल, ये चार अचेतन तत्त्व अमूर्त्त हैं। पुद्गल तत्त्व अचेतन है, किन्तु वह मूर्त है। मूर्त होने का मतलब यह नहीं कि आंखों से देखा जा सकेगा। मूर्त भी दो प्रकार के होते हैं। एक वह मूर्त जो दृष्टि का गोचर बनता है और एक वह मूर्त जो आंखों से नहीं देखा जा सकता। एक परमाणु मूर्त है। उसमें स्पर्श है, रस है, गंध है, वर्ण है, परन्तु फिर भी उसे स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। अनन्त परमाणु मिलने से स्कन्ध बन जाता है। हमारे सामने मूर्त दुनिया है, पदार्थ हैं। इन पदार्थों के प्रति हमारा आकर्षण भी होता है और विकर्षण भी होता है। हमारी पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। इन इन्द्रियों का अपना एक-एक विषय है। स्पर्शनेन्द्रिय का विषय है-स्पर्श। रसनेन्द्रिय का विषय है-रस। घ्राणेन्द्रिय का विषय है-गन्ध। चक्षुरिन्द्रिय का विषय है-रूप। श्रोत्रेन्द्रिय का विषय है-शब्द। हमारी ज्ञानेन्द्रियां इन विषयों का

ग्रहण करती हैं। इन इन्द्रियों के दो कार्य हैं। पहला कार्य है शुद्ध ज्ञान करना यानी स्पर्श, रस, गंध, रूप और शब्द कैसा है, यह जानना। दूसरा कार्य है भोग करना। इन इन्द्रियों के द्वारा विषयों का भोग भी किया जाता है। जैसे प्रशंसा भरे शब्दों को सुनने से मन में आह्लाद का भाव आ गया तो समझना चाहिए श्रोत्रेन्द्रिय का भोग हो गया। इसी प्रकार रूप, गंध, रस और स्पर्श का भी भोग किया जा सकता है। संयम की साधना करने वाला व्यक्ति शुद्ध ज्ञान करे, किन्तु अपनी चेतना को भोग से बचाने का प्रयास करे। जब मन के साथ राग-द्वेष का भाव जुड़ जाता है तब मलिनता आ जाती है। श्रीमद् भगवद्गीता में सुन्दर कहा गया है-

रागद्वेषवियुक्तैस्तु, विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा, प्रसादमधिगच्छति।।

विषयों का ग्रहण तो किया जा सकता है, किन्तु राग-द्वेष मुक्त इन्द्रियों से विषयों को ग्रहण करने का प्रयास करे। ज्ञाता-द्रष्टा भाव से विषयों का ग्रहण करे। उनके साथ रागद्वेष का भाव न जुड़े। हम व्यवहार की दुनिया में जीवन यापन कर रहे हैं, विषयों की दुनिया में जी रहे हैं। हमारे कान शब्दों को न सुनें, यह कठिन है। हमारी आँखें रूप को न देखें, यह असंभव है। शेष इन्द्रियों के द्वारा भी अपने-अपने विषयों का ग्रहण न हो, यह मुश्किल है। इसलिए मध्यम मार्ग और उचित मार्ग यह बताया गया है-

ण सक्का ण सोउं सद्दा सोयविसयमागता।
रागदोसा उ जे तत्थ ते भिक्खू परिवज्जए।।

पूज्य गुरुदेव तुलसी 'अध्यात्म पदावली' में इसका अनुवाद करते हुए लिखते हैं-

शक्य नहीं है शब्द न सुनना, खुले श्रोत्र के हैं जब द्वार।
शक्य यही है हो न शब्द में, द्वेष राग का अनुसंचार।।

साधक के मन में राग-द्वेष का भाव न आए, विषयों के प्रति आसक्ति का भाव न आए। साधक शुद्ध ज्ञान करे अथवा उचित रूप में भोग भी करे, परन्तु आसक्त न बने। एक साधक भोजन करता है, किन्तु वह भी शरीर को चलाने के लिए करता है। दसवेआलियं में कहा गया है-

अहो! जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहूण देसिया।
मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा।।

तीर्थंकरों ने साधु को निरवद्य वृत्ति का निर्देश दिया है। उन्होंने साधु को भोजन करने की आज्ञा दी है, क्योंकि यह शरीर मोक्ष की साधना का हेतु बनता है इसलिए शरीर को टिकाए रखना होगा और शरीर को टिकाए रखने के लिए उसे भोजन भी देना होगा। नौकर से काम करवाना है तो उसे वेतन भी देना होगा। यह शरीर भी हमारा कर्मचारी है, हमारा सहयोगी है। हमारी संयम की साधना में सहयोग करता है। साधक शरीर को चलाने के लिए भोजन को ग्रहण करे। जब-जब साधक विषयासक्त बनता है, तब-तब वह साधना से दूर हो जाता है।

संस्कृत साहित्य में मन के लिए कहा गया है-**मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।** मन बंधन का कारण भी बनता है और मोक्ष का कारण भी बनता है। जो मन विषयों में आसक्त रहता है, वह बंधन की ओर ले जाता है और जो मन विषयासक्ति से मुक्त रहता है, वह मुक्ति की ओर ले जाने वाला होता है। आसक्ति से असंयम का पोषण होता है तो अनासक्ति से संयम की साधना होती है। शास्त्रकार ने कहा कि संयम से अनास्रव की स्थिति का निर्माण होता है। जहाँ-जहाँ असंयम होता है, वहां अवश्यमेव आस्रव होता है। जितना-जितना संयम का विकास होता है, उतना-उतना अनास्रव की स्थिति का निर्माण होता है और संवर की साधना का विकास होता है। एक साधक के सामने संयम ही मुख्य तत्त्व होता है। उसका खाना भी संयम युक्त हो, उसका चलना भी संयमयुक्त हो, उसका बोलना, देखना आदि हर क्रियाकलाप संयम युक्त हो। हमारे भीतर एक संघर्ष चलता है। भिन्न-भिन्न वृत्तियों के संस्कार उभरते रहते हैं। कभी मन में गुस्सा आ जाता है तो कभी अहंकार का भाव देखने को मिलता है। कभी लोभ का भाव तो कभी कामोत्तेजना का भाव उभर जाता है। उन भावों को परास्त करने का उपाय भी हमारे पास होना चाहिए। अन्यथा वे भाव हमें परास्त कर सकते हैं। तात्त्विक भाषा में इसे औदयिक भाव और क्षायोपशमिक भाव का संघर्ष कहा जाता है। कभी-कभी औदयिक भाव के संस्कार इतने प्रबल होते हैं कि वे हमारे स्वभाव को भी पछाड़ देते हैं और कभी-कभी क्षयोपशम का भाव इतना प्रबल बन जाता है कि औदयिक भाव का संस्कार परास्त हो जाता है। कभी जीव का स्वरूप इतना बलवान बन जाता है कि कर्म-संस्कार परास्त हो जाते हैं और कभी कर्म-संस्कार इतना बलवान बन जाता है कि हमारा स्वभाव कुछ दब जाता है। संस्कृत साहित्य में कहा गया है-

यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।

चार चीजें बताई गई हैं- यौवन, धन-सम्पत्ति, सत्ता और अविवेक। श्लोककार ने कहा कि इनमें से एक-एक चीज भी विकृत करने वाली है, वहां यदि चारों का योग हो जाए तो फिर कहना ही क्या? किन्तु मेरा मंतव्य है कि यौवन भी विकृत नहीं करता, धन-सम्पत्ति भी विकृत नहीं करती और सत्ता भी विकृत नहीं करती, अगर एक अविवेक साथ में न रहे। यौवन, धन और सत्ता की अवस्था में उन्माद आ सकता है। परन्तु साथ में विवेक हो संयम हो, तो उन्माद को शान्त किया जा सकता है और विवेक युक्त यौवन आदि भी बड़ा काम का होता है।

हमारे जीवन में उपादान और निमित्त का बड़ा योगदान रहता है। इनमें उपादान बलवान होता है, किन्तु कभी-कभी निमित्त भी अपना चमत्कार दिखा सकता है। इसलिए सामान्य साधक के लिए यही कल्याणकारी है कि वह अपने उपादान को ठीक बनाने की साधना करता रहे और निमित्तों से यथासंभव बचने का प्रयास करे। हमारे पूर्वाचार्यों ने, मनीषियों ने साधु संस्था के लिए कुछ नियम बनाए। उनमें से अनेक नियम तो मात्र निमित्तों से बचने के लिए हैं। उदाहरण के लिए जैसे साधु संस्था के लिए एक नियम बनाया गया कि अकेला साधु अकेली महिला से बात न करे। हालांकि एक महान साधक चाहे एकान्त में महिला से बात करे, कौनसी दिक्कत है। परन्तु मनीषियों ने सोचा, सबकी साधना, सबका उपादान इतना मजबूत नहीं होता। इसलिए यह नियम बनाया गया। ऐसे कुछ नियम साधक को पतन से बचाने वाले होते हैं। इसलिए साधक संयम की साधना करे। वह निमित्तों से यथासंभव बचने का और उपादान को ठीक रखने का अभ्यास करे।

आर्षवाणी में बहुत महत्त्वपूर्ण प्रश्न किया गया कि संयम से क्या प्राप्त होता है? तात्त्विक भाषा में कहा गया कि ज्यों-ज्यों व्रत, अप्रमाद आदि की साधना बढ़ती है, त्यों-त्यों आस्रव का निरोध होता है, कर्म आगमन का पथ अवरुद्ध होता है। संयम एक ऐसा तत्त्व है जो आन्तरिक समस्याओं का समाधान है तो बाह्य समस्याओं का भी समाधान है। इसलिए हम संयम की साधना करें, यह हमारे लिए श्रेयस्कर है।

तत्त्वबोध

अन्तराय कर्म का विवेचन

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

अन्तराय कर्म की पाँच प्रकृतियाँ हैं:- 1. दानान्तराय, 2. लाभान्तराय, 3. भोगान्तराय, 4. उपभोगान्तराय और 5. वीर्यान्तराय। इन पाँचों का संबंध मोहकर्म एवं दर्शनावरणीय कर्म से भी है। मोहजन्य स्वार्थपरता से दानान्तराय, कामना से लाभान्तराय, ममता से भोगान्तराय, अहंत्व से उपभोगान्तराय, एवं कर्तृत्व भाव से वीर्यान्तराय कर्म का सर्जन व अर्जन होता है और इन कर्म प्रकृतियों का क्षयोपशम व क्षय क्रमशः 1. उदारता, 2. निष्कामता, 3. निर्ममता, 4. निरहंकारता एवं 5. अक्रियता गुणों से होता है। मोहकर्म के क्षय से दर्शनावरण कर्म का क्षय होता है जिससे स्वसंवेदन गुण प्रकट होता है। इसी का आगे संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है।

अचेतन-सचेतन में कोई भिन्नता है तो वह मुख्यतः दो ही बातों में है- 1. संवेदन करना और 2. विचार करना अथवा जानना। संवेदन करने को दर्शन व जानने को ज्ञान कहा जाता है। ज्ञान और दर्शन गुण चेतन के मुख्य लक्षण हैं। अचेतन में ये गुण नहीं होते हैं। ज्ञान भी दर्शन के बाद होता है। इसलिये ज्ञान से भी अधिक महत्त्व दर्शन का है। जिस प्राणी का जितना दर्शन गुण विकसित है उस प्राणी की चेतना उतनी ही अधिक विकसित है। वस्तुतः संवेदना ही चेतना की प्रतीक है। शरीर में भी जिस स्थल पर संवेदन शक्ति खो जाती है उसे हम मूर्च्छित या अचेतन कहते हैं। प्राणी का जितना-जितना विकास होता जाता है, संवेदन शक्ति उतनी ही बढ़ती जाती है। व्यक्ति का यह स्वसंवेदन ही दर्शन गुण है। इस संवेदन शक्ति का अधिक विकास होने पर प्राणी अपने से भिन्न व्यक्तियों में होने वाले संवेदन या वेदना का स्वयं संवेदन करने लगता है। दूसरों में होने वाले दुःख से करुणित होने लगता है। उसकी वेदना वह खुद अनुभव करता है तथा उसकी पीड़ा को मिटाने का प्रयास करता है। परपीड़ा का संवेदन करुणा है। पर-पीड़ा को दूर करने के लिये योगदान देना दया है। दया क्रियात्मक रूप है। पर-पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति अपने दुःख से ऊपर उठ जाता है और अपनी सामर्थ्य का उपयोग दूसरों की सेवा में करता है। इस प्रकार दया, दान, सेवा-भाव एक

दूसरे से सम्बद्ध हैं। करुणा के साथ चेतना का गहरा सम्बन्ध है। करुणा जितने ऊँचे स्तर की होगी, जितनी गहरी होगी, जितनी विभु होगी चेतना उतनी ही ऊँचे स्तर की, गहरी एवं विभु होगी।

जो साधक पर-पीड़ा से संवेदनशील होते हैं वे सहज ही अपने सामर्थ्य व साधनों का, अपनी प्रत्येक शक्ति का उपयोग प्राणी मात्र के दुःख को दूर करने के लिये करते हैं। उनका यह योगदान जैनागम में अनन्त दान कहा है। ऐसे व्यक्ति में अनन्त औदार्य, ऐश्वर्य, अनन्त माधुर्य, अनन्त सौन्दर्य, अनन्त सामर्थ्य की भी अभिव्यक्ति होती है। ऐश्वर्य तो इस प्रकार का है कि जिससे उसे लेशमात्र भी कमी नहीं रहती है। अपने लिये संसार और शरीर की अपेक्षा ही नहीं रहती है। कमी अनुभव होने को जैनागम में लाभान्तराय कहा है। कमी का अनुभव न होना ही लाभ है। लेशमात्र की भी कमी न होना ही अनन्त लाभ है, अनन्त ऐश्वर्य है। करुणार्द्र व्यक्ति को संसार के सारे प्राणी भले लगते हैं, बड़े सुन्दर लगते हैं, बड़े प्यारे लगते हैं। जिससे उसका हृदय सौन्दर्य से भर जाता है। उसके लिये अपना दुःख-सुख कुछ भी शेष नहीं रहता। वह नश्वर भोगों से ऊपर उठ जाता है। जिससे जिन भोगों का अन्त होता है उन अन्तयुक्त भोगों से वह मुक्त हो जाता है। वह अनन्त लाभ, अनन्त भोग, अनन्त उपभोग, अनन्त वीर्य का स्वामी होता है। करुणा का क्रियात्मक रूप **दान** है। चाह के अभाव का द्योतक **लाभ** है। सबके प्रति प्रियता का भाव **भोग** है। वह अपने अन्दर से आने वाला निज रस है। उस रस का अन्त कभी नहीं होता है। वह रस अनन्त (अन्त रहित) होता है। इसलिये वह निज रस का धणी अनन्त भोग का स्वामी होता है। उस करुणावान व्यक्ति को सभी अपने लगते हैं। वह व्यक्ति भी सभी को अपना लगता है। यह आत्मीय भाव माधुर्य को प्रकट करता है। उसका यह माधुर्य या आत्मीय भाव सब प्राणियों के प्रति सदैव बना रहता है। मधुरता के इस रस की क्षतिपूर्ति व निवृत्ति नहीं होती है। यह रस प्रतिक्षण नया बना रहता है। यह अनन्त माधुर्य ही जैनागम की भाषा में **अनन्त उपभोग** कहा जाता है। उस करुणावान व्यक्ति को अनन्त लाभ, अनन्त भोग-उपभोग, अनन्त शान्ति रूप अखण्ड एवं अनन्त रस की उपलब्धि होती है। फिर उसे संसार और शरीर से कुछ भी पाना शेष नहीं रहता। वह कृतकृत्य हो जाता है। उसे पर की अपेक्षा नहीं रहती है। जहाँ पर की अपेक्षा होती है, वहीं असमर्थता होती है। जिसकी प्राप्ति में पर की

अपेक्षा नहीं है, पराधीनता नहीं है, जो स्वाधीन है उसमें असमर्थता की गन्ध मात्र भी नहीं होती है। उसमें असमर्थता का अभाव रहता है। असमर्थता का अभाव होने से ही वह अनन्त सामर्थ्यवान होता है। इसी को आगम की भाषा में **अनन्तवीर्य** कहा है।

इस प्रकार जो समस्त प्राणियों की पीड़ा से करुणित है वह अनन्त दान, अनन्त लाभ, अनन्त भोग, अनन्त उपभोग एवं अनन्त वीर्य का स्वामी होता है। करुणा का क्रियात्मक रूप **दान** है। चाह के अभाव का द्योतक **लाभ** है। सबके प्रति भलेपन का (प्रियता का) भाव **भोग** है। सबके प्रति माधुर्य का भाव **उपभोग** है, कृतकृत्यता का द्योतक **वीर्य** है। दान का फल उदारता है। लाभ-प्राप्ति का परिणाम शान्ति तथा भोग का परिणाम मुक्ति का रस (सुख) है। उपभोग का परिणाम उस रस का नित्य नया रहना है। वीर्य का परिणाम असमर्थता से छुटकारा पाना है।

मोह के कम होने से संवेदन शक्ति बढ़ जाती है जिससे जड़ता मिटती है। जड़ता मिटने से चेतना का विकास होता है। यह ही दर्शन गुण का प्रकट होना है। जड़ता का अंश मात्र भी शेष न रहना ही अनंत दर्शन गुण का प्रकट होना है। जो जितना विषय सुख में आबद्ध है उसकी चेतना उतनी ही मूर्च्छित व जड़तायुक्त होती है। वह अपने सुख में इतना डूबा रहता है कि उसकी सुखप्राप्ति के कारण से भले ही दूसरों को दुःख हो तब भी उनके प्रति उसकी करुणा नहीं जागती। वह दूसरों को दुःखी करके भी अपना सुख भोगता रहता है। उसकी वह क्रूरता, करुणाहीनता, उसकी चेतना की मूर्च्छित अवस्था का ही द्योतक है। मोह के घटने पर ही स्वार्थ-भाव घटता है। स्वार्थ-भाव के घटने पर ही करुणाभाव जागृत होता है। अतः करुणाभाव मोह घटने या मिटने का द्योतक है।

मोह के मिटने से कामना, ममता व अहंता मिटती है। कामना के मिटने पर कभी कमी का अनुभव नहीं होता है, सदैव ऐश्वर्य व लाभ की अनुभूति होती है। कामना मिटने से कामना-पूर्ति से होने वाला राग और कामना अपूर्ति से होने वाला द्वेष मिट जाता है। रागद्वेष मिटने से भेद व भिन्नता मिट जाती है जिससे उसमें सबके प्रति माधुर्य भाव पैदा हो जाता है जो उसे निज रस (सुख) से भर देता

है। वह निज रस की अनुभूति भोगोपभोग की उपलब्धि है। वह निज रस में इतना निमग्न रहता है कि फिर उसे कुछ भी चाह नहीं रहती है। चाह नहीं रहने से कुछ भी पाना शेष नहीं रहता है। पाना शेष न रहने से करना शेष नहीं रहता है। चाहना, पाना, करना शेष नहीं रहने पर कुछ भी जानना शेष नहीं रहता है। यह ही अनन्त ज्ञान है। कुछ भी शेष नहीं रहने पर पराधीनता, असमर्थता शेष नहीं रहती। असमर्थता का शेष न रहना ही वीर्य है। इस प्रकार मोह के मिटने से 1. अज्ञान, 2. जड़ता, 3. पाना, 4. कामना, 5. ममता, 6. अहंता, और 7. असमर्थता का अंत हो जाता है, जिससे उसे 1. अनन्त ज्ञान, 2. अनन्त दर्शन, 3. अनन्त दान, 4. अनन्त लाभ, 5. अनन्त भोग, 6. अनन्त उपभोग और 7. अनन्त वीर्य की उपलब्धि होती है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि वीतराग के पास एक दाना भी नहीं होता है तब फिर वह क्या दान देता है? वह अनन्त दानी कैसे है? तो कहना होगा कि वीतरागी पुरुष संसार के समस्त प्राणियों को विषय-सुख की दासता तथा पराधीनता के दुःख में आबद्ध देखता है तो उसका हृदय इस पराधीनता की पीड़ा से संवेदनशील होकर करुणित हो जाता है। सभी प्रणियों को पराधीनता की पीड़ा से छुड़ाने के लिये वह ज्ञान का योगदान देता है। पराधीनता से छूटने का नाम ही मुक्ति है। अर्थात् वीतराग केवली प्राणियों को मुक्ति-प्राप्ति के लिए ज्ञान-दान करने में प्रयत्नशील रहता है। यही उसका अनन्त दान है। तात्पर्य यह है कि वीतराग की सर्वकल्याणकारी भावना **अनन्त दान** है। वीतरागी को लेशमात्र भी कमी का अनुभव नहीं होता, यही उसका **अनन्त लाभ** है। वीतरागी को लेशमात्र भी नीरसता का अनुभव नहीं होता, यही उसका **अनन्त भोग** है। उसकी सरसता सदैव ज्यों-की-त्यों बनी रहती है। प्रतिक्षण उसमें नवीन रस का अनुभव होता है, यही उसका **अनन्त उपभोग** है उसे अपने अभीष्ट की प्राप्ति में और अनिष्ट की निवृत्ति में लेशमात्र भी असमर्थता नहीं होती, यही उसका **अनन्त वीर्य** है। ये पाँचों उपलब्धियाँ मोह के सर्वथा क्षय होने पर ही सम्भव हैं। अतः मोहनीय कर्म के पूर्णतः क्षय होने पर तथा कैवल्य की उपलब्धि होने के क्षण में इनकी भी उपलब्धि होती है।

-82 / 141, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

चिन्तन

जैन समाज में बढ़ती व्यक्ति पूजा

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

हम पवित्र जैन धर्म-दर्शन, संस्कृति तथा समाज की प्राचीन परम्परा का अवलोकन करें, तो पायेंगे-

1. आचार्यों ने श्रुत परम्परा से प्राप्त अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया, किन्तु अपना जीवन परिचय तो दूर कई स्थलों पर रचनाकार के रूप में भी अपना नाम नहीं दिया। हमें अन्य स्रोतों से रचनाकार का नाम, जन्मस्थान, काल, गुरुपरम्परा आदि का पता लगाना पड़ता है। फिर भी विवाद बना रहता है।
2. अत्यन्त प्राचीन मन्दिरों के नाम भी तीर्थंकरों के नाम पर ही रखे मिलते हैं। जैसे पार्श्वनाथ मन्दिर, ऋषभदेव मन्दिर आदि। मूर्तियाँ भी तीर्थंकरों के अलावा किन्हीं आचार्य, मुनियों की नहीं बनती थी।
3. प्राचीन पाण्डुलिपियों में जो चित्र बने मिलते हैं वें भी किन्हीं तीर्थंकर, अरिहन्त या अन्य परमेष्ठियों के सामान्य चित्र हैं। उन पर भी आचार्य या मुनि विशेष का उल्लेख नहीं होता।
4. पहले भी अनेक गृहस्थ ब्रह्मचारी, विद्वान् पण्डित हुए हैं जिन्होंने अत्यन्त समर्पण पूर्वक जिनवाणी की सेवा की तथा प्रचार-प्रसार किया, किन्तु उन्होंने कभी खुद को पुजवाने जैसा कार्य नहीं किया तथा स्वयं का या अन्य विद्वानों का नाम लेकर सम्यग्दृष्टि या मिथ्यादृष्टि घोषित करने का भी कार्य नहीं किया। उदाहरण के रूप में पं. बनारसीदास, पं. टोडरमल, पं. सदासुखदास आदि।

इन सभी के अलावा और भी अनेक उदाहरण हैं जो दिये जा सकते हैं। हम सभी हमेशा से सुनते आये हैं कि जैनधर्म में गुणों की पूजा है, व्यक्ति की नहीं। वर्तमान में जो परिदृश्य दिखायी दे रहा है, वह इस प्रकार है-

1. दिगम्बर-श्वेताम्बर, तेरापंथी, बीसपंथी, कानजीपंथी, स्थानकवासी-तेरापंथी आदि सभी सम्प्रदायों में व्यक्तिवाद जमकर हावी है। जो सामने दिख रहा है बस वही भगवान है। ऐसा लगता है कि तीर्थंकरों का नाम भी मजबूरी में लेना पड़ता है।

2. कैसे भी करके यदि कोई प्रवचन संकलित हो गये या किताब लिख दी तो कवर पेज पर लेखक, साधु, संत या विद्वान् का कम्प्यूटरीकृत देदीप्यमान चेहरा न छपे तो समझ लीजिए कहर ढह जायेगा।

3. विषय वस्तु, प्रूफ रीडिंग और उत्कृष्ट भाषा आदि के माध्यम से ग्रन्थ की गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण विषय नहीं है, बल्कि महत्त्वपूर्ण है कवर पेज का कलर, प्रिंटिंग, आर्ट पेपर पर सम्पूर्ण ग्रन्थ की प्रिंटिंग। जितना खर्च उनके एक प्रवचन प्रकाशन में आ जाता है उतने पैसे से कई प्राचीन दुर्लभ पाण्डुलिपियों का सामान्य प्रकाशन हो सकता है। बुक स्टालों पर महावीर के मूल आगम गायब हैं। प्रवचन साहित्य की भरमार है। उनके शीर्षक भी ग्लैमरस हैं।

4. नगरों, महानगरों में चातुर्मास के दौरान हजारों लाखों पोस्टर, बैनर, होर्डिंग बिछा दी जाती है जिस पर तीर्थंकरों का नहीं सन्तों का आशीर्वाद मुद्रा में चित्र रहता है। समाचार पत्रों में सचित्र विज्ञापन और खुद के चित्रों से मण्डित घड़ी, चैन, लॉकेट, पेन, ब्रासलेट, कैलेण्डर आदि किस संस्कृति को जन्म दे रहे हैं पता नहीं। चुनाव तथा फिल्म प्रमोशन के लिए नेता-अभिनेताओं की तरह धर्म-प्रवचन का भी एक ग्लैमर वर्ल्ड और बाजार बन गया है। साधु भी जब भिन्न-भिन्न मुद्राओं में फोटो सेशन करते हैं तब समझ में नहीं आता कि यह कैसा नशा है?

5. मन्दिर में तीर्थंकरों की मूर्तिपूजा नहीं करने वाले स्थानकवासी, तेरापंथी तथा तारणपंथी भी अन्य राग-द्वेषी देवी-देवताओं की मूर्तियाँ घर पर रखते हैं और पूजते हैं। अपने गुरुओं की फोटो रखते हैं। मूर्तिपूजा का स्थान फोटो पूजा ले रही है।

6. अपने-अपने गुरुओं की मूर्तियाँ भी स्थापित हो रही हैं। यह काम तो मूर्ति पूजा नहीं करने वालों ने भी शुरु कर दिया है। अभी अर्घ्य नहीं चढ़ाते, कल लोग वह भी शुरु कर देंगे।

7. अपने-अपने गुरुओं के ऊपर चरितकाव्य, महाकाव्य, स्तोत्रों की रचना हो रही है, कई स्थलों पर गुरु स्वयं यह कार्य करवाते हैं। जो ऐसा करे उन्हें पुरस्कृत करते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में अपने विशेषांक निकलवाने के लिए राशि मुहैय्या करवाते हैं। कविनुमा विद्वान् भी इनकी स्तुति में ज्यादा लाभ मानते हैं।

8. कई साधु, मुनि , विद्वान्, पण्डित स्वयं का अभिनन्दन ग्रन्थ स्वयं ही सम्पादित कर रहे हैं, नाम भले ही किसी का भी हो। वो इसलिए कि उनके गये बाद तो उनका स्मृति ग्रंथ भी कोई निकालेगा, इस बात की गारण्टी नहीं है।
9. टी.वी. पर यह कहकर ही प्रवचन प्रसारण करवाते हैं कि यह तो जिनवाणी का प्रचार है, मेरा नहीं। ऐसे लोगों को किसी और के प्रवचन प्रसारित करने की प्रेरणा देते भी कभी नहीं देखा। चैनलों का क्या है? जो नोटो की गड्डियाँ रखवा दे उसी के प्रवचन दिखा देते हैं। आप जिनशासन के विपरीत भी बोलो तो चैनल को कोई मतलब नहीं है।
10. मन्दिरों के नाम भी सेठों और जातियों के नाम पर होना, नवीन तीर्थों के नाम स्वयं के अथवा गुरुओं के नाम पर रहना यह सब व्यक्तिवाद है।
11. तीर्थंकर प्रतिमाओं से ज्यादा पद्मावती, क्षेत्रपाल, भौमिया जी, घण्टाकर्ण आदि लौकिक देवी-देवताओं की पूजा भी हमारी आध्यात्मिक शून्यता, भौतिकवाद, और व्यक्तिवाद की निशानी है।
12. हर पंथ, सम्प्रदाय और गुरु तथा पण्डित स्वयं को सम्यग्दृष्टि और अन्य को मिथ्यादृष्टि सिद्ध करने पर तुले हैं।

हम चाहे कुछ भी कहें सारांश यह है कि भगवान गौण हो गये हैं और भक्त मुख्य। भगवान के नाम पर भी भक्तों की ही पूजा हो रही है। आत्म-प्रशंसा और आत्म-विज्ञापन का नशा कभी, कहीं भी कुछ भी करवा सकता है।-

''स्वार्थ की इस दुनिया में हम, वीतरागियों से धन मांग रहे हैं।
भगवान तो नाम के रह गये अब, भक्त ही पूजे जा रहे हैं।।

कुछ निवेदन-

हम सभी जानते हैं कि इस आत्म-विज्ञापन के तूफान को हम रोक नहीं सकते। लौकिक समृद्धि की आकांक्षाओं के लिए पूजन पाठ, लौकिक देवी-देवताओं की आराधना करने को बंद नहीं करवा सकते। किन्तु इन सभी के बीच अपनी मूल संस्कृति, वीतरागी धर्म कहीं जड़ से ही न हिल जाये, इसीलिए कुछ बातों का ध्यान रख सकते हैं-

1. धर्मायतनों, संस्थाओं, ट्रस्टों, सभा-भवनों के नाम जैन तीर्थंकरों, प्राचीन आचार्यों या जैन सिद्धान्तों के नाम पर ही रखें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।
2. ध्यान रखें, हमारे लिए वीतरागी भगवान, तीर्थंकरों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कुछ

भी नहीं है। सारे तर्क, सारी बातें दूसरे नंबर पर हैं, पहले नंबर पर तो ये ही रहे हैं, और ये ही रहने चाहिए।

वास्तविकता यह है कि हम सभी एक बहुत बड़ी आत्म प्रवंचना के शिकार हैं। वह है- पर में सुख की खोज। अपनी शुद्धात्मा में रुचि नहीं, इसलिए जन्म कुण्डली, ग्रह-शांति, नक्षत्र, वास्तु, शकुन-अपशकुन आदि निमित्त शास्त्रों को वीतरागी आगमों से भी बड़ा बनाने पर तुले हैं और उनसे सुखी होने की कल्पना कर रहे हैं और यही सपने दूसरों को दिखा रहे हैं। हमारा सारा आत्म-वैभव कबाड़ में डला है और माया का वैभव सर चढ़ कर बोल रहा है। मामला बस इतने तक सीमित हो गया है कि 'जो बिक रहा है, वो बेच रहे हैं'। उसे धर्म का जामा पहना रहे हैं, उसके पक्ष में आगम-प्रमाण, तर्क, युक्तियाँ खोज रहे हैं। इन चीजों की कोई फिलॉसफी नहीं है। आधारहीन आस्थाएँ खड़ी कर रहे हैं, उन आस्थाओं की कीमत वसूल रहे हैं........बस! अब इस तरह सारा वैभव नष्ट होते भी नहीं देख सकते। गुस्सा है तो है....कोई बुरा माने तो माने। हमारा तो नारा है-

गलती इतिहास में भी हुयी है, तो उसे सुधारेंगे,
परम्परा गृहीत मिथ्यात्व को कतई नहीं दुहरायेंगे।
सिर्फ बातें ही नहीं, यह प्रण है हमारा,
जैन धर्म की वीतरागी छवि, उसे वापस दिलवायेंगे।।

-जिन फाउण्डेशन, ए 93/7 ए,
नन्दा के पीछे, छत्तरपुर एक्सटेंशन, नई दिल्ली-74

अभिमत

श्री महेन्द्र तिल्लानी

जिनवाणी के मार्च एवं अप्रेल अंकों का परिशीलन किया। बहूपयोगी सामग्री से सुसज्जित अंक बहुमूल्य संग्रहणीय दस्तावेज बन पड़े हैं। लेखक वृन्द को साधुवाद। साथ ही पुनः पुनः आपके अकथनीय परिश्रम एवं विद्वत्ता को भी सादर नमन करता हूँ। जिनवाणी का स्वरूप तो उत्तरोत्तर निखर ही रहा है, उस पर गुरु-गरिमा जैसे विशेषांक मानो सोने में सुहागा। विशेषांक भी आद्योपान्त पढ़ने के बाद ही हाथों से छूट पाया। कहना होगा कि जिनवाणी का प्रत्येक अंक सामयिक न होकर स्थायी महत्त्व का अंक होता है।

-38, शांतिनगर, हरमाला रोड़, रतलाम-457001 (म.प्र.)

English-Section

JAINA DOCTRINE OF NON-VIOLENCE (2)

(Re-interpreted as Thinking Process Model)

Dr. Kokila H. Shah

It is said that passion is the main cause that leads to violence. Amritcandra elaborates on this point and further asserts that passion is the main cause which leads to violence.

Any injury whatsoever to the matarial or conscious vitalities caused through passionate activity is violence. Conversely non-appearance of attachment and other passion is non-violence.

In fact this line of thinking can be linked with purity of self. From the real point of view, non-appearance of attachment and other passion in soul is non-violence and their appearance is violence. if Bhava-himsa is given up then only non-violence is really practiced. There is no violence when there is merely injury but when a person is not moved by any sort of passion. On the contrary, if one's action is performed carelessly and motivated by passions, there is violence whether there is actual killing or not, this is in brief, the view, presented by Amritcandra.

In general, under the influence of passions one's thought activity is inauspicious and vibrations around also will be similar Thus this concept can be linked with concept of meditation, leshya etc. Violence and possessiveness are the two evils and should be controlled. Instincts of aggressiveness and possession give rise to all the problems. Things can be changed by individual himself not by some super power. Spiritual exertion is required to practice self control of mind, body and speech. The necessity of giving importance to carefulness in the observance of non-violence should be emphasized so that thinking can make actual practice of non-

violence possible.

If we reflect upon the causes of violence and their nature, it is evident that we need to purify our thought activity. In order to understand this process we may discuss some of the concepts. Again it is pertinent to quote kundakunda in this context who proclaimed mental inclination that the Bhava is the cause of virtue and vice".[13] Hence cultivation of right thinking is essential. There is centrality of Ethics in Jainism not surprisingly, the Jaina culture is referred to as the Ahimsa culture. Non-violence is the basic value which in general, implies living in harmony with all beings and nature. It can bring in adaptability in modern lifestyle and may help us change the attitude. It needs not be regarded as a passive principle. Let us emphasize it's spiritual dimension which is at the same time it's practical aspect. It stands for mutual goodwill, tolerance, interdependence, vegetarianism, animal rights, giving up of negative thought. To one has to transform one's personality. One great thinker has correctly said, a religiously enlightened person is one who has liberated himself from the fetters of selfish desires. In practice, we have to adhere to the principle of non-violence which means harmlessness.

The question now is how to avoid violence? The key to understand the psychology of violence could be found in the saying that violence and non-violence are born in thoughts of a man.[14] The simple conclusion is nothing can be achieved without spiritual upliftment of individual in order to change orientation of mind.

As supplements to vow of non-violence we will discuss concepts of Kassyas or Passions.[15] Passions stimulate sinful deeds. Lord Mahavira has said " Anger, Pride deceit & greed are four powerful enemies which stimulate sinful deeds. One who desires the welfare of his self should renounce these four flaws." [16] The first necessity for living a good life is

victory over passions. Acharya Haribhadra has said in Upadeshtarangini "A person attains liberation only if he frees himself from clutches of fourdeadly passions."[17] The four passions result in individual and collective violence in thought, word and deed. Apart from their impact on individuals they cause tensions and strife in society. "Anger destroys affection & love, pride destroys humility, elicit destroys confidence, greed destroys all good qualities."[18] A person who is under the sway of passions lands himself in difficulties. So it is said "Destroy anger through calmness, overcome ego through humility, discard deceit by straightforwardness and greed by contentment"[19]

In practical life anger arouses hatred & enmity, pride leads to failure, deceit destroys amity and greed destroys everything. These four passions are to be conquered as they lead to wrong behavior. Self-control and austerity are required to overcome them.

It has been accepted today that emotions like anger, fear, anxiety play an important role in causing hypertension and other psychosomatic diseases.

Positively practice of non-violence implies practice of four kinds of virtues namely friendliness towards all living beings, joy at the sight of virtues, compassion towards afflicted and tolerance towards ill behaved.[20] This kind of mental disposition leads to action. He who conducts himself in this manner is able to practice non-violence. The idea is not that we must not enjoy life; but that enjoyment should not be of evil nature. We should not be moved away by the passions and violence. We must control ourselves so that our life can become pure and calm, the basic idea of non-violence is to control our inward nature. Performance of pratikramana is prescribed, so that the consciousness of good intention is deepened.

The pertinent question is how to bring about change in

attitude. Undoubtedly, mental inclination is important. To enjoy cruelty to be occupied with anxiety ridden mental state, thieving all these are evil inclination. Virtue depends on good inclination. In order to develop good mental inclination one has to make non-violence a way of life by practicing it in thought first. Non-violence cannot be practiced by the weak. It is not limited to act of non-killing. It can not be practiced unless we get rid of inauspicious meditation. It requires practice of equanimity or Samayika. It implies Meditation which helps in changing perverted habits. Meditation is an important means for elimination of evil thoughts and for purification of soul.

All these practices will initiate the process of attitudinal change:- There will be eradication of psychological disorders & acquisition of desirable virtues.

Obviously supreme importance is attached to Meditation. As a concentration of thought meditation covers all our thinking processes. As one can direct one's thought for an evil as well as a good purpose. Meditation is broadly classified in to two categories inauspicious and auspicious. These two categories are divided into two. Thus in all there are four kinds of Meditations.

Inauspicious Meditation

1. Ārta dhyāna (painful meditation)
2. Raudra dhyāna (Cruel meditation)
3. Dharma Chyāna (righteous meditation)
4. Shukla dhyān- (Meditation of soul)

The first two are to be abandoned. The last two need to be cultivated. Meditation has reference to our practical daily existence. Mental states constituting those different types of meditations are important. It is a process by which an individual can transform his whole life style. Inauspicious meditation has greater psychological significance. Through it, we can overcome negativities & by practice of righteous meditation can convert them into positive virtues. The

obvious benefit of dharmadhyana is relaxation, tranquility and equanimity. To get rid of harmful thoughts in jain text, meaningful concept of forgiveness is given

"Khamemi Savve Jīva, Savve Jiva Khamantu me,
Mittime me Savva bhuesu veram majjham na keṇaiam."

Capacity of Forgiveness is an important factor creating good will and amity.

Thus in practical life it is essential that aspirant shoud give up Arta and Raudra Dhyan & Practice Dharma and Shukla Dhyan. Selfishness, untruth, violent tendencies all these are dominant features of modern world which can be eliminated by proper understanding of this concept.

Righteous Concentration- Dharma dhyana is the condition of morality in this life.

The root of violence lies in human psyche. It is said in the context that Anupreksa meditation is powerful means for training our psyche. Reflection on twelve types of contemplations namely transitoriness etc. is advocated. For attaining equinimous state of mind one should do samayika.[22] The term Samayika means maintaining equainimity. It can be related to auspicious meditation. It is supplementary or disciplinary vow. The practice of samayika eliminates all sinful activities. In Niyamsara[23] it is explained as one who gives up injurious action is said to have attained equanimity. Thus it can be said to be a tensionless state of consciousness. One who observes self control, vows, austerity & who is indifferent to attachments and aversions is said to have attained equanimity. Scriptures say religion is the path to equanimity. The purpose of all scriptural practices like samayika meditation etc. is transformation of individual.

Let pure thoughts flow into the soul & make auspicious resolutions. There is outward behaviour according to internal thinking. In order to engage oneself in careful & enlightened activities of mind, speech & body, one has to

exercise self control. Right conduct can be practiced only if thoughts are transformed. Right from ancient philosophers & psychologists to Modern Jain thinkers- all have stressed importance of pure thoughts. The whole science of behavior can properly be understood by our Leshyas. There are six kind of lesya as follows:- Krisṇa, Neel, Kāpot, Tejo, Padma & Shukla.

Among These the first three are inauspicious while the last three are auspicious lesyas. Lesyas may be treated as an index of mental disposition. In Jaina literature the example of six travelers is given. The man with black leṣya intends to uproot the tree, that with blue to cut the trunk, with grey to cut the branches, that with yellow to take the twigs only, the man with pink lesya to pluck the fruit, while one who has white content to take whatever fruits have fallen on the ground. One chapter of Utaradhyaya Sutra discusses this doctrine. It will be seen that action of person having Sukla lesya is a perfect act of non-violence-harmlessness. The first three lesyas are fit to be abandoned. They indicate impure thoughts when evil thoughts decrease there is change to auspicious lesya. This can be done by conversion or change by increasing in purity of thought. Evil thoughts inspire violence, pure thoughts inspire non-violence. This is peculiar concept of the Jain metaphysical ethics."[24] It is primarily psychical, though it indicates actual transformation. By changing one's aura one can change one's life.

To conclude, Jainism has been able to survive and prosper in India upto present day because of certain noble principles and scientific doctrines. A correct appraisal of Jain tenets would reveal that Sravakācāra the rules of right conduct for householders have application to the community at large. It may be noted that the Anuvrata movement started by Acarya Tulsi is a welcome step in this direction. Non-attachment is the hallmark of Jain way of living.

One can reduce stress and strain of materialistic life by introducing the doctrine of non-violence in the process of thinking. Modern man lives at the dimensions of Artha and kama. He needs to rise to the dimension of Dhrama. Exclusive importance to material ends and pleasures may lead to miseries. Science and religion are not incompatible. Jainism does not advocate sensual suppression and physical termination as is generally misconceived. What is required is change of attitude. I have tried to develop the concept of an essentially ethically oriented world view. Non-violence, not surprisingly, is for the welfare of all beings. We may revisit legacy of lord Mahavira. He established a foral (Tirth) for the suffering humanity. His Tirth was called Sarvodaya- the welfare of all. Jaina practices have unique significance. Through them one can develop therapeutic thinking which may eradicate mental distortions such as cruelty, hatred etc. Thus though Meditative model one can annihilate the root causes of individual vices and social evils. Emancipation is here for those who have conquered the passions. The fundamental cause of joy and happiness in this world is the religion of the Jina who has conquered passions. It will provide large vision and radiate peace on the globe.

---

13. Kundakunda, Bhavpāhud 2
14. Amritcandra, purusārthsiddhyupaya, 52-53.
15. Kundakunda, Pañcāstikaya, 139
16. Dasavaikālikasūtra, 8.37
17. Haribhadra, Upadeshtaranginị 1/8
18. Umāswati, Praśamratiprakaraṇa, verse 25
19. Dasavaikālikasūtra, 8.38
20. Tattvārthsūtra, 9.31-35
21. Uttarādhyayan Sūtra, 3.35
22. Tattvārthsūtra IX, 37,38
23. Niyamsāra, 122-125, 128
24. Ācāryatulasi Jain Siddhānta Dīpika 28-29, Jain Vishva Bharati, 1995

-B-14, kakad Niketan,Derasar Lane,
Ghatakopar(E),Mumbai-400077 (Mah.)

पुण्य-स्मरण

आचार्य हस्ती की निःस्वार्थ करूणा

श्री प्रशान्त करनावट

मानव एक विलक्षण प्राणी है, जिसमें चिन्तन-मनन करने की शक्ति है। यही ऐसा प्राणी है जो स्वयं के साथ-साथ अन्य प्राणियों के सुख-दुःख को देखकर उन्हें अनुभव करता है, उनके कष्टों को देखकर अनुकम्पा के भाव से भर जाता है और यथासम्भव उन्हें कष्टों से उबारने का प्रयास भी करता है। सदियों से मानव संस्कृति इसी प्रकार पल्लवित होती आ रही है। एक व्यक्ति अपना ज्ञान, अपनी जानकारी अन्य व्यक्तियों तक पहुँचाता है ताकि वे सभी उससे लाभान्वित हो सकें और यही गुरु-शिष्य परम्परा का सौन्दर्य है।

गुरु निःस्वार्थ भाव से अन्य व्यक्तियों को जीवन बेहतर बनाने की कला सिखाते हैं। अनेक चिन्तक, अनेक साधक ऐसे हुए जिन्होंने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को समाधिपूर्वक जीवन जीने की कला सिखाई। इन्हीं विभिन्न साधकों को हम धर्मगुरु कहते हैं जो कि बिना किसी प्रतिफल की आकांक्षा के हमें अपने जीवन को सुन्दर बनाने की कला सिखाते आ रहे हैं। इस काल के प्रथम गुरु ऋषभदेव से लेकर अन्तिम तीर्थंकर महावीर तक सभी ने अपनी साधना के बल पर परम सुख प्राप्त कर लिया था, उन्हें और कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं थी। वे चाहते तो अपना शेष जीवन किसी एकान्त स्थान पर आत्म-चिंतन में लीन रहकर बिता सकते थे। परन्तु प्राणिमात्र के प्रति करुणा के भाव ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया, क्योंकि उनके मन में स्वार्थ नहीं था। ऐसा भाव ही नहीं था कि जो मैंने पा लिया है वह किसी अन्य को न मिल जाये। बल्कि वे तो चाहते थे कि जो मैंने पाया है उससे जीवमात्र लाभान्वित हो और यह परम सुख प्रत्येक जीव को प्राप्त हो- यह है निःस्वार्थ भाव।

ऐसी ही निःस्वार्थ करुणा से ओत-प्रोत थे हमारे गुरुदेव पूज्य आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.। आपने अपनी साधना व स्वाध्याय के माध्यम से जीवन की नश्वरता को ज़ाना। सांसारिक दुःखों को समाप्त कर अनन्त सुख प्राप्त करने की राह पहचानी और स्वयं उस पर आगे बढ़ चले। आप इस राह पर उस लघु उम्र में ही चल पड़े जब बालक अपने वस्त्रों, पुस्तकों आदि को भी बहुत अच्छे

तरीके से संभाल नहीं पाता है। जब पुस्तकें पढ़ने की अपेक्षा खेलने में उसकी रुचि कहीं अधिक होती है तथा जब वह संसार के प्रपंचों को भी सही ढंग से समझ नहीं पाता। उन्होंने उस बाल मन में भव-भ्रमण के गूढ़ रहस्यों को समझकर इस चक्रव्यूह से निकलने का दृढ़ निश्चय कर लिया। उसके पश्चात् गुरुदेव ने अपना जीवन किस अप्रमत्तता के साथ जिया यह हमने बचपन में देखा भी था और अनेक बार सुना व पढ़ा भी है।

आपके जीवन की विशेषता यह रही कि आपके सम्पर्क में जो भी आता, चाहे वह जैन हो अथवा अजैन, आपके मन में उसके लिये करुणा का भाव प्रवाहित होता था। ऐसा नहीं कि गुरुदेव केवल स्वयं ही धर्म-साधना के मार्ग पर आगे बढ़ते गये हों। उन्होंने शिष्यों व श्रावकों का जीवन भी यथासम्भव उच्च से उच्चतर बनाने का सदा प्रयास किया, उन्हें सांसारिक मोह के दलदल से निकालने की सदा कोशिश की। केवल स्वयं के शिष्यों पर ही नहीं, गुरुदेव की कृपा व प्रेम तो सभी पंच महाव्रतधारी संत-सतियों और अन्य श्रावक-श्राविकाओं पर भी समान रूप से बरसता था, चाहे वे किसी भी सम्प्रदाय के क्यों न हों। इसी कारण एक सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी आपका अन्य सभी सम्प्रदायों से मधुर व्यवहार था।

गुरुदेव सभी को यथासम्भव प्रमाद के त्याग का मार्ग बतलाते थे चाहे वह बच्चा हो चाहे बूढ़ा, चाहे युवा हो चाहे महिला, चाहे छात्र हो चाहे विद्वान् चाहे सेठ हो चाहे मजदूर। जैसा पात्र देखते उसी प्रकार की प्रेरणा करते, यही उनकी विशेषता थी।

आचार्य भगवन्त के प्रथम दर्शनों की धुंधली स्मृति मुझे अपने बचपन में ले जाती है जब मुझे पिताजी अपने साथ शायद उज्जैन में दर्शन कराने हेतु ले गये थे। उस समय मेरी उम्र शायद 6-7 वर्ष की रही होगी और तभी से मन में गुरु की आकृति बस गई। उसके पश्चात् तो गुरुदेव के दक्षिण प्रवास के दौरान प्रतिवर्ष आपके दर्शन करने का लाभ मिलता रहा और 1983 के जयपुर चातुर्मास से जीवन में परिवर्तन सा आ गया। सुयोग से हमारा निवास गुरुदेव के चातुर्मास स्थल से कुछ ही दूरी पर था और परिवार के हम सभी सदस्य प्रतिदिन सामायिक करने वहाँ जाते। यद्यपि हम तो अन्य सन्तों के सानिध्य में बैठते, परन्तु फिर भी गुरुदेव कभी-कभी पूछ लेते- "क्या सीख रहे हो?" और उस समय हृदय श्रद्धा भाव से उद्वेलित हो जाता और कंठ ऐसा रुंध जाता कि जल्दी से होठों से शब्द ही नहीं निकल पाते। ऐसे में वे प्यार से पास बुलाते, सिर पर हाथ फेरते और प्यार से मुझे देखते। तब पता

चलता कि इन्हें मुझ जैसे छोटे से भक्त का भी ध्यान है। आज भी यह याद करके आंखे भर आती हैं। ऐसे दयालु थे हमारे गुरुदेव जो कि एक छोटे से बालक की भावनाओं को भी समझ लेते थे।

उसके पश्चात् तो वर्ष में अनेक बार गुरुदेव के दर्शनों का लाभ मिलता। परन्तु जब बड़े-बड़े श्रावक भी गुरुदेव से अधिक बात करने का साहस नहीं कर पाते थे तो मुझ जैसे अज्ञानी बालक की तो फिर क्या बिसात थी? मैं तो जाकर केवल गुरुदेव के समक्ष चुपचाप बैठ जाता और उनके दर्शन मात्र से ही संतुष्ट रहता। परन्तु फिर वे कृपालु पूछ लेते "धर्म-ध्यान चल रहा है? सामायिक करते हो?" इतने मात्र से ही मुझे लगता कि मेरे आराध्य मुझे भूले नहीं हैं और मेरा दर्शनार्थ जाना सफल हो गया।

1990 में मेरे पिताजी के देहावसान के पश्चात् जब हम परिवार सहित गुरुदेव के दर्शन करने हेतु जोधपुर गए तब आपने बड़े ही स्नेह से मुझ बालक को संसार की अनित्यता समझाते हुए अपनी जिम्मेदारियों का बोध कराया। सम्पूर्ण परिवार को धर्म में रत रखते हुए प्रामाणिकता और सत्य के साथ जीवन निर्वाह करने का उपदेश दिया। मेरे जीवन में गुरुदेव से सबसे लम्बा वार्तालाप शायद उसी समय हुआ था। तब मुझे लगा कि 19 वर्ष की अवस्था में ही अपने पिता को खोने के बाद जिम्मेदारियाँ मेरे ऊपर आ गई हैं उनको निर्वहन करने की शक्ति आपके आशीर्वाद से मुझे मिल गईं। मैं जीवन में अकेला नहीं हूँ मेरे सिर पर मेरे गुरु का आशीर्वाद है।

उसके पश्चात् अप्रैल 1991 में समाचार आये कि गुरुदेव ने निमाज में संथारा ग्रहण कर लिया है। हम सभी स्तब्ध थे। बात करने के लिए कुछ नहीं था। केवल एक ही अभिलाषा थी कि गुरुदेव के दर्शन अतिशीघ्र करने हैं। मैं भी सपरिवार निमाज पहुँच गया। वहाँ का नज़ारा आज भी आँखों के सामने घूम जाता है। छोटा सा गाँव, दो तीन कमरों का एक छोटा सा मकान, बाहर खुला मैदान जिस पर तम्बू तान दिया गया था और चारों ओर गुरुभक्तों की भीड़। विश्वभर से भक्त अपने आराध्य के दर्शनों के लिये उमड़ रहे थे। दिन भर भक्तों का मेला लगा रहता और शाम होते-होते सभी न जाने कहाँ चले जाते। अगली सुबह फिर वही आलम। हम खुशनसीब थे कि निमाज में ही ठहरने के लिये एक कमरा मिल गया था। दिन भर में न जाने कितनी बार गुरुदेव के दर्शन करने के लिए लम्बी लाइन में लगते पर फिर भी मन नहीं भरता था। लगता था कि कुछ देर तो इन उपकारी को देखते रहें। पर

वे तो जैसे बिल्कुल निस्पृह और अनासक्त थे।

जीवन भर अपने भक्तों पर प्रेम व मैत्री की वर्षा करने वाले गुरुदेव अब सभी से दूर केवल अपने आप में रमे हुए थे। कौन आ रहा है, कौन जा रहा है, इससे कोई सरोकार नहीं। केवल अपनी आत्मा में लीन, स्व-चिन्तन में रत, समभाव से मृत्यु का वरण करने के लिए तैयार। मुखारविन्द पर मुस्कराहट, अद्वितीय तेज और एक अजीब सा आकर्षण जो दर्शनार्थियों को वहाँ रुकने के लिये बाध्य करता था। परन्तु कतार में पीछे खड़े श्रद्धालुओं के आग्रह के कारण अधिक समय रुक नहीं पाते थे। अपने आराध्य के दर्शनों से संतुष्टि का भाव सब चेहरों पर था, परन्तु मन में थी एक अनकही बेचैनी, न जाने कब आयुष्य कर्म हमारे गुरुदेव को हमसे छीनकर ले जायेगा।

और फिर वह दिन भी आ गया जब गुरुदेव इस औदारिक काया को छोड़कर समभावपूर्वक समाधिमरण को प्राप्त हुए। सभी भक्त अपने आपको बेबस महसूस कर रहे थे। उनके चेहरे मायूस थे, मानो यह कह रहे हों कि यदि हमारा बस चलता तो काल को कुछ समय के लिये रोक देते। जिन्होंने वर्षों तक हमें सन्मार्ग बताया वे ही आज हमें छोड़कर चले गये। हर व्यक्ति स्वयं को अनाथ पा रहा था।

आज गुरुदेव को हमारे बीच से गए हुए लगभग 20 वर्ष बीत गये हैं, परन्तु आज भी उनकी दमकती छवि, उनके प्रेरणादायी प्रवचन उनके उपकारी उपदेश स्मृति पटल पर अंकित हैं। लगता है जैसे कुछ समय पहले की तो बात है। साथ ही मन में एक कसक भी उठती है कि उन महापुरुष से जितना लाभ मैं उठा सकता था उतना उठा न सका। वे तो मुझ पर अपार कृपा बरसा रहे थे, पर मैं अज्ञानी उनसे जीवन के मूल्यों को ग्रहण नहीं कर सका। वे तो ज्ञान की गंगा बहा रहे थे, पर मैं उसकी बूँदभर भी जीवन में उतार नहीं सका। वे तो चरित्र के उच्चतम शिखर को छू रहे थे, किन्तु उनको देखकर भी मैं प्रेरणा नहीं पा सका। वे तो आत्मगुणों में ही लीन हो रहे थे, पर मैं पराये में ही उलझ कर रह गया। अब फिर से ध्यान जाता है उन कृपालु पर और मन को कुछ सम्बल मिलता है। आखिर वे हमारे उद्धार के लिये आचार्य हीरा को जिम्मेदारी सौंपकर गये हैं और वे भी आज उसी निःस्वार्थ करुणा के भाव से हमारा मार्गदर्शन कर मोक्षमार्ग को आलोकित कर रहे हैं। हमारे जीवन को व्यसनमुक्त बनाकर वे अणुव्रतों या महाव्रतों के माध्यम से हमारा कल्याण करने की सतत प्रेरणा दे रहे हैं।

- 8, पुष्पा पथ, उनियारा गार्डन, जयपुर (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 66)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(बकुश व प्रतिसेवना कुशील)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– बकुश और प्रतिसेवना कुशील कितने कर्मों का बन्ध, वेदन एवं उदीरणा करते हैं?

समाधान– चूंकि बकुश व प्रतिसेवना कुशील छठे-सातवें गुणस्थान वाले होते हैं, अतः वे सात अथवा आठ कर्मों का बन्ध करते हैं। जब आयु कर्म बांधते हैं तो आठ कर्मों का तथा जब आयु कर्म नहीं बान्धते हैं तो सात कर्मों का बन्ध करते हैं। वेदन अर्थात् उदय आठों ही कर्मों का रहता है। उदीरणा सात-आठ अथवा छह कर्मों की करते हैं। जब छठे गुणस्थान में होते हैं तब तीनों विकल्प मिल जाते हैं। अर्थात् छठे गुणस्थान में सात कर्मों की उदीरणा हो तो आयुष्य को छोड़कर शेष कर्मों की उदीरणा करते हैं। छह कर्मों की उदीरणा हो तो आयुष्य व वेदनीय दोनों की नहीं करते हैं। आठ कर्मों की उदीरणा में सभी कर्मों की उदीरणा होती है।

जब ये सातवें गुणस्थान में होते हैं तो आयुष्य और वेदनीय इन दोनों को छोड़कर शेष छह कर्मों की ही उदीरणा करते हैं। क्योंकि आयुष्य और वेदनीय की उदीरणा प्रमाद अवस्था में ही होती है। प्रमाद अवस्था छठे गुणस्थान तक ही रहती है।

जिज्ञासा– बकुश और प्रतिसेवना कुशील साधु अपने स्वरूप को छोड़ने पर कहाँ-कहाँ जाते हैं?

समाधान– बकुश साधु बकुशपन को छोड़ने पर या तो प्रतिसेवना कुशील बनते हैं, या कषाय कुशील बनते हैं, अथवा असंयम में जाते हैं अथवा संयमासंयम में चले जाते हैं।

इसी प्रकार प्रतिसेवना कुशील साधु प्रतिसेवना कुशील को छोड़ने पर बकुश, कषाय कुशील, असंयम, संयमासंयम इन चारों में से किसी एक अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं।

दूसरे शब्दों में कहें तो बकुश व प्रतिसेवना कुशील, ये दोनों ही अपने कृत अतिचारों, दोषों की शुद्धि करके कषाय कुशील बनते हुए निर्ग्रन्थ व स्नातक पद को प्राप्त करके उसी भव में मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं।

जिज्ञासा– बकुश और प्रतिसेवना कुशीलपना कितनी बार प्राप्त हो सकता है?

समाधान– बकुश और प्रतिसेवना कुशीलपना एक भव में कम से कम एक बार तथा अधिक से अधिक पृथक्त्व सौ बार आ सकता है। अनेक भवों की अपेक्षा जघन्य दो बार तथा उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार बार प्राप्त हो सकता है। भवों की अपेक्षा विचार करें तो अधिकतम आठ भवों में प्राप्त हो सकता है।

जिज्ञासा– उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार से तात्पर्य कितनी संख्या समझनी चाहिए?

समाधान– जैसाकि उल्लेख किया जा चुका है कि बकुश व प्रतिसेवना कुशीलपना आठ भवों से अधिक में प्राप्त नहीं होता। अतः एक भव की अपेक्षा उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ का तात्पर्य 900 मानें तो आठ भवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार की संख्या $900 \times 8 = 7200$ समझनी चाहिए।

जिज्ञासा– बकुशपना और प्रतिसेवना कुशीलपना कितने काल तक रहता है?

समाधान– बकुशपना और प्रतिसेवना कुशीलपना कम से कम एक समय तथा अधिक से अधिक देशोन पूर्वकोटि वर्ष तक रहता है। एक समय की स्थिति मरण की अपेक्षा से घटित होती है। यदि पूर्व कोटि वर्ष की आयु वाला आठ वर्ष से थोड़ी अधिक उम्र में दीक्षा ले, तो उसकी अपेक्षा से उत्कृष्ट काल देशोन (कुछ कम) पूर्वकोटि वर्ष होता है।

जिज्ञासा– बकुश व प्रतिसेवना कुशील में कौन–कौन से समुद्घात हो

सकते हैं ?

समाधान– बकुश व प्रतिसेवना कुशील में पाँच समुद्घात हो सकते हैं। यथा–1. वेदना, 2. कषाय, 3. मारणान्तिक, 4. वैक्रिय और 5. तैजस समुद्घात।

अन्तिम दो समुद्घात आहारक व केवली में नहीं होते। क्योंकि आहारक समुद्घात कषाय कुशील में तथा केवली समुद्घात केवलज्ञानी में ही होते हैं।

जिज्ञासा– बकुश और प्रतिसेवना कुशील एक समय में कितने होते हैं?

समाधान– बकुश और प्रतिसेवना कुशील प्रतिपद्यमान की अपेक्षा अर्थात् नये बनने की अपेक्षा कभी होते हैं, कभी नहीं होते। यदि होते हैं तो जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ होते हैं। पूर्व प्रतिपन्न की अपेक्षा अर्थात् पहले से बने हुए की अपेक्षा जघन्य-उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ करोड़ होते हैं।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि बकुश व प्रतिसेवना कुशील नये तो कभी बनते हैं, कभी नहीं बनते, किन्तु पुराने तो (पहले के बने हुए तो) सदैव मिलते ही हैं।

(क्रमशः)

–रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

अभिमत

श्री सुनीत कुमार जैन

जिनवाणी, मई 2011 में आदरणीय सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन के सम्पादकीय 'सद्गुणों की पूजा' पढ़कर प्रेरणा मिली कि इन्सान जीवन में शुभ कर्म करता रहे तो अपना यह लोक और अपना भविष्य सुखी बना सकता है। बहुत अच्छे आलेख के लिए आभार। डॉ. दिलीप जी धींग का आलेख 'युवा पीढ़ी को आचार्य हस्ती की प्रेरणा' युवा वर्ग के लिए जागरूकता परक रहा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

–अध्यापक, अलीगढ़-टोंक (राज.)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (12)

प्रश्न 1. कर्त्तव्य-पालन करना धर्म है। इसकी पुष्टि दशवैकालिक सूत्र से कीजिए।

उत्तर : "धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो" दशवैकालिक.1/1; कर्त्तव्य एवं अधिकार सापेक्ष शब्द हैं। यह नियम है कि जो एक का अधिकार है वह दूसरे का कर्त्तव्य होता है। इस दृष्टि से जो सभी का अधिकार है, वही हमारा कर्त्तव्य है। अब यह देखना है कि सभी जीवों का अधिकार क्या है? इसी आगम के छठे अध्ययन में कहा है- "सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं...." ।।10।। अर्थात् सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता, इसी प्रकार आचारांग सूत्र के दूसरे अध्ययन के तीसरे उद्देशक में भी कहा है-"सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया, दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीविणो-जीविउकामा सव्वेसिं जीवियं पियं" ।। अर्थात् सभी जीवों को अपना आयुष्य प्रिय है, सभी सुख के अभिलाषी हैं, दुःख सभी को प्रतिकूल है, कोई भी मृत्यु नहीं चाहता, सभी को जीवन प्रिय है। एक शब्द में कहें तो सभी को जीने का अधिकार है। अतः कर्त्तव्यनिष्ठ होकर सभी के अधिकारों की रक्षा करना और अपने अधिकार का त्याग करना ही साधक का कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म है।

सभी के जीने के अधिकार की रक्षा करना **अहिंसा** है।

अपने अधिकार का त्याग करना **संयम** है।

और अपने अधिकार की अपूर्ति को सहर्ष सहन कर लेना ही **तप** है।

अहिंसा, संयम और तप की समन्वित साधना ही धर्म है। दूसरों के अधिकार की रक्षा तभी संभव है जब साधक कर्त्तव्य परायण होकर अपने अधिकार का त्याग करेगा। अपने अधिकार का त्याग किये बिना, दूसरों के अधिकार की रक्षा नहीं हो सकती, क्योंकि अधिकार-लालसा से अकर्मण्यता पोषित होती है और हिंसात्मक प्रवृत्तियों को जन्म मिलता है। अहिंसा का पालन अधिकार-लालसा छूटे बिना नहीं हो सकता।

जहाँ अधिकार-लालसा है, वहाँ अकर्त्तव्य है, अधर्म है। जिसके करने पर कर्त्ता में करने का राग शेष रहे, वे सभी प्रवृत्तियाँ अकर्त्तव्य हैं। आवश्यक सूत्र में कहा है- **'सव्वं अकरणिज्जं पावं कम्मं'** - सभी पाप कर्म अकर्त्तव्य हैं। अकर्त्तव्य का त्याग करने पर कर्त्तव्य का पालन स्वतः होने लगता है, अतः कर्त्तव्य-पालन करना धर्म है। धर्म, जीव का स्वभाव है, जो आत्मा को अकर्त्तव्य से बचाकर, निजगुण अथवा सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र में धारण करके रखता है। कर्त्तव्य का पालन करने के लिए निर्मोहता पूर्वक दूसरों के अधिकारों की रक्षा (अहिंसा) और अपने अधिकार का त्याग (संयम) करते हुए प्राप्त परिस्थिति का सदुपयोग करना (तप) होगा।

प्रश्न 2. सभी साधनों का पर्यवसान अचाह पद में है। इसे दशवैकालिक सूत्र से सिद्ध कीजिए।

उत्तर- "कहं णु कुज्जा सामण्णं......वसंगओ।।" दशवैकालिक 2/1- इन्द्रियों के विषयों की अभिलाषा को काम कहते हैं। जो साधक काम का त्याग नहीं करते, वे अप्राप्त विषयों की प्राप्ति-रूप अशुभ अध्यवसायों के अधीन होकर पद-पद पर खेदित होते हुए कभी भी श्रमणत्व को प्राप्त नहीं कर सकते। वस्तुतः जिसका चित्त काम के संकल्प-विकल्पों से ग्रसित है, उसकी समस्त क्रियाएँ भाव-शून्य द्रव्य क्रियाएँ हैं एवं केवल द्रव्य क्रियाओं का पालन करने मात्र से कोई श्रमण नहीं हो सकता। ऐसी द्रव्य क्रियाएँ तो जीव ने अनंतबार प्राप्त कर ली, पर इससे जीव को अधिक से अधिक देव लोक ही प्राप्त हो पाया। मोक्ष की प्राप्ति तो भाव सहित क्रिया से ही सम्भव है। कहा भी है-"यस्मात् क्रियां प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः" अर्थात् भावहीन क्रियाएँ कभी भी फलवती नहीं होती। अभवी जीव भी द्रव्य क्रियाओं के आधार पर नव ग्रैवेयक तक जा सकता है, किंतु मोक्ष इससे दूर है।

"असाधन से रहित किया गया साधन, साधक को साध्य से अभिन्न नहीं कर सकता।" असाधन है, चाह-कामना-इच्छा। जब तक इच्छा है, तब तक भाव श्रमण नहीं और श्रमणत्व के बिना वीतरागता नहीं आ सकती। कहा भी है-"श्रमण कौन? (उत्तरा.1/1) "संजोगा विप्पमुक्कस्स.."।। जो संयोग से मुक्त है, निष्काम है, जिसकी कोई

कामना नहीं। आगे कहा है-"संथवं जहिज्ज अकामकामे" उत्तराध्ययन 15/1 अर्थात् जो अकाम कामी है, वही भिक्षु है। "संपाविउ कामे अणुत्तराइं" 9/1/16 अर्थात् कामना से रहित श्रेष्ठ स्थान की प्राप्ति की कामना हो कि आगामी काल में इस घट में काम न रहे।"

काम श्रामण्य का विरोधी है और यह संकल्पों को उत्पन्न करता है। संकल्पों के वशीभूत हुआ जीव पद-पद पर अपने श्रमण-भाव से शिथिल, भ्रष्ट और विचलित होकर शीघ्र ही अपना सर्वनाश कर लेता है। "**कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं**" उत्तराध्ययन 32 अर्थात् काम की आसक्ति ही दुःख है। दुःख-मुक्ति जीव की स्वाभाविक लालसा है। उसकी प्राप्ति काम-पूर्ति से नहीं, काम-मुक्ति से ही संभव है। अतः कहा गया है-"सभी साधनों का पर्यवसान अचाह पद में है, क्योंकि अचाह होने पर ही अप्रयत्न और अप्रयत्न होने पर ही साध्य से अभिन्नता प्राप्त होती है। जो जीव का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् काम-निवारण से श्रमणत्व की प्राप्ति होती है। श्रमणत्व की पराकाष्ठा यथाख्यात चारित्र में है। यथाख्यात चारित्र वाला 14 वें गुणस्थान में अयोगी अर्थात् कृत-कृत्य होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। फिर उसे कोई प्रयत्न करना शेष नहीं रहता। इसके विपरीत कामना-पूर्ति से जीवन में प्रवृत्ति है, पर प्राप्ति कुछ नहीं, कारण कि अनेक बार कामनाओं की पूर्ति होने पर भी अभाव का अभाव नहीं होता। पहले की कामना के सुख की अनुभूति से नवीन कामना पैदा होती ही रहती है। वस्तु की चाह लोभ उत्पन्न करती है। अवस्था की चाह जड़ता उत्पन्न करती है। किसी पर-वस्तु की चाह सीमित बनाती है, अथवा यों कहें कि मोह में आबद्ध करती है, जो स्वभाव से ही प्रिय नहीं है। अतः आगम वाणी कह रही है-"**कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं**" 2/5। काम के महासागर को पार करना ही निश्चय में दुःख के सागर को पार करना है। जहाँ अर्थ की चाह है, वहाँ परमात्मा पद की प्राप्ति नहीं हो सकती। कहा भी है- "जहाँ काम है, वहाँ राम नहीं.........।।" यदि अंतर में काम बसाया हुआ है, तो वहाँ राम नहीं रह सकता। काम के हटते ही संकल्प-विकल्प का अंत होता है। संकल्प-विकल्प का अंत होते ही दुःख नष्ट हो जाता है, फिर लक्ष्य

से अभिन्नता स्वतः प्राप्त हो जाती है। सच्चा आत्मार्थी साधक सदैव इन्हीं भावों से अनुप्राणित रहता है। हे प्रभो! मुझे राग का रागी नहीं बनना है, मुझे भोग का भोगी नहीं बनना है, मुझे समता का साधक और प्रभु आज्ञा का आराधक बनना है।'' काया अर्थात् कामना की यात्रा! मुक्ति और मरण में यही अंतर है-''प्राणशक्ति के रहते कामना निकल जाय, इसका नाम है **'मुक्ति'** और कामना के रहते प्राण निकल जाय, इसी का नाम है **'मरण'**।'' कामना-मुक्ति के बिना मोक्ष संभव नहीं, अतः स्पष्ट हो जाता है-''सभी साधनों का पर्यवसान अचाह पद में है। **(क्रमशः)**

49 वें दीक्षा-दिवस पर

शान्त सुधाकर मान गुरुवर

श्री धर्मचन्द जैन

(तर्ज :- मेरा जीवन.............)

शान्त सुधाकर, मान गुरुवर, ज्ञानी संयमवान।
कट जायेंगेऽऽऽ, कट जायेंगे बन्धन तेरे, करले तूं इनका ध्यान।
शान्त सुधाकर, मान गुरुवर.......।

माता छोटा जी के नन्दन, अचल जी के लाल-2,
सेठिया कुल के दिव्य सितारे, आनन्द के भण्डार-2,
हस्ती गुरु से ऽऽऽ हस्ती गुरु से दीक्षा लेकर बन गये हैं महान ।। 1 ।।
शान्त सुधाकर, मान गुरुवर.......।

रत्न संघ उपाध्याय पद पर, शोभित है गुरुराज....2,
संयम पालन की सजगता, चौथा आरा दिलाते याद....2,
संयम-तप के ऽऽऽ, संयम तप के हे प्रतिमानक, वन्दन बारम्बार ।। 2 ।।
शान्त सुधाकर, मान गुरुवर.......।

ध्यानी, मौनी, अग्लान सेवी, आत्मार्थी हैं आप....2,
सरल, विनीत, क्षमा के साधक, पुरुषार्थी हैं आप....2,
उन पचासवाँ ऽऽऽ, उनपचासवाँ दीक्षा दिवस हम, मनायें तप के साथ ।। 3 ।।
शान्त सुधाकर, मान गुरुवर.......।

जोधाणा में आप पधारे, हम सब के अहो भाग....2,
उत्तम संयम पालन करके, बनो आराधक आप....2,
गुण रत्नाकर ऽऽऽ, गुण रत्नाकर दिव्य दिवाकर, कोटिशः तुमको प्रणाम ।। 4 ।।
शान्त सुधाकर, मान गुरुवर, ज्ञानी संयमवान।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (4)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-सम्पादक

महाराज साहब,

आपका पत्र पढ़कर ऐसा लगता है कि
आप 'सत्य' को इतनी प्रधानता नहीं देते जितनी
'सम्यक्' को देते हैं।
'सत्य' का आग्रह जब 'अच्छे' का बलिदान लेता ही है तब
आप 'अच्छे' को सम्हाल लेने के विचारवाले हैं
ऐसा मुझे आपका पत्र पढ़ने के बाद महसूस हुआ।
परिणाम जब 'गलत' ही आता हो तब 'गलत' की
उपेक्षा करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए
यह आपकी मान्यता है ऐसा मुझे आपका पत्र पढ़ने के बाद समझ में आया।
यदि मेरा यह अनुमान सही है तो
''सत्य की खातिर प्राणों का बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए''
ऐसा मैं सालों से सुनता आया हूँ उसका क्या?
मैं चाहता हूँ कि आप इस विषय में कुछ अधिक मार्गदर्शन करें।

यश,

तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर में बाद में दूँगा।
पहले तुम मेरे इस प्रश्न का उत्तर दो।
मान लो कि सुबह आठ बजे तुम तम्हारे घर के ग्राउण्ड फ्लॉर की
बाल्कनी में खड़े हो और उसी समय तुम
एक गाय को दौड़ती हुई आकर तुम्हारे घर के
सामने वाली गली में घुसती हुई देखते हो।

केवल दो मिनट के बाद एक कसाई
हाथ में बड़ा पैना चाकू लेकर तुम्हारे सामने खड़ा हो जाता है और तुमसे पूछता है,
"अभी इस तरफ एक गाय आई थी वह किस ओर गई?"
कसाई के इस सवाल का यदि तुम सही जवाब देते हो तो
गाय की मौत निश्चित है।
और यदि तुम गलत जवाब देते हो तो
सत्यव्रत का भंग होता है।
ऐसी परिस्थिति में तुम क्या करोगे?
तुम्हारे हृदय की कोमलता मैं जानता हूँ
और इसीलिए बिना तुम्हें पूछे मैं कह सकता हूँ कि
तुम कसाई को सच्चा जवाब नहीं दोगे।
क्यों?
क्योंकि सत्य जवाब गाय की मौत का कारण बन जाएगा।
बस इन्हीं कारणों से हमारे यहाँ सत्यवचन को दो विशेषण दिए गए हैं।
सत्य अवश्य बोलो, लेकिन
वह सत्य प्रियकारी हो– इसका विशेष ध्यान रखो।
प्रियकारी होने के साथ वह हितकारी भी हो–इसका भी ध्यान रखो।
इसका अर्थ?
यही कि आपके द्वारा बोला जाने वाला सत्य
यदि प्रियकारी एवं हितकारी नहीं है तो ऐसा सत्य आप नहीं बोल सकते।
मैं ऐसा मानता हूँ कि
"प्राण का बलिदान देकर भी सत्य को सम्हालना ही चाहिए।"
इस विषय में तुम्हारे मन में पैदा हुए संदेह का समाधान
इस स्पष्टीकरण से हो गया होगा।
ताज़ा और अच्छा दूध, कमजोर पाचनशक्ति वाले को दिया जाए तो
उसे लाभ की बजाय हानि होने की संभावना अधिक है,
वैसे ही अपात्र व्यक्ति के समक्ष,
गलत समय पर और अनुचित संयोगों में बोला गया सत्यवचन
लाभकारक के बजाय हानिकारक सिद्ध होने की संभावना अधिक है।

पढ़ी है तुमनी किसी कवि द्वारा लिखी गई ये पंक्तियाँ?

"धन्य है वह जीभ जो
वाणी निर्मल उच्चारती है;
पाप-ताप-संताप मिटाती और
तन-मन शीतल करती है।"

संक्षिप्त में, केवल सत्योच्चारण नहीं, प्रियकारी और हितकारी वचनों का उच्चारण हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

तुम्हें और तो क्या कहूँ? केवल तीन दिन के लिए ऐसे वचनोच्चारण का प्रयोग करके देखो

विशेषरूप से बड़े भैया के साथ! और जिस परिणाम का अनुभव होगा, उससे तुम आश्चर्यचकित हो जाओगे।

महाराज साहब,

जीवन में पहली बार मुझे पता चला कि
सत्य भी यदि हितकारी है तो ही प्रशंसनीय है।
बीते हुए जीवन को दृष्टिगत करता हूँ तो स्पष्टरूप से ध्यान में आता है कि
इस मामले में मैं निश्चित ही गलती कर बैठा हूँ।
मुझे जो सत्य लगा
उसे सामने वाले को सुनाने में मैंने एक पल का भी विलम्ब नहीं किया।
मेरा सत्योच्चारण प्रियकारी था या नहीं,
हितकारी था या नहीं, इसकी न मैंने कभी परवाह की
न ही इस विषय में कभी सावधानी रखी।
आज मालूम हुआ कि बड़े-भैया के साथ मेरे सम्बन्धों में तनाव क्यों है?
उन सम्बन्धों में कड़ुवाहट क्यों पैदा हुई है?
उन सम्बन्धों में से आत्मीयता क्यों गायब हो गई है?
उनके साथ मेरे व्यवहार में रुक्षता क्यों प्रवेश कर चुकी है?
पूर्वपत्र में आपने लिखा है उसके मुताबिक केवल बड़े भैया के साथ नहीं,
बल्कि पिछले दो दिनों से यह सावधानी बरतना प्रारंभ कर दिया है।
अलबत्ता, इसमें मुझे कई परेशानियाँ आ रही हैं।
मन को मनाना पड़ता है।

अहंकार का दमन करना पड़ता है।
आग्रहवृत्ति को नियंत्रण में रखना पड़ता है।
उपेक्षा को स्वीकार करना पड़ता है।
सत्य बात की भी उपेक्षा करनी पड़ती है।
इसके बावजूद मुझे ऐसा लगता है कि धीरे-धीरे ही सही
मुझे इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।
वचनोच्चारण में सावधान रहना मेरे लिए सहज हो ही जाएगा।
विशेष रूप से, आज घर में जो पिताजी के स्थान पर हैं
उस बड़े-भैया के साथ मेरे व्यवहार में
स्निग्धता-आत्मीयता का प्रवेश होकर ही रहेगा।
घर और ऑफिस में बड़े भैया की उपस्थिति आज मुझे जिस तरह
परेशान कर रही है उसमें ठोस परिवर्तन होकर ही रहेगा।
मैं आपसे आशीर्वाद मांगता हूँ कि ऐसे सम्यक् परिणाम का अनुभव करने में
मुझे शीघ्र ही सफलता मिले।
और साथ ही यह प्रार्थना है कि उस परिणाम तक पहुँचने के लिए
जो अन्य सावधानियाँ बरतने की आवश्यकता है उस विषय में
आप मेरा मार्गदर्शन भी अवश्य करें।

यश,

मैं तुम्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूँ कि
तुम्हारे शुभ संकल्प को शीघ्र ही सफलता मिले।
गलत मार्ग से वापस लौटने के लिए तुम सत्त्व प्रकट करने हेतु
तत्पर हो इसके लिए मैं तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।
मैं चाहता हूँ कि तुम केवल आचरण को नहीं,
अंतःकरण को भी परिवर्तित कर दो।
और अंतःकरण को परिवर्तित करने के लिए वास्तविकता के मर्म तक
जाने हेतु मन को तैयार कर दो।
यह बात मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ कि-
मन परिणामप्रिय है, प्रक्रियाप्रिय है,
परंतु परमार्थप्रिय प्रायः नहीं है।

इसका अर्थ यही है कि मन सुंदर परिणाम अवश्य चाहता है।
उस सुंदर परिणाम को पाने के लिए जिस प्रक्रिया में से गुजरना आवश्यक है
उस प्रक्रिया को स्वीकार करने के लिए भी वह तैयार है, परंतु
उसके परमार्थ तक जाने के लिए वह प्रायः तैयार नहीं है।
इसका परिणाम यह आता है कि
प्रक्रिया में से गुजरने के बाद भी किसी कारणवश
अपेक्षित परिणाम का अनुभव नहीं होता तब मन उस प्रक्रिया को छोड़ने में,
उस प्रक्रिया पर अविश्वास करने में क्षण मात्र का इन्तजार नहीं करता।
संक्षिप्त में, तुम परमार्थ को समझ लो।
परमार्थ की समझ तुम्हारा अंतःकरण बदल देगी।
परिवर्तित अंतःकरण, आचरण में परिवर्तन करके
तुम्हारे चरणों में सम्यक् परिणाम का उपहार समर्पित अवश्य करेगा। **(क्रमशः)**

प्रभु महावीर का वैशिष्ट्य

श्री शंकरलाल चण्डालिया

वासुदेव श्री कृष्ण ने भयंकर विषधर कालिया नाग का उच्छेद करके संत्रस्त जनता को भयमुक्त किया था और मर्यादा पुरुषोतम राम ने रावण का विनाश करके जनता को उसके मनमाने अत्याचार और उपद्रवों से त्राण दिया था। भारत की यह पराक्रम की संस्कृति है, परोपकार की संस्कृति है। किन्तु जब श्रमण महावीर का जीवन वृत्त पढ़ते हैं तो उन्हें इस संस्कृति में एक महान संशोधन उपस्थित करते देखते हैं।

महावीर ने चंडकौशिक नाग की विष ज्वालाओं से संत्रस्त जन प्रदेश का उद्धार किया, और शूल पाणि यक्ष के लोमहर्षक उपद्रवों से ग्रस्त जन-जीवन को भयमुक्त किया, किन्तु न उन्होंने चंडकौशिक का दमन किया और न शूलपाणि का विनाश ही।

विषधर को करुणा से संस्कारित करके शान्त करना और उपद्रवी यक्ष को धैर्य और प्रेम से पराजित करके सन्मार्ग पर प्रवृत्त करना महावीर का एक नवीन प्रयोग है- जिसमें पराक्रम और परोपकार के साथ सर्व मंगल का सुन्दर समन्वय है।

-अध्यक्ष, श्री महावीर स्वाध्याय केन्द्र,
कुवारिया, जिला-राजसमन्द-313327 (राज.)

जीवन-व्यवहार

गणित के सवाल नहीं होते रिश्ते

श्री राजकुमार जैन

हमारे एक मित्र बेचारे बेहद परेशान और तनावग्रस्त रहते हैं। उनकी मुख्य समस्या यह है कि वे सभी के लिए इतना कुछ करते हैं, बदले में उनके वास्ते कोई कुछ नहीं करता। उनकी शिकायत के दायरे में मित्र, रिश्तेदार और परिचित-भर नहीं हैं, बल्कि अपनी पत्नी और बच्चों तक से उनकी अपेक्षा रहती है कि वे उनके लिए रात-दिन एक करते हैं, इतना उनका ध्यान रखते हैं, मगर वे लोग उनके लिए कुछ नहीं करते। दरअसल, ऐसे लोगों के लिए यह समझना कितना दूभर कार्य है कि जिंदगी या रिश्ते गणित के सवाल नहीं होते। आखिर किसी की थोड़ी-सी मदद इसलिए क्यों की जाए कि वह बदले में कुछ करेगा ही। क्यों हम मन को इतना पाक-साफ नहीं रख पाते कि किसी के प्रति किये गये अपने योगदान को याद ही न रखें।

आखिर इंसान एक सामाजिक प्राणी है, एक-दूसरे की कब किसको जरूरत पड़ जाए, कहा थोड़े ही जा सकता है। किसी की मदद करने के बाद उस बोझ को दिमाग पर अर्से तक लादे रहने से बेहतर क्या यह नहीं होगा कि हम उसकी कोई मदद करें ही नहीं।

वैसे भी किसी की थोड़ी-बहुत मदद करने के बाद उसे इस बात के लिए लम्बे अर्से तक जलील करते रहना एक नीचतापूर्ण कार्य ही तो है, जिसे कोई पसंद नहीं करेगा। बड़ी भूल यह होती है कि व्यक्ति चाहता है कि मैंने जिसकी मदद की वही पुनः मेरी मदद करे। क्या यह जरूरी है कि सहायता उसी व्यक्ति द्वारा हो, अन्य व्यक्ति से भी आपको मदद मिल सकती है। अतः निरपेक्ष भाव से की गई सहायता का फल अन्य रूप में भी मिल जाता है।

कितना बेहतर हो कि हम और कुछ बनने से पहले एक बेहतर इंसान बनें। एक ऐसा इंसान, जो अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को दिल से चाहे और उनके लिए कुछ भी करने को तत्पर रहे। किसी के लिए कुछ कर देने से बड़ा कोई सुख नहीं होता। काश! स्वार्थी लोग उस सुख की अनुभूति कर पाते। मगर अपनी संकुचित मानसिकता के चलते प्रायः वह इस सुख से वंचित ही रहते हैं।

रिश्तों की मधुरता एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना से कायम रहती है। आखिर उन रिश्तों का क्या अर्थ है, जहाँ सब कुछ स्वार्थ पर आधारित हो। स्वार्थ से ऊपर उठकर देखें तो बेहद सुकून मिलेगा। स्वार्थी स्वभाव के कारण व्यक्ति खराब समय में अलग-थलग हो जाता है।

-राज स्टेशनर्स, पचपहाड़ रोड़, भवानी मण्डी-326502 (राज.)

चिन्तन

मोक्ष मार्ग में प्रविष्ट भ्रष्टाचार कैसे दूर हो?

श्री जशकरण डागा

संसार मार्ग एवं मोक्ष मार्ग में अनादि से अल्पाधिक भ्रष्टाचार सदा रहता है। मोक्ष (अध्यात्म) मार्ग में भ्रष्टाचार क्या है, उसका स्वरूप क्या है, और वह कैसे दूर हो? इसे समझने हेतु पूर्व में संसार मार्ग में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं उसके निवारण की प्रक्रिया को संक्षेप में समझना आवश्यक है। भौतिकवाद के इस युग में भ्रष्टाचार (विशेषकर भारत में) आज चरम सीमा पर है। सरकारी तंत्र में नीचे के स्तर पर चपरासी से ऊपर के स्तर पर मंत्रियों तक प्रायः ईमानदार, सत्यनिष्ठा से काम करने वाले कम हैं। इसमें सुधार करना हो तो, इसकी नीति क्या होनी चाहिए? जहाँ भ्रष्टाचार सभी स्तर पर फैल चुका हो वहाँ सुधार की नीति क्या हो? इस हेतु सुधार का प्रारम्भ नीचे के स्तर से हो या ऊपर के स्तर से? इसे एक दृष्टान्त से समझा जाना चाहिए। एक बड़ी कम्पनी के मालिक ने घाटे से उभरने के लिए अपनी कम्पनी में फैले भ्रष्टाचार को सुधारने हेतु वहाँ के एम.डी. (जनरल मैनेजर) को निकाल दिया। इस पर कम्पनी के कर्मचारियों में घबराहट फैल गई और पचास प्रतिशत भ्रष्टाचार स्वतः कम हो गया। तदनन्तर कम्पनी मालिक ने अलग-अलग शालाओं में कार्यरत भ्रष्ट अधिकारियों की भी छुट्टी कर दी। इससे कम्पनी में भ्रष्टाचार प्रायः समाप्त हो गया और कम्पनी की साख नहीं होने से उसका व्यापार खूब बढ़ गया और घाटे के बजाय कम्पनी लाभ में चलने लगी।

इसी प्रकार राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री भ्रष्टाचार उन्मूलन के कठोर नियम बना राजतंत्र में रहे भ्रष्टाचार को मिटाने हेतु कुछ प्रमुख भ्रष्ट मंत्रियों को निष्कासित कर दे, तो राजतंत्र में भी सुधार आ सकता है। इस सम्बन्ध में हाल ही में देशभक्त अन्ना हजारे एवं योग गुरु बाबा रामदेव द्वारा किए गए प्रयास भी प्रशंसनीय है।

अब यहाँ मोक्ष मार्ग और उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार के स्वरूप तथा उसके उन्मूलन पर प्रकाश डाला जाता है। मोक्षमार्ग रत्नत्रय, ज्ञान दर्शनचारित्र रूप है। मोक्षमार्ग की अधिष्ठायक हमारी आत्मा, राष्ट्रपति है और मन प्रधानमंत्री है। इनसे अधीनस्थ हमारा शरीर, इन्द्रियाँ एवं अंगोपांग है। मिथ्यात्व, अव्रत,

कषाय, प्रमाद व अशुभ योग ये मुख्य भ्रष्ट अधिकारी हैं। जिन्होंने अठारह पाप आदि भ्रष्ट कर्मचारियों के द्वारा अपना जाल फैलाकर आत्मा के अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अव्याबाध सुख, क्षायिक वीतरागत्व, अमरत्व, अमूर्तित्व, अगुरुलघुत्व व अनन्त शक्ति एवं मुख्य आठ गुणों को लूटकर परमात्मास्वरूप आत्मा को कंगाल बना दिया है। अब यह आत्मगुणों को भ्रष्ट करने वाले कैसे नष्ट किए जाए? इसके लिए सर्वप्रथम इन सभी भ्रष्टाचारियों के प्रमुख सरदार मिथ्यात्व को नष्ट किया जाए। फिर क्रमशः अव्रत, प्रमाद, कषाय एवं अशुभ योग रूप भ्रष्ट अधिनायकों को नष्ट किया जावे। इनके नष्ट होने पर अन्य सभी भ्रष्टाचारी (दुर्गुण) जो इनके अधीन कार्यरत हैं, जैसे अनैतिकता, बेईमानी आदि स्वतः आत्मा से विलग हो जायेंगे। इन प्रमुख पाँच भ्रष्ट अधिनायकों को दूर करने के लिए क्रमशः सम्यक्त्व, विरति, अप्रमत्तता, वीतरागता एवं शुभ योगों को अपनाएँ। इन आत्मा के गुणों को प्रकट करने की प्रक्रिया को भी ध्यान में लेने की परम आवश्यकता है, जो संक्षेप में यहाँ दी जा रही है।

प्रथम सम्यक्त्व को प्रकट करने के लिए अनन्तानुबंधी (तीव्रतम) कषाय, क्रोध, मान, माया एवं लोभ की चाण्डाल चौकड़ी को तथा दर्शनात्रिक्-मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय एवं सम्यक्त्व मोहनीय, इन कुल सात प्रकृतियों पर विजय प्राप्त की जाय। फिर विरति को प्रकट करने के लिए श्रावक के बारह व्रतों को ग्रहण किया जाये। तदनन्तर अप्रमत्तता जीवन में प्राप्त हो, इस हेतु मद, विषय, कषाय, निद्रा व विकथा का त्याग कर जीवन को संयमित किया जाय। इसके बाद 'वीतरागत्व' प्राप्ति हेतु चारों कषाय-क्रोध, मान, माया व लोभ को सर्वथा छोड़ने का प्रयत्न किया जाता है। अंत में अशुभ योग की निवृत्ति हेतु मन, वचन व काया के तीनों योगों को शुभ (प्रशान्त) प्रवृत्ति में लगाया जावे।

उपर्युक्त प्रकार से आत्मा को पतित करने वाले पाँचों भ्रष्ट अधिकारियों (दुर्गुणों के सरदारों) को जो मोक्ष मार्ग को अवरुद्ध किए हुए हैं, सर्वथा हटा (त्याग) देने पर सभी अन्य दुर्गुणकर्म आवरण दूर हो, आत्मा का शुद्ध परमात्म स्वरूप प्रगट हो जाता है।

यही मोक्ष मार्ग में प्रविष्ट भ्रष्टाचार को मिटाकर मोक्ष प्राप्ति का राजमार्ग है।

-डागा सदन, संघपुरा, टोंक-304001 (राज.)

नारी-स्तम्भ

घर को बनाएं संस्कारशाला

डॉ. शैलजा अरोड़ा

बच्चे गीली मिट्टी के समान होते हैं, अतः माता-पिता एवं अभिभावकों का यह सहज एवं प्रमुख दायित्व बनता है कि वे बच्चों को एक कुशल कुम्भकार की भांति सुन्दर कलाकृति में परिवर्तित करें। लेकिन हम देखते हैं कि घर-परिवार व समाज में ठीक इसके विपरीत ही घटित हो रहा है। नन्हें-मुन्ने तो अपने सपनों की दुनियाँ में मस्त हैं, और माता-पिता को इसकी लेशमात्र चिंता भी नहीं है कि उनके बच्चे धर्म, सभ्यता-संस्कृति से दिनों-दिन दूर होते जा रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता और विचारों से रंगे-पुते माता-पिता एवं अभिभावक स्वयं अपने बच्चों को 'सुपर' और 'तथाकथित मॉडर्न किड' बनाने में व्यस्त हैं। वास्तविकता यह है कि स्वयं माता-पिता यह चाहते हैं कि उनका सुपुत्र बड़ा होकर संस्कारवान चाहे हो न हो, परन्तु उनके पास बैंक बैलेंस और सुख-सुविधाओं का अम्बार अवश्य होना चाहिए। उन्हें लगता है कि कार-कोठी-बंगले के बिना हमारे शहजादे का जीवन निरर्थक होगा, सुखदायी नहीं होगा।

वस्तुतः प्रत्येक बच्चे के लिए घर ही प्रथम संस्कारशाला होती है। बच्चा अपने घर-बाहर के वातावरण में जो कुछ भी घटित होता देखता व सुनता है वही उसके संस्कारों के निर्माण का आधार बनता है और उसे ही सभ्यता व संस्कृति का प्रथम अध्याय कहा जा सकता है। बच्चा जिस तरह के वातावरण में पलता-बढ़ता है भविष्य में उसी के अनुरूप उसके चरित्र का निर्माण होता है। आधुनिकतावादी, भोगवादी और धन कमाने की अंधी तथा अंतहीन दौड़ में व्यस्त हमारा घर-परिवार और समूचा समाज धीरे-धीरे संस्कारों को तिलांजलि दे रहा है। गिने-चुने संस्कारी परिवारों के अलावा अधिकांश परिवार उच्च संस्कारों का अंतिम संस्कार कर चुके हैं। वर्तमान पीढ़ी आधुनिक सोच और विचारों से लबरेज सपनों की ऊँची उड़ान भर रही है और संस्कारों के रख-रखाव के लिए उसके पास समय ही नहीं है। ऐसी स्थिति में बच्चे किस प्रकार संस्कारी होंगे यह अहम् प्रश्न सारे समाज और राष्ट्र के समक्ष मुँह बायें खड़ा है। संस्कारविहीन परिवार और समाज में पलने-बढ़ने वाले बच्चे भविष्य में कैसे नागरिक बनकर निकलेंगे उसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, क्योंकि जैसा बोयेंगे वैसा ही तो काटेंगे। अतः "बोया पेड

बबूल का, आम कहाँ ते होय'' वाली कहावत ही चरितार्थ होगी, इसमें संदेह नहीं।

सनातन सभ्यता-संस्कृति वाले हमारे महान राष्ट्र में आज आधुनिकता और पश्चिमीकरण की लहर इतनी तीव्र गति से बह रही है कि उसकी चपेट में सारा समाज बहता हुआ दिखाई दे रहा है। न जाने क्यों हमारी सोच ऐसी बन गई है कि हम दकियानूसी हैं, पिछड़े हैं, हमारे विचार बौने हैं, हमारा चिंतन लघु है, हमारा ज्ञान अल्प है। अनादिकाल से ऋषियों-मुनियों द्वारा सिंचित हमारी प्रज्ञा, विश्वगुरु की उपाधि से विभूषित हमारी विचारशैली न जाने कहाँ लुप्तप्रायः हो गई है। इस सोच के चलते माता-पिता व अभिभावकों के मन में यह डर घर करता जा रहा है कि इस प्रतियोगी और मॉडर्न युग में उनका बच्चा कहीं पिछड़ न जाए। बाजारवादी दृष्टिकोण से यह परिवर्तन आया है जो सर्वथा अनुचित है। निःसंदेह हमारा ज्ञान, चिंतन और प्रज्ञा जो वेद-उपनिषद्-गीता जैसे विश्व के प्राचीनतम सर्वश्रेष्ठ धर्मग्रन्थों पर आधारित है, किसी भी मायने में कम नहीं है। हमें विश्व से यह पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है कि क्या अच्छा है और क्या अच्छा नहीं है, अपितु सम्पूर्ण जगत आज भी हमारे मनीषियों के द्वारा बताए मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास कर रहा है। हमारे संस्कार, रीति-रिवाज, भाषा, खान-पान, रहन-सहन सब कुछ हजारों वर्षों के शोध और चिंतन का सुपरिणाम है। बाजारवादी शक्तियाँ और आधुनिकता के पैरोकार बाजार में अपना माल बेचने के लिए हमें भ्रमित कर रहे हैं, जिनसे हमें सावधान रहने की अतीव आवश्यकता है।

आज आधुनिक सुख-सुविधाओं और साधनों को बटोरने की आपाधापी में माता-पिता व अभिभावकों के पास इतना समय नहीं बचता है कि वे अपनी संतानों को संस्कारित कर पाएँ। माता-पिता को यह चिंता तो अवश्य सताती है कि उनके बच्चे शहर के किसी नामी व महंगे अंग्रेजी विद्यालय में पढ़ें, लेकिन इस बात की परवाह कोई नहीं करता कि उनका दुलारा वहाँ जाकर क्या सीख रहा है। आज समाज में जीवन जीने के प्रतिमान बदल रहे हैं। अब बच्चे संस्कारित होने के लिए नहीं, बल्कि धन कमाने के गुर सीखने के लिए पढ़ते हैं। विद्यालय महज पेट भरने का माध्यम बन गए हैं। धन कमाने की इच्छा से खुले शिक्षा के तथाकथित आधुनिक मन्दिरों और उनके पुजारियों के पास किसी को संस्कारित करने का समय ही नहीं है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की पढ़ाई के नाम पर जो खानापूर्ति की जाती है, उसकी सच्चाई किसी से छिपी नहीं है। ऐसे संस्कारहीन वातावरण में पले-बढ़े बच्चों के भीतर आसुरी प्रवृत्तियों की भावना ही

प्रबल होगी। यह भी सच है कि आने वाले समय में इसी पीढ़ी के हाथों में हमारे समाज और राष्ट्र की बागडोर भी होगी। ऐसे में हमारे समाज व राष्ट्र का भविष्य कैसा होगा, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

देश में संयुक्त परिवारों का बिखरना लगातार जारी है और एकल परिवारों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। यह शुभ संकेत नहीं है। एकल परिवारों में पलने-बढ़ने वाले बच्चे अपना अधिकांश समय टी.वी. कम्प्यूटर या वीडियो गेम्स के साथ ही बिताते हैं। जब घर में कोई समझाने बुझाने वाला न हो तो बच्चे मनमुताबिक टी.वी. कार्यक्रमों का चुनाव करते हैं और उन्हीं में रमे रहते हैं। इससे बच्चे की तार्किक क्षमता तो घटती ही है साथ ही स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। टी.वी. चैनलों पर विदेशी भाषा के डब किए हुए कार्यक्रम सारे दिन प्रसारित होते रहते हैं जिनकी भाषा शैली अशिष्टता और फूहड़ता से भरी होती है। इन कार्यक्रमों को देखकर बच्चे तोते की तरह बोलने तो लगते हैं, पर वे बोल क्या रहे हैं, इसका उन्हें आभास और ज्ञान नहीं होता है। आजकल टी.वी. और कम्प्यूटर बच्चों की मजबूरी भी बन गया है। जब घर या आस-पड़ौस में उनका कोई संगी-साथी नहीं है तो वे अपना समय किसके साथ बिताएँ। वहीं माता-पिता भी अपना पीछा छुड़ाने के लिए बच्चे को स्वयं ही टी.वी. लगाकर दे देते हैं। ऐसे में बच्चे वही सीखेंगे जो वे देख और सुन रहे हैं। व्यस्तता के चलते माता-पिता के पास बच्चों के लिए समय ही नहीं है। यही सबसे बड़ी त्रासदी है।

आज अधिकतर अभिभावक अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के फेर में बच्चों की घोर उपेक्षा कर रहे हैं। परिणामस्वरूप बच्चे जिद्दी, अनुशासनहीन, अकर्मण्य एवं सुख-सुविधा के भोगी बनते जा रहे हैं। बच्चों में संस्कारों का अभाव बढ़ता जा रहा है। अधिकतर घरों में बच्चों को अपने सगे-सम्बन्धियों की जानकारी तक नहीं होती है। संयुक्त परिवारों में दादा-दादी या घर का कोई अन्य बड़ा सदस्य बच्चों को महापुरुषों एवं देश-भक्ति व ईश-भक्ति के किस्से-कहानियाँ सुनाते-सुनाते संस्कारों, रीति-रिवाजों, नाते-रिश्तों की मीठी चटनी चटा दिया करते थे, पर अब एकल परिवार वाले घरों में यह काम करने वाला कोई नहीं है। जब माता-पिता दोनों ही धन कमाने की मशीन बन गए हों और बच्चों को क्रेच के हवाले कर दिया गया हो तो संस्कारों की बात तो बेमानी ही होगी। इस बात का एहसास तब होता है जब माँ-बाप प्रौढ़ावस्था में पहुँच जाते हैं और बच्चे उनकी परवाह नहीं करते। तब उनके पास सिर पीटने के अलावा कोई चारा नहीं रहता।

बदलते परिवेश में बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और चरित्र पर आधुनिक सोच और समझ का जो दुष्प्रभाव पड़ रहा है वह भविष्य की भयावह तस्वीर ही प्रस्तुत करता है। वे अपनी परिष्कृत सभ्यता और संस्कृति से छिटकते जा रहे हैं। समय के साथ चलने, बदलने और कुछ नया सीखने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन इस प्रक्रिया में अपने जीवन-मूल्यों को तो संजोये रखना ही होगा। सत्य, सदाचार, अहिंसा, ईमानदारी जैसे नैतिक जीवन मूल्य तो नींव के पत्थर हैं जिन पर जीवन का पूरा भवन खड़ा होता है। यदि नींव ही कमजोर होगी तो ऊपर के ढांचे को धराशायी होने में समय नहीं लगेगा। वास्तविकता यह है कि हम ही बढ़ती हुई संस्कारहीनता के लिए उत्तरदायी हैं। आज हम सबने मिलकर संस्कारों के महत्त्व को नकारने का बीड़ा उठा रखा है और दोष बच्चों पर मढ़ा जा रहा है। धन और पदार्थ ही हमारे जीवन के मानक बन गए हैं, जिसका प्रभाव बच्चों पर परिलक्षित हुए बिना नहीं रह सकता। आज घर, परिवार, पाठशाला और समाज में बच्चों को सभ्यता, धर्म एवं संस्कृति की घुट्टी पिलाने वाला कोई नहीं है। समय रहते माता-पिता और अभिभावकों तथा शिक्षा के प्रदाताओं-पैराकारों को अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी से निभाना होगा, घर व पाठशाला को संस्कारशाला बनाना होगा अन्यथा पछताने के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगेगा। हमें इस बात को समझना होगा कि शिक्षण संस्थान केवल धनार्जन की विद्या सिखाने के लिए ही नहीं हैं, वरन् उनका उद्देश्य बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। तभी हमें भविष्य में सच्चे, ईमानदार, आदर्श, संस्कारवान, परिश्रमी और अनुशासित नागरिक, शासक और प्रशासक मिल पायेंगे तथा हम सबका और राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित हाथों में होगा। इसके बिना हमें भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार, घपले-घोटालों के संसार से मुक्ति नहीं मिल सकती। उच्च जीवन मूल्यों और सुसंस्कारों से सम्पन्न समाज ही आपराधिक वृत्तियों का सफाया कर सकता है, जैसे कि प्रकाश के आते ही अंधेरा भाग खड़ा होता है। हम गंतव्य तक तभी पहुँच सकते हैं जब हम सही मार्ग पर चल रहे होते हैं। स्वस्थ, सुन्दर और अपराधविहीन समाज की स्थापना के लिए उच्च जीवनमूल्यों व संस्कारों का निर्माण आज की महती आवश्यकता है, इसका कोई विकल्प नहीं हो सकता। एक-दूसरे पर छींटाकशी व दोषारोपण समस्या का समाधान नहीं है।

-4/114, एस.एफ.एस., अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

युवा-स्तम्भ

समाज की दिशा और दशा का बदलाव

श्री उत्तमचन्द डागा

आज हमें समाज की दशा और दिशा बदलनी है तो सर्वप्रथम व्यक्ति को स्वयं बदलना होगा। जब तक व्यक्ति की स्वयं की मानसिकता में बदलाव नहीं होता, समाज सुधार की बातें निरर्थक है। व्यक्ति में दूसरे के प्रति करुणा और मैत्री की भावना का प्रादुर्भाव नहीं होगा तब तक परिवर्तन संभव नहीं है। समाज सुधार की यह पहली सीढ़ी है। गणधर गौतम की जिज्ञासा का समाधान करते हुए प्रभु महावीर ने पूजा के शब्दों का रहस्योद्घाटन करते हुए कहा- "गौतम! मेरी पूजा, अर्चना की अपेक्षा ग्लान की सेवा श्रेष्ठ है।"

सेवा का पहला क्रम परिवार से प्रारम्भ होता है। उसके बाद ही संघ, समाज, राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य जागृत होता है। आज परिवारों में आमतौर से देखा जाता है कि बड़े बुजुर्गों की क्या हालत है। वे उपेक्षा-अपेक्षा के भावों में जीते हैं। यह सत्य है कि जो आज जवान सशक्त है, कल वह भी उस अवस्था में निश्चित रूप से आएगा तब उसके बच्चे उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे, यह सब संस्कारों पर आधारित है। जैसा व्यक्ति बीजारोपण करेगा वैसा ही फल देगा। क्या हम नई पीढ़ी को सुसंस्कारित कर रहे हैं?

आज हम चारों ओर दृष्टि डालें तो देखेंगे कि समाज में असमानता की खाइयाँ बढ़ती जा रही हैं। हर व्यक्ति भौतिकवाद की चकाचौंध में इस तरह अपने को प्रस्तुत करना चाहता है कि जिससे लगे कि वही श्रेष्ठ व्यक्ति है। शादी विवाह के अवसरों पर पैसे का प्रदर्शन क्या हम नहीं देख पा रहे हैं। निश्चित रूप से अभावों में जीने वालों के लिये यह गहरा आघात जैसा है। उसे ऐसा लगता है कि वह धन-बल के आगे बौना होता जा रहा है। ऐसा नहीं है कि इस ओर समाज सुधार के प्रयास नहीं हुए हैं, पर कुछ लोग सम्प्रदायों, पंथों और ग्रंथों की दुहाई देकर एक दूसरे को असफल ही नहीं नीचा दिखाकर सुधार की बातों का सरेआम मज़ाक बनाने में अग्रसर हैं। उनको लगता है कि अमुक संगठन कैसे समाज सुधार का प्रयास कर आगे बढ़ जाए, हमारा नाम तो उसमें है नहीं, बस

उनके प्रयासों को येन-केन असफल बनाने में अग्रणी बन जाते हैं। इस सबके पीछे मात्र एक बात है अपना झूठा अहंकार। पर इस तरह समाज की दशा और दिशा बदलने के प्रयास तो धूमिल पड़ जाते हैं।

भगवान महावीर के अपरिग्रह के सिद्धान्त की चर्चा करेंगे तो पायेंगे कि सभी सीमाओं को लांघकर अपरिग्रह के मूल सिद्धान्त की घोर उपेक्षा हो रही है। अनन्त इच्छाओं की पूर्ति के लिये धन, सम्पत्ति, भोग-सामग्री का आसक्तिपूर्वक ग्रहण परिग्रह कहलाता है। भोग-सामग्रियों का आसक्तिपूर्ण परिग्रहण और संग्रह की मानसिकता व्यक्ति और समाज दोनों के लिये एक समस्या है। अग्नि शिखा के समान जलती हुई ये इच्छाएँ पतंगे के समान मनुष्य को आकर्षित करती हैं। आज के असमानता के दौर का मुख्य कारण है कि हमने अपनी इच्छाओं को बहुत बढ़ा लिया है। इससे मुक्ति पाने का एक ही मार्ग है और वह है उपभोक्ता संस्कृति के मोह का परित्याग और इच्छाओं का परिसीमन। इसके लिए अपरिग्रह का मार्ग अपनाना आवश्यक है। अतः एक संवेदनशील कल्याणकारी समाज के लिए अपरिग्रह की संस्कृति अनिवार्य है। समतापूर्ण समाज की यही आधारशिला है।

जैन धर्म में गुणों की पूजा है व्यक्ति की नहीं, पर वर्तमान में परिदृश्य अलग ही दिखाई देता है। दिगम्बर-श्वेताम्बर, तेरापंथी, बीसपंथी, स्थानकवासी आदि सभी सम्प्रदायों में व्यक्तिवाद जमकर हावी है। जो सामने दिख रहा है बस वही भगवान है। आज तो ऐसा लगता है तीर्थंकरों का नाम भी मजबूरी में लेना पड़ता है। आज तीर्थंकरों के फोटो के ऊपर गुरुओं के फोटो ने स्थान ले लिया है। हर पंथ, सम्प्रदाय और गुरु तथा पण्डित स्वयं को सम्यक् दृष्टि और अन्य को मिथ्या दृष्टि सिद्ध करने पर तुले हैं। हम चाहे कुछ भी कहें सारांश यह है कि भगवान गौण हो गये हैं और भक्त मुख्य। भगवान के नाम पर भी भक्तों की ही पूजा हो रही है। आत्म-प्रशंसा और आत्म-विज्ञापन का नशा कभी भी, कहीं भी कुछ भी करवा सकता है। स्वार्थ की इस दुनिया में हम वीतरागियों से धन मांग रहे हैं।

आज हम अपने समाज के क्रिया-कलापों पर नजर डालें तो पायेंगे कि हम पंथ और सम्प्रदाय के घेरों में जकड़े हुए हैं। दूसरी तरफ एक ही स्थान पर

मन्दिर और स्थानक बन रहे हैं, पर कट्टरवाद की संकीर्ण विचारधारा ज्यों की त्यों खड़ी है। बात किसी सम्प्रदाय या गच्छ की नहीं है, पर जीवन जीने के दो पहलू क्यों दिखाई पड़ रहे हैं? कारण स्पष्ट है मन की अवधारणाएँ अब तक भी नहीं बदली हैं। जहाँ वास्तविक धर्म है वहाँ कट्टरवाद, गच्छवाद, पंथवाद को स्थान नहीं। वहाँ तो मात्र एक विशुद्ध जैन धर्म है। अगर हम परस्पर अलगाव, नफरत, रागद्वेष को हवा देंगे तो क्या धर्मस्थानों का वातावरण शुद्ध रह सकेगा? क्या ऐसी बातों से समाज का विकास हो सकता है? ये धर्म स्थल पवित्रता, अनेकता में एकता के प्रतीक हैं, इन्हें दूषित बनाने का उपक्रम सभी को छोड़ना होगा, तभी समाज को नई दिशा मिलेगी।

आज संयुक्त परिवार क्यों बिखर रहे हैं, कारण है अपने-पराये की भावना एवं अहंकार का प्रादुर्भाव। आज परस्पर स्वार्थों के कारण प्रेम, करुणा का निर्झर सूखता जा रहा है। जहाँ आर्थिक अभाव है वहाँ तो ठीक है, पर जहाँ बहुत सम्पन्नता है, वहाँ पर भी परिवार का वातावरण अशान्त है, कारण है व्यक्ति का अहंकार।

समाज की दिशा और दशा तभी बदली जा सकेगी जब वास्तव में जैन धर्म को अपनायेंगे। ऊपर-ऊपर तैरने से कुछ प्राप्त होने वाला नहीं। गहराई में गोता लगाकर ही सच्चा मोती प्राप्त किया जा सकता है। ऊपरी लहरों को गिनने से रेत में लकीर खींचना जैसा होगा। समाज की दशा और दिशा तभी सुधरेगी जब हम अपने अन्तर्मन से सच्चाई को स्वीकार करेंगे तथा जैन धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों अंहिसा, अपरिग्रह को जीवन में वास्तविक रूप में अपनाने का संकल्प लेंगे। हमारा महावीर एक है, नवकार महामंत्र एक है, परस्पर परिवारों में एक डोर से कहीं न कहीं सब जुड़े हुए हैं, फिर समाज को बदलने के लिए नई दिशा और नया चिन्तन देकर सद्भावना, करुणा एवं मैत्री की अजस्र धारा को जीवन में प्रवाहित करने का संकल्प लेना होगा। तभी हम सफलता के शिखर को छूने लायक बन सकेंगे।

धर्म से जुड़ा रहे, संगठित रहे सजाम हमाज।
हम महावीर के पंथ के हैं, परस्पर प्रेम का रिश्ता बना रहे हमारा।

-4/221, जवाहर नगर, जयपुर-302004 (राज.)

बाल-स्तम्भ

शान्ति का रहस्य

आचार्य आनन्द ऋषि जी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जुलाई 2011 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक बार सन्त एकनाथ के पास एक व्यक्ति आया और बोला- 'भगवन्! आपका जीवन कितना शान्त और चिन्तारहित है। हम तो सदा कषायों से ग्रस्त, अशान्त और चिन्तित ही बने रहते हैं। कृपया कोई ऐसा उपाय बताइए, जिससे मैं भी आपके समान निश्चिन्त और शांत जीवन बिता सकूँ।'

एकनाथ ने कहा- 'वह उपाय तो मैं फिर बताऊँगा, आज तो इतना बता देता हूँ कि आज से आठवें दिन तेरी मृत्यु हो जाएगी।'

यह सुनते ही वह व्यक्ति बहुत घबराया और महात्माजी को नमस्कार करके भागता हुआ अपने घर आ गया। घर पर कुछ देर विचारमग्न बना रहा, फिर जल्दी से अपने पड़ोसियों के यहाँ गया। उनमें से जिसके साथ भी उसकी दुश्मनी या द्वेष भाव था, उससे क्षमा माँगी तथा वैरभाव मिटाकर स्नेह-सम्बन्ध कायम किया। ऐसा ही उसने गाँव के अन्य व्यक्तियों के साथ किया, जिन-जिन से भी वह समय-समय पर लड़-झगड़ चुका था।

घर पर आकर उसने पत्नी से भी कहा- ''मैंने कई बार तुम्हें कड़वे वचन कहे हैं, मारा-पीटा भी है और छल करने से भी नहीं चूका, पर आज तुमसे अपने समस्त अपराधों के लिए क्षमा माँगता हूँ, मुझे माफ कर देना।'

इस प्रकार सबसे क्षमा माँग लेने के पश्चात् उसे लगा कि मेरे दिल का बड़ा भारी बोझ कम हो गया है। अब उसने बड़ी शान्ति से परमात्मा का स्मरण और जो कुछ भी शुभ क्रियाएँ कर सकता था, करना प्रारम्भ किया। इसी प्रकार आठ दिन बीतने को आए और उसे मृत्यु अपने सामने नाचती हुई दिखाई देने लगी।

ठीक आठवें दिन सन्त एकनाथ जी उसे घर पर आते हुए दिखाई दिये। दौड़कर वह उनके पास पहुँचा और पूछा- 'क्या मेरा अन्तिम दिन आ गया?'

सन्त ने कहा- 'पहले यह बता कि तेरे ये आठ दिन कैसे गुजरे?'

व्यक्ति ने उत्तर दिया- 'क्या बताऊँ भगवन्! मुझे तो आँखों के सामने सदा मौत दिखाई देती थी। अतः मैंने पहले तो उन सारे व्यक्तियों से क्षमा माँगी, जिन-जिन से भी मेरा लड़ाई-झगड़ा या वैर-भाव था। उससे मेरा हृदय बहुत हल्का महसूस हुआ। उसके बाद मैंने ईश-चिन्तन और जो कुछ भी उत्तम कार्य किया जा सकता था, करना शुरु किया और अब ये आठ दिन समाप्त होने आ गये हैं, अतः मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

व्यक्ति की बातों को सुनकर सन्त मुस्कुराये और बोले-'आज मैं तुझे तेरे उस दिन के प्रश्न का उत्तर देता हूँ। देख आठ दिन तक जिस मृत्यु का स्मरण करते हुए तूने अपने जीवन को उत्तम ढंग से बिताया, अगर उसी मृत्यु का प्रतिदिन और प्रतिपल स्मरण करते हुए मनुष्य अपना जीवन अधिक से अधिक पवित्र और उन्नत बनाये तो उसके जीवन में अशान्ति, चिन्ता और काम-क्रोधादि कषायों का प्रवेश नहीं हो सकता। हमारे निश्चिन्त और शान्त जीवन का रहस्य केवल मरण के स्मरण में ही छिपा है। मरण का स्मरण रखने वाला व्यक्ति प्रतिदिन यही सोचता है कि जब एक दिन इस शरीर को नष्ट होना ही है तो क्यों हम इसके पीछे नाना प्रकार के पापों का उपार्जन करें, बल्कि जब तक जीना है, क्यों न सबकी सेवा करें, सबसे स्नेह-भाव रखें तथा शान्ति से परमात्मा का स्मरण करते हुए यथाशक्य धर्माराधन करें।'

सन्त एकनाथजी का कथन सुनकर व्यक्ति हर्षित होता हुआ बोला- 'मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया भगवन्! आज मैं शान्ति और निश्चिन्तता के रहस्य को भली-भाँति समझ गया।'

('दिशा बोध' पुस्तक से संकलित)

प्रश्नः-

1. कषाय कौन-कौन से हैं? उनके स्वरूप का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।
2. शान्ति से जीवन व्यतीत करने के क्या उपाय हैं?
3. क्या आपने भी कभी क्षमा माँगकर वैरभाव मिटाने का प्रयास किया है? घटना लिखिए।
4. विलोम शब्द लिखिए- शान्ति, लड़ना, क्षमा, मृत्यु, स्मरण, हर्षित।
5. संधि-विच्छेद कीजिए- उपार्जन, परमात्मा, प्रतीक्षा, उन्नत, महात्मा।
6. कहानी में से दो समस्त पद छाँटकर उनमें विद्यमान समास का नाम भी लिखिए।

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-2011] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'अत्तसमे मणिज्ज छप्पिकाए' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 18 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	नीति संघवी-बदनावर	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	गजेन्द्रकुमार जैन-जयपुर	19.25
तृतीय पुरस्कार- 150/-	अर्पित जैन-जोधपुर	19
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	दीप्ति जैन-कोटा	18.75
	वंदना जैन-भदेसर	18.75
	श्रेया मेहता-शिमोगा	18.75
	श्रीकांत सुराणा-गंगाशहर	18.75
	सुदर्शन जैन-बीकानेर	18.75

स्वास्थ्य-विज्ञान

जैन श्रमण की स्वास्थ्यवर्धक जीवन शैली

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

साधु जीवन की सीमाएँ:-

आत्मार्थी साधक आत्म-शोधन को सर्वाधिक प्राथमिकता देता है न कि शरीर पोषण को। वह अपने मन, वचन और काया पर पूर्ण नियन्त्रण रख प्रत्येक प्रवृत्ति को सम्यक् प्रकार से करने का जीवन पर्यन्त संकल्प लेता है। पांच समिति और तीन गुप्ति रूपी आठ प्रवचन माताएं उसकी साधना और स्वास्थ्य में सुरक्षा कवच की भांति सहयोग करती हैं। इन प्रवचन माताओं की सम्यक् आराधना से न केवल आत्मिक विकार ही दूर होते हैं बल्कि शारीरिक और मानसिक रोगों का अहिंसक उपचार भी प्रभावशाली हो जाता है। श्रमण शरीर का तब तक ही खयाल रखता है, जब तक शरीर आत्मोथान में सहयोग देता है। परन्तु जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाती तब तक आत्मा शरीर के बिना नहीं रह सकती। अतः शरीर की उपेक्षा कर साधक साधना भी नहीं कर सकता। अधिकांश शारीरिक रोगों का मुख्य कारण प्रायः जाने-अनजाने प्राप्त 10 प्राणों एवं 6 पर्याप्तियों का असंयम, दुरुपयोग, क्षमता के अनुरूप उपयोग न करना अथवा प्रकृति के स्वास्थ्य संबंधी सनातन सिद्धान्तों की उपेक्षा करना होता है। प्राण एवं पर्याप्तियों के संयम से शरीर में रोग उत्पन्न होने की संभावनाएँ काफी कम हो जाती हैं और यदि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से रोग की स्थिति हो भी जाती है तो पर्याप्तियों के संयम से, पुनः शीघ्र स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है। जैन श्रमण का जीवन यथासंभव पूर्ण रूप से संयमित, नियमित, स्वावलंबी एवं पाप रहित होता है। वह तीन करण और तीन योग से हिंसा का त्यागी होता है। अर्थात् मन, वचन एवं काया द्वारा पाप प्रवृत्तियों से बचता हुआ, गृहस्थों से 42 दोष टाल निर्दोष, अपनी निम्नतम आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। साधक अनावश्यक बाह्य साधनों का उपयोग भी नहीं लेता है। प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों का यथा संभव पालन करते हुए, प्राणिमात्र को बिना कष्ट पहुँचाने की भावना एवं आचरण में सजगता रखते हुए स्वयं का जीवन चलाने हेतु अतिआवश्यक प्रवृतियाँ भी पूर्ण सावधानी पूर्वक करता है। सच्चा श्रमण वर्ग अपनी साधना में उपचार हेतु अनावश्यक दोष लगाना नहीं चाहता और न अपने

शिष्यों अथवा सहयोगियों से उपचार हेतु अनावश्यक सेवा लेकर परावलंबी जीवन जीना चाहता है। ऐसे साधकों का जीवन प्रायः रोग ग्रस्त नहीं होता। परन्तु फिर भी प्राण और पर्याप्तियों का पूर्ण संयम न रखने से, पूर्व उपार्जित असातावेदनीय कर्मोके उदय से, वर्तमान में उपलब्ध अशुद्ध खान-पान, प्रदूषण, पर्यावरण, दुर्घटना, आसपास के दूषित वातावरण के प्रति सजगता और सावधानी न रखने के प्रभाव से अथवा शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमता कमजोर हो जाने से रोग होने की संभावना रहती है। अतः उनके साथ भी जब तक जीवन है, कम अथवा ज्यादा सहनशक्ति एवं मनोबल की क्षमताओं के अनुरूप स्वास्थ्य की समस्याएँ जुड़ी रहती हैं।

स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु स्वावलंबी सुझाव

प्रकृति का सनातन सिद्धान्त है कि जहाँ समस्या होती है, उसका समाधान उसके आस-पास अवश्य होता है। अतः जो रोग शरीर में उत्पन्न होते हैं उनका बचाव एवं उपचार शरीर में अवश्य होना चाहिये। शरीर का विवेकपूर्ण एवं सजगता के साथ उपयोग करने की विधि स्वस्थ एवं निर्दोष स्वावलम्बी जीवन की आधारशिला होती है। मानव की क्षमता, समझ और विवेक जागृत करना उसका उद्देश्य होता है। अच्छे स्वास्थ्य हेतु साधु की जीवन शैली कैसी हो? ताकि रोग होने की संभावनाएँ कम से कम हो, इस बात की सामान्य जानकारी प्रत्येक साधक को आवश्यक होती है। ऐसी साधारण चन्द निर्दोष निम्न बातों की जानकारी एवं सतर्कता रखने से तथा आवश्यकता पड़ने पर सम्यक् आचरण करने से श्रमण वर्ग अपनी साधना में कम से कम दोषों का सेवन कर, अनेक रोगों से सहज बच सकता है एवं स्वस्थ रह सकता है।

भोजन करते समय ध्यान देने योग्य बातें

साधक को अपने स्वास्थ्य के अनुकूल ही आहार मिले, सदैव संभव नहीं होता। गृहस्थों के घर जो निर्दोष आहार उपलब्ध होता है, उसी को ग्रहण कर समभाव से जीवन निर्वाह करना पड़ता है। परन्तु भोजन कैसे करना? कब करना? कितना करना? यह उसके स्वयं के विवेक एवं नियंत्रण पर निर्भर करता है। भूख लगने पर भोजन करना जितना आवश्यक होता है, उससे भी अधिक उसका पूर्ण पाचन आवश्यक होता है। इसलिए यथासंभव साधक को ऐसा ही भोजन करना चाहिए जिसका सरलता से पूर्ण पाचन हो सके अथवा जो आहार ग्रहण किया जाए उसको पचाने हेतु आवश्यक सतर्कता रखी जाए। अतः साधक को पाचन के

नियमों पर विशेष ध्यान देना एवं उनका पालन करना आवश्यक होता है। प्रथम आवश्यकता है कि भूख से कम भोजन करना चाहिए ताकि भोजन करने के पश्चात् प्रमाद न आए। भोजन को पूर्ण चबा-चबा कर खाना चाहिए ताकि दांतों का कार्य आंतों को न करना पड़े। जितना ज्यादा भोजन को चबाया जायेगा उतनी ज्यादा लार बनेगी और भोजन का पाचन अच्छा होगा। सही पाचन से ही भोजन की पूर्ण ऊर्जा मिलती है और दांतों, मसूड़ों का सहज ही व्यायाम हो जाने से उनसे संबंधित रोग नहीं होते। भोजन करते समय मौन भी आवश्यक है। बोलने से लार बराबर नहीं बनती। तीसरा विवेक भोजन के तुरन्त पश्चात पानी नहीं पीना चाहिए। विशेष रूप से सायंकालीन भोजन के पश्चात् उसका पालन श्रमण वर्ग के लिए कठिन होता है। अतः संभव हो तो उन्हें सायंकालीन भोजन का त्याग कर देना चाहिए। भोजन के तुरन्त बाद में पानी पीने से पेट की जठराग्नि शान्त हो जाती है और आमाशय में भोजन को पाचन के लिए आवश्यक पेन्क्रियाज, लीवर, गाल ब्लेडर आदि से मिलने वाले पाचक रस पतले हो जाते हैं। जिससे आमाशय में भोजन का पूर्ण क्षमता से पाचन नहीं हो सकता। बिना पचा भोजन अनेक रोगों का प्रमुख कारण होता है। भोजन करने के जितनी अधिक देर बाद पानी पीया जायेगा आमाशय में भोजन का उतना अच्छा पाचन होगा और पेट के रोग होने की संभावनाएँ कम हो जायेंगी। उसके पश्चात् जितनी आवश्यकता हो पानी पीना चाहिए ताकि शरीर में पानी की कमी न हो।

चौथी बात, प्रायः श्रमणों को शारीरिक श्रम की अधिक आवश्यकता नहीं होती है। अतः उनके भोजन पाचन में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है। अतः उनके दो आहार के बीच में कम से कम आठ घंटे का अन्तराल आवश्यक होना चाहिए है। इसके साथ निहार के आसन में एवं सूर्य स्वर में भोजन करने से पाचन अच्छा होता है। भोजन करने के पश्चात् कुछ समय वज्रासन में बैठने से भी पाचन में सहायता मिलती है। हमारे ऋषि मुनियों ने कहा- "एक समय खाने वाला योगी, दो समय खाने वाला भोगी, तीन समय खाने वाला रोगी होता है।" श्रमण वर्ग को इस तथ्य की गहराई में जाकर आचरण करना चाहिए। यदि ऐसा संभव न हो तो साप्ताहिक उपवास अवश्य करना चाहिए। उपवास के समय शरीर अपने दोष (वात, पित्त, कफ) का शमन करता है जिससे शरीर स्वस्थ होने लगता है।

भोजन की भांति पानी को भी धीरे-धीरे घूंट-घूंट पीना चाहिए। अतः यदि साधक भोजन को पीने और पानी को खाने का सूत्र जीवन में अपना लें तो

अनेक रोगों से सहज सुरक्षा हो जाती है। गर्मी के दिनों में यदि प्रासुक पानी आवश्यकतानुसार उपलब्ध न हो तो एक घूंट पानी को मुंह में जितना अधिक देर घुमा सकें घुमाते रहें। लार मिलने से पानी ग्लुकोज बन जाता है और साधक प्यास परीषह से सहज बच सकता है।

अन्य ध्यान रखने योग्य तथ्य–

1. सर्दी और गर्मी का कानों पर अपेक्षाकृत प्रथम एवं अधिक प्रभाव पड़ता है। अतः जहां साधारण वातावरण से अधिक ठण्डे या गरम वातावरण में जाना हो तो जुकाम होने की संभावना रहती है। उदाहरण के लिए गर्म हवाओं अथवा लू में विचरण करते समय, सर्दी के समय अन्दर से बाहर आते समय, सर्दी से पुनः गरम वातावरण में जाते समय परिवर्तित तापमान से प्रभावित हवा को कान के पर्दो से तुरन्त स्पर्श न होने दिया जाए। सावधानी के लिए ऐसे समय यदि कानों में रूई रखी जाए तो, वातावरण में परिवर्तन से होने वाले रोग प्रायः नहीं होते।
2. प्रातःकाल दोनों हथेलियों को आपस में मिला, दोनों अंगूठों से नाक के दोनों नथूनों को पूरा दबाकर, मुंह को फूलाकर, श्वास को बाहर निकालने का जितना सहन हो सके नियमित प्रयास करने से गले, नाक एवं कान में जमे विजातीय तत्त्व दूर होने लगते हैं। संबंधित कोशिकाएँ सक्रिय होने लगती हैं, तथा इनसे संबंधित रोग होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। जुकाम, श्वसन, थॉयराइड एवं पैराथॉयराइड, गले तथा कान के रोग प्रायः नहीं होते हैं।
3. गले से कबूतर की भांति आवाज निकालने का प्रयास करने से गला साफ होता है, जिससे गला एवं श्वसन तंत्र बराबर कार्य करने लगता है। खांसी, दमा, आवाज में भारीपन आदि रोगों में शीघ्र आराम मिलता है।
4. गले और गर्दन को अलग-अलग स्थितियों में बायें-दायें, ऊपर-नीचे, सभी तरफ जितना सहन हो सके, तनाव की स्थिति में रख, जितना दीर्घ 'णमो' का उच्चारण कर सकें, करने से अथवा उस स्थिति में मौन अट्हास करने से गर्दन की जकड़न दूर होती है और गर्दन संबंधी रोग ठीक होते हैं। थॉयराइड और पैराथॉयराइड ग्रन्थियाँ और विशुद्धि चक्र सक्रिय हो बराबर कार्य करने लग जाते हैं।
5. शरीर के असक्रिय, कमजोर भाग पर हथेली से घड़ी की दिशा (Clockwise) में मसाज करने से उस भाग की सक्रियता बढ़ने लगती है और वे अंग उपांग बराबर कार्य करने लग जाते हैं। इसी प्रकार दर्द, पीड़ा,

खुजली अथवा जलन वाले भाग पर घड़ी की उल्टी दिशा में (Anti-Clockwise) शरीर को स्पर्श करते हुए हथेली को घुमाने से रोग में तुरन्त राहत मिलती है। उदाहरण के लिए पेन्क्रियाज पर घड़ी की दिशा में मसाज करने से मधुमेह तथा पेट पर मसाज करने से कब्जी ठीक होती है तथा दस्त होने की स्थिति में पेट पर हथेली से घड़ी की उल्टी दिशा में मसाज करने से दस्तें बंद हो जाती हैं। उसी प्रकार जलन, खुजली, दर्द आदि स्थानों पर हथेली से हल्का सा Anti-Clockwise मसाज करने से आराम मिलने लगता है।

6. विधि सहित नियमानुसार भावनापूर्वक वंदना एवं प्रतिक्रमण साधक का नियमित व्यायाम होता है। उग्र विहारी श्रद्धेय श्री गुणवंत मुनि जी म.सा. के अनुभवों के अनुसार विहार चर्या के पश्चात् वंदना करने से विहार की थकान दूर होती है।

7. **आसन**– साधक को यथा संभव सीधी कमर से वज्रासन, पद्मासन एवं सुखासन में ही बैठना चाहिए। जिससे शरीर का संतुलन बना रहता है एवं वीर्य विकार संबंधी रोग होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। गोदुहासन में अपनी क्षमतानुसार बैठने से शरीर का स्नायुतंत्र सक्रिय रहता है और ऐडी, घुटने, पैर एवं पीठ के रोग परेशान नहीं करते।

8. **प्राणायाम**– सम्यक् प्रकार से श्वसन क्रिया को संचालित, नियन्त्रित करने की विधि को प्राणायाम कहते हैं। दो श्वासों के बीच का समय ही जीवन होता है। प्रत्येक व्यक्ति के श्वासों की संख्या निश्चित होती है। जो व्यक्ति आधा श्वास लेता है वह आधा जीवन ही जीता है। प्राणायाम से शरीर में प्राण ऊर्जा उत्प्रेरित, संचारित, नियमित और संतुलित होती है। जिस प्रकार बाह्य शरीर की शुद्धि के लिये स्नान की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार शरीर के आन्तरिक अवयवों की शुद्धि के लिये प्राणायाम का बहुत महत्त्व होता है। विशेष कर लोम-विलोम एवं नाड़ी शोधन, कपाल भाति एवं भस्त्रिका प्राणायाम नियमित करने चाहिए। भ्रामरी प्राणायाम से स्मरण शक्ति में लाभ होता है। गर्मियों में शीतली एवं चंद्र भेदी प्राणायाम तथा सर्दियों में सूर्य भेदी प्राणायाम बहुत लाभकारी होते हैं। **(क्रमशः)**

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621554, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.com

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (15)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह तीसरी किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जुलाई 2011 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2

(पृष्ठ 90 से 140 तक से प्रश्न)

पृष्ठ 90 से 140 तक के उद्यान में घूमते हुए वहाँ से बिना मात्रा के अक्षर के फूलों को चुन-चुन कर नीचे दिये गये खानों में सजाइए, हमने एक-एक अक्षर आपको दिए हैं, अब आपको कुछ नहीं करना है सिर्फ दो अक्षर भरने हैं। बाहर से नहीं लेने हैं।

1	म			10	स			19	अ		
2	स			11	भ			20	स		
3	द			12	श			21	व		
4	म			13	उ			22	न		
5	ल			14	म			23	स		
6	न			15	श			24	न		
7	स			16	ग			25	अ		
8	श्र			17	क						
9	ऋ			18	च						

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (13) का परिणाम

जिनवाणी अप्रेल, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 260 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्री रेणुमल जैन-जोधपुर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- सुश्री चांदनी जैन-इन्दौर (मध्यप्रदेश)

तृतीय पुरस्कार-श्रीमती मंजू देवी उमेश कुमार जी सुराणा-गंगाशहर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. ज्योति लोढ़ा-नागपुर (महा.)
2. श्री कन्हैयालाल जैन-भीलवाड़ा (राज.)
3. श्री रिखबराज बोहरा-दिल्ली
4. प्रीति जैन-मानसरोवर, जयपुर (राज.)
5. बसन्ता मदनलाल संकलेचा-धुलिया (महा.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता-Prakash Chand Jain-Kawardha (C.G),Aarti Rajendrakumarji Mutha-Amravati (M.H), Abhilasha Hirawat-Mumbai, Akhilesh-Jodhpur, Anil kumar Jain-Kota, Anu Jain- Hoshiarpur, Aruna Jain-Hosiarpur Punjab, Atishay Bhansali-Dandi Lohara, Babulal Katariya-Hyderabad, Babulal Ratanchand Jain-Jalgaon, Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhulia (M.H), Basanti Champalal Bhatewar-Dhulia (M.H),Bharti Sunil Surpure-Ichalkaranji, Bhavika Shah-Belgaum, Chameli Jain-Dandi Lohara, Chandan Mal Gugalia-Pali Marwar, Chandan Mal Parlecha-Jodhpur, Chandni Jain-Indore,Chandrakala Dilipji ranka-Jalgaon, Chandrakala Mehta-Bangalore, Chandralata mehta-Dudu, Jaipur, Deepika jain-Hoshiarpur, Dhani Devi Ranka-Vapi, Valsad, Dharmesh Punamiya-Pali Marwar, Dilroop Chand Bhandari-Jodhpur, Divya Daga-Jaipur, Gunmala Jain-Chittorgarh, Hajarimal jain-Durg (C.G), Hans Raj Mohnot-Jaipur, Heera Rameshji karnawat-Ahamadnagar, Hem Raj Surana-Jaipur, Hema Kishore Bagmar-Secundrabad, Hemalata Rameshji Kothari-Dhulia (M.H), Hemlata Jain-Beawar, Indu Kamleshji jain- Mumbai, Janesh Surana-Pali Marwar, Jaya Bhandari-Beawar, Jaya Mohanlalji Bhandari-Pune, Jayamala kankariya-Pali Marwar, Jewar Narendra Shah-Belgaum, Johari mal-Jodhpur, Jyothi Lodha -Nagpur, Jyoti Bhansali-Baangalore, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Kamla Satia-Ajmer, Kamla Singhvi-Jaipur-Kamla Surana-Jodhpur-Kamla Surana-Pali Marwar, Kanak Bader-Delhi, kanchan Lodha-Nasik, Kanchanbai Dangi, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Kanwal Raj Mehta-

Jodhpur, Kavita Dani-Chittorgarh, Kiran Jain-Hoshiarpur, Kiran Kothari-Jaipur, Kiran Prakashchanji Kothari-Bodwad, Komal Ankur Kothari-Baroda, Krishna Agarwal-Jaipur, Kumkum Jain-Sawai Madhopur, Kusum Pareshji punamiya-Ichalkaranji, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lad Devi Hirawat-Jaipur, Lalita Devi Runwal, Lata Satishji Aanchaliya-Dhulia (M.H), Madhu Parmodji Bora-Ichalkaranji, Madhubala Ostwal-Nasik, Mamta Bhandari-Nagaur, Mamta Chajjed-Samdari, Mangala Singhvi-Jalgaon, Manju Bhandari-Beawar, Manju Devi Surana-Bikaner, Manju Kanstiya-Kolkata, Manju Sandeep Mutha- Ichalkaranji, Manjula vasant kumarji Jain-Mumbai, Manoj Kothari-Udaipur, Maya Alijar-Secundrabad, Mayuri Jain-Dhule, Meena Chordia-Chennai, Meena jain-Sawai Madhopur, Meena Vijay Bora-Mumbai,Meenabai Rajkumari Nahar-Ichalkaranji, Milap Parasmal Lunawat-Ahmedabad, Minal Jain-Sawai Madhopur, Monali Mishrilal Pipada-Ichalkaranji, Monika Jain-Kapurthala, Mridula Kumbhat-Jodhpur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Nainchand Bafna-Jodhpur, Naman Jain-Ajmer, Namrata Mahendra Jain-Chiplun, Narendra Gopichand Bamb-Bhayandar, Nathmal kothari-Durg (C.G), Neelam Chipad-Dudu, Jaipur, Neelam Jain-Ajmer, Neelam Kankaria-Nagaur, Neelu Jain-Ludhiana, Punjab, Neera Bhandari-Beawar, Neeti Sanghvi-Badnawar, Neha Jain-Sawai Madhopur, Nirmala Hirawat-Jaipur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Kolhapur, Nisha Jain-Aligarh, Tonk, Nita Kakariya-Doddballapur, Bangalore, Nutan Ajit Bhandari-Ichalkaranji, Nutan Jain-Secundrabad, Padam Chand munot-Jaipur-Parasmal D Baghmar-Barmer-Pista Golecha-Jaipur, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Poonam Jain-Faridkot, Punjab, Prabha Gulecha, Bangalore, Pragya Bupkiya-Indore, Pramila Babulalji Pokarna-Dhulia (M.H),Pramila Bohra-Jaitaran, Pramila Kothari-Jodhpur, Pramila Mehta-Dudu, Jaipur, Pramila Sajjanrajsa mehta-Bangalore, Prasan Kothari-Jodhpur, Praveen Chand Jain-Karauli, Praveena Kothari-Jaipur, Preeti Jain-Jaipur, Preeti khincha-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Prem kanta kothari-Jaipur, Premlata Lodha-Jaipur, Priti Jain-Ujjain,Priyanka Jain-Jaipur, Pukhraj Sethiya-Ajmer, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar Ajmer, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Jain-Pali Marwar, Pushpa Lalith Bohra-Secundrabad, Pushpa Navlakha-Jaipur-R. Chandra Bothra-Choolai, Rajani Jain-Sawai Madhopur, Rajkumari Lodha-Jaipur, Rajul Rameshji Kothari-Dhulia (M.H), Ranulal Kocchar-Nasik, Rashi Navlakha-Jaipur, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Ratan Karnawat-Jaipur, Reema Jain-Ludhiana, Punjab, Rekha Gugalia-Nagpur, Rekha Kankariya-Pali Marwar, Renumal Jain-Jodhpur, Rikab Raj Bohra-Delhi, Rishabh Jain-Bundi, Ritu jain-Sawai Madhopur, Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Sagarmalji Indermalji Jain-Dhule, Sangeeta Ashokji Kothari-Dhule, Sangeeta Jain-Sawai Madhopur, Sangeetha P Baid-Chennai, Sangita A Singavi-Nasik, Sangita Ravindra Chhajed-Jalgaon, Sapna R Jain-Amravati (M.H), Sarita Manoj Babel-Ichalkaranji, Sarla Golecha-Beawar, Saroj Nahar-Delhi, Saroj Parasmalji

Runwal, Seema Ajinder Jain-Ludhiana, Punjab, Seema Dhing-Udaipur, Seema Jain-Aligarh, Tonk, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shanta Chumnji Pitaliya,-Amravati (M.H), Sharmila Jain-Ajmer, Shashank Choudhary-Jaipur, Shashi Prabha Burad-Beawar Ajmer, Shashikala P Lunawat-Nasik, Shilpa Priteshji Surana-Jalgaon, Shobha Sagarmalji Kothari-Dhule, Shubham Jain-Dudu, Jaipur, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Nileshji Muthiyan-Ichalkaranji, Snehlata P Shah-Belgaum, Sonam Golecha-Beawar Ajmer, Sudarshan Jain-Bikaner, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sudha Daga-Bikaner, Sugan Chand Chajjer-Jodhpur, Suman Daga-Bhopal, Sunanda Lodha-Dhulia (M.H), Sunita Doshi-Beawar, Sunita Dulaj-Jaipur, Sunita Kakariya-Ahemdabad, Sunitha Y Singhvi-Chennai-Suraj Bai Alijar-Jabalpur M.P, Surekha A Bhandari-Nasik, Surekha Surana-Deshnok, Suresh Chand Jain-Alwar, Suresh Kumar Sand-Pali Marwar, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Bhandari, Sushila Gulecha-Jodhpur, Sushila jain-Sawai Madhopur, Sushila Kantilalji Runwal-Pune, Sushila S Surana-Nasik, Suvarna Nitin Bora-Ichalkaranji, Tara Bafna-Chennai, Tara Devi Jain-Ujjain, Trupti P Bora-Ichalkaranji, Ugma Devi Duggar-Bangalore, Umrao Mal Bohra-Ajmer, Usha Surana-Jaipur, Vandana Punamiya-Pali Marwar, Varsha Dosi-Nagaur, Vibha Jain-Jodhpur, Vidhya Sanghvi-Badnawar, Vimala Surana-Jaipur, Vimla Bohra-Jaipur, Vimla G Bardiya, Vimla N Mehta-Jodhpur, Vimla Ranulal Kocchar-Nasik, Vimlabai M khivasara-Dhule, Yashoda Manakchandji Gundecha-Nagpur, Yugal Nemichand Ranka-Ahmedabad,

24.5 अंक प्राप्तकर्ता– Pramila Mehta-Ajmer, Sabar Chordia-Rajasthan,

24 अंक प्राप्तकर्ता–Aruna Baid-Amravati (M.H), Babulal jain-Mansarovar Jaipur, Chetana B Bothra-Mumbai, Chirag Jain-Sawai Madhopur, Hansa Devi Surana-Bikaner, Hemlata Kherada-Bhilwara, Indu Bohra-Ajmer, Kamala Modi-Jodhpur, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Mamta Jain-Sawai Madhopur, Manila Parakh-Jaipur, Nikita Kothari-Dudu, Jaipur, Nirmala Kothari-Dudu, Jaipur, Padam Chand Agarwal-Jaipur, Padma R Bohra-Raichur, Prabha P Sancheti-Amravati (M.H), Priyanka kothari-Dudu, Jaipur, Pushpa M Golecha-Ajmer, Pushpa Prakashchand Kankariya-Raichur, Rekha Jain-Aligarh, Tonk, Rekha Surana-Nagaur, Shakuntala Khushalchand Khivasara-Jalgaon, Surya Kala Bagmar-Chennai, Sushila Gang-Jodhpur, Sweety Golecha-Beawar Ajmer, Usha Praveenji Bardia-Dhulia (M.H)

23 अंक प्राप्तकर्ता– Kamla Singhvi-Jaigaon, Kiran Pramod Tated-Dewas (M.P), leelabai A Kothari-Ahmednagar, Nitu Golecha-Ramchandra-puram, Pinky jain,Sangita Banthia-Beawar Ajmer, Shobha Nahar-Secundrabad, Ugama Bai Dosi-Secundrabad, Vikas Bamb-Mumbai

22 अंक प्राप्तकर्ता–Prakashbai Bhurawat, Susheela Jain-Karauli

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन श्राविकाओं का बृहद् इतिहास (आदिकाल से वर्तमान युग तक)- साध्वी डॉ. प्रतिभा श्री 'प्राची', ***प्रकाशक***-(1) सिविल लाइन स्थानकवासी जैन संघ, लुधियाना द्वारा अशोक जैन, शीतल छाया, 556/2, आत्ममार्ग, सिविल लाइन्स, लुधियाना (पंजाब) मोबाइल- 68726-56506, (2) प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.) ***पृष्ठ***- 20+724, ***मूल्य***- 550 रुपये, ***संस्करण***- 2010

साध्वी डॉ. प्रतिभा श्री 'प्राची' को जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से 'चतुर्विध जैन संघ में श्राविकाओं का योगदान' विषय पर पी-एच.डी उपाधि प्राप्त हुई है। साध्वी जी का यह शोधग्रन्थ ही ''जैन श्राविकाओं का बृहद् इतिहास'' शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ है। साध्वी जी ने प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान युग तक की सैकड़ों श्राविकाओं का विवरण अपने ग्रन्थ में संयोजित किया है। इसके लिए लेखिका ने आगम-साहित्य, आगमिक व्याख्या-साहित्य, चरित एवं कथा काव्यों, पुराण वाङ्मय, प्रबन्ध साहित्य, ऐतिहासिक ग्रन्थों, शिलालेखों, ग्रन्थ प्रशस्तियों एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों को आधार बनाया है। कहीं अनुभव को भी स्थान दिया है। वैदिककाल एवं तीर्थंकर ऋषभदेव से महावीर स्वामी के काल की अनेक श्राविकाओं का उल्लेख इस ग्रन्थ की उपलब्धि है। वर्तमान युग की श्राविकाओं में सबका समावेश होना सम्भव नहीं है, तथापि अनेक श्राविकाओं का परिचय उपलब्ध है। साध्वी जी का प्रयास प्रशंसनीय है, किन्तु ग्रन्थ में अभी भी कुछ योजित किया जा सकता है।

'परम' कैसे प्राप्त करें- एन . के. खींचा, ***प्रकाशक***- प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017, दूरभाष- 0141-2524827, 2520230, ***पृष्ठ***- 8+152, ***मूल्य***-150 रुपये, ***संस्करण***-2010

राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी (अब सेवानिवृत्त) श्री एन.के.खींचा ध्यान साधक होने के साथ सकारात्मक सोच के धनी हैं। आप

जीवन में अपरिग्रह, अहिंसा एवं नैतिकता के संस्कारों को आवश्यक मानते हैं। 'परम' कैसे प्राप्त करें' पुस्तक ऐसे ही विचारों से ओतप्रोत है, जिससे जीवन में तृष्णा एवं लालसा पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा मिलती है। पुस्तक में जीवन के प्रति एक दृष्टि प्राप्त होती है जो व्यक्ति में आत्मविश्वास को जागृत करने, उसे दुःख में भी सुख को ढूंढने की क्षमता प्रदान करती है। पुस्तक में अर्थशास्त्र की अहिंसा एवं अपरिग्रह से समन्वित व्याख्या निरूपित की गई है।

जैन धर्मावलम्बियों की विचलित आस्था का स्थितिकरण- श्री सूरजमल जैन, ***प्रकाशक***- सरस्वती उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसन्धान संस्थान, बी-417, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017, ***मूल्य***- 300 रुपये, ***पृष्ठ***- 4+130, ***सन्***-2010

पर्यावरण एवं वानिकी के विशेषज्ञ श्री सूरजमल जैन, कोटा मूलतः तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न हैं तथा जैन धर्म-दर्शन के मूल-सिद्धान्तों की रक्षा तथा उनके यथानुरूप आचरण के समर्थक हैं। यह पुस्तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं संगोष्ठियों में पठित उनके विचारपूर्ण लेखों तथा टिप्पणियों का संकलन है, जिसमें जैन धर्मावलम्बियों में प्रविष्ट विकृतियों एवं अंध-विश्वासों पर करारी चोट की गई है तथा पुरुषार्थवादी जैन दर्शन के स्वरूप को प्रतिष्ठित किया गया है। उनकी पुस्तक से जैन समाज को अनेकविध संदेश प्राप्त होते हैं, जिनमें से कतिपय इस प्रकार हैं-

1. जैन दर्शन में एकेश्वरवाद की मान्यता नहीं है और न किसी एक ईश्वर को या शक्ति को जगत् का स्रष्टा, पालनकर्ता या नियन्ता स्वीकार किया गया है। फिर भी अनेक जैनाचार्य, सन्त, पण्डित एवं सामान्यजन "जैसी ईश्वर की मर्जी, परमात्मा तो सर्वव्यापी निराकार है, ईश्वर सबका ध्यान रखता है, ईश्वर करेगा वह होगा" आदि वाक्यों का प्रयोग करते हैं जो जैन धर्म-दर्शन के अनुसार कतई उपयुक्त नहीं हैं, क्योंकि जैनदर्शन में ऐसे ईश्वर को स्वीकार नहीं किया गया है। यहाँ शुद्ध आत्मस्वरूप वाले सिद्ध परमात्मा हैं जो किसी का कुछ नहीं करते तथा सिद्धालय में विराजमान रहते हैं। वे सर्वव्यापक नहीं हैं।
2. जैन धर्म में कर्म-सिद्धान्त की मान्यता है कि सबको अपने कृतकर्मों के

अनुसार ही फल की प्राप्ति होती है। अतः देवी-देवता या तीर्थंकर प्रतिमाओं से भौतिक याचना करना मिथ्यात्व है।

3. जैन समाज में कर्मकाण्डों का बोलबाला है, तभी नैतिक स्तर निरन्तर गिर रहा है। अष्ट द्रव्य पूजा वैदिक परम्परा का जैनीकरण है। जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प आदि से स्वाहा करने से ही यदि जन्म, जरा, मरण से मुक्ति एवं जीवों का कल्याण हो जाए तो व्रत, तप, त्याग का कोई महत्त्व नहीं रहेगा। जैन-दर्शन मूलतः कर्मकाण्ड विरोधी है तथा इसमें निजी पुरुषार्थ की ही प्रमुखता है।

4. जिस प्रकार की जिनपूजा एवं विधि-विधान पण्डितों, प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा प्रचारित हैं उनका पर्यावरण से दूर का भी कोई सम्बन्ध नहीं है। जैन समाज यदि जैन आचार संहिता, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य अणुव्रतों का शास्त्रोक्त पालन करे, सप्त व्यसनों, अभक्ष्यों का त्याग करे, अनेकान्त दर्शन के प्रति समर्पित हो तो निस्सन्देह स्वयं के उपकार के साथ पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं भौतिक पर्यावरण के सुधार में महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकेगा।

5. किसी व्यक्ति की मंत्र-तंत्र साधना से दूसरे व्यक्ति के कर्मफल पर, शुद्ध-अशुद्ध पर्यायों पर प्रभाव हो सकता है, यह जैनदर्शन के विरुद्ध है।

6. सम्यक्त्व एवं अन्धविश्वास एक दूसरे के विरोधी हैं। जहाँ सम्यक्त्व होगा वहाँ अन्धविश्वास नहीं रहेगा और यदि अन्धविश्वास है तो सम्यक्त्व नहीं है। सम्यक्त्व का अंग्रेजी रूपान्तर Rationality है, जिसमें किसी भी प्रकार के अन्धविश्वास को स्थान नहीं है। जादू-टोना, मंत्र-तंत्र, देव-कुदेव प्रदत्त आधि-व्याधि, नियतिवाद, एकेश्वरवाद, व्यक्तिवाद एवं वितण्डावाद सम्यक्त्व में स्वीकार्य नहीं हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक जैन धर्म में प्रविष्ट विकृतियों को रेखांकित कर शुद्ध धर्म की रक्षा एवं पालन पर बल प्रदान करती है। पुस्तक में कृषि की अपेक्षा वन-सम्पदा के अभिवर्धन को वैज्ञानिक एवं धार्मिक तथ्यों के आधार पर स्थापित किया गया है। पुस्तक के नाम में 'स्थितिकरण' की अपेक्षा 'स्थिरीकरण' शब्द अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

दीक्षा रिपोर्ट

सरस्वती नगर, जोधपुर में मुमक्षु सुश्री कान्ता जी पींचा की भागवती दीक्षा 5 मई को सानन्द सम्पन्न

वैशाख शुक्ला द्वितीया, गुरुवार दिनांक 5 मई, 2011 को रत्नसंघ की राजधानी सरस्वती नगर-जोधपुर में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से **मुमक्षु सुश्री कान्ता जी पींचा** की भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। जोधपुर दीक्षा महोत्सव पर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति रत्नसंघीय समस्त मुनिपुंगवों के साथ साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आदर्श विद्या मंदिर माध्यमिक विद्यालय, सरस्वती नगर, बासनी में पावन प्रव्रज्या महोत्सव हजारों भक्तों के जय-जयकार के गगनभेदी जयनादों के बीच उमंग-उल्लास से सम्पन्न हुआ।

शोभायात्रा

4 मई, 2011 को प्रातः 7.30 बजे विरक्ता बहिन सुश्री कांन्ता जी पींचा की शोभायात्रा का भव्य आयोजन रखा गया, जिसमें बैण्ड की सुमधुर ध्वनियों के साथ सुसज्जित गाड़ियों में विरक्ता बहन एवं उनके परिवारजन विराजित थे। शोभायात्रा में विशाल जनसमूह ने यात्रा के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद करते हुए और मंगल गीत गाते हुए तथा गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के सन्देश उच्चारित करते हुए शोभायात्रा का आकर्षण बनाये रखा। हजारों गुरुभ्राता एवं श्रद्धालुजन कतारबद्ध हो अनुशासित रूप से शोभायात्रा में सम्मिलित थे। सरस्वती नगर, बासनी क्षेत्र के प्रमुख मार्गों से निकलती हुई शोभायात्रा का भव्य नज़ारा देखकर दर्शक भावाभिभूत हो गये। मार्ग में सुज्ञश्रावकों ने स्थान-स्थान पर शीतल पेय के आतिथ्य का लाभ लिया। शोभायात्रा सामायिक स्वाध्याय भवन, सरस्वती नगर स्थानक जाकर सम्पन्न हुई। स्वाध्याय भवन के निकट ही आदर्श विद्या मंदिर के प्रांगण में शोभायात्रा में सम्मिलित मुमुक्षु बहिन उनके वीर परिवारजनों तथा उपस्थित महानुभावों ने दर्शन-वन्दन के साथ आचार्यप्रवर से मंगल पाठ श्रवण किया।

अभिनन्दन समारोह

विरक्ता बहिन सुश्री कान्ता जी पींचा एवं वीर परिवारजनों का अभिनन्दन एवं बहुमान का कार्यक्रम श्री ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर जोधपुर एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में सुहस्ती भवन, सरस्वती नगर में रखा गया।

अभिनन्दन-समारोह की अध्यक्षता रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, जयपुर ने की। माननीय न्यायमूर्ति डॉ. विनीत जी कोठारी, न्यायाधिपति-राजस्थान उच्च न्यायालय मुख्य अतिथि थे। संभागीय आयुक्त श्री आर.के.जैन एवं जोधपुर डिस्काम के प्रबन्ध निदेशक श्री बी.एल. खमेसरा एवं शहर विधायक माननीय श्री कैलाश जी भंसाली का विशिष्ट अतिथि के रूप में सान्निध्य प्राप्त हुआ। संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलालजी बाफना-जलगाँव, संघ कार्याध्यक्ष माननीय श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल-चेन्नई, संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर, श्री ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर के संरक्षक माननीय श्री इन्दरचन्द जी देशलहरा एवं श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष माननीय श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई को ससम्मान आमन्त्रित कर मंच की शोभा बढ़ायी गई। मंच पर विरक्ता बहिन के साथ ताउ-ताई, माता-पिता एवं परिवारजनों को भी आत्मीयता के साथ आमन्त्रित कर मंचासीन किया गया।

सुहस्ती भवन का विशाल मंच एवं पाण्डाल अत्यन्त भव्यता लिए हुए था। मंच के सामने श्रावक-श्राविकाओं के बैठने के लिए कुर्सियाँ कतारबद्ध रखी हुई थीं। समारोह में उपस्थित विशाल जनमेदिनी ने अभिनन्दन-कार्यक्रम का आनन्द लिया। अभिनन्दन समारोह के मंगलाचरण की प्रस्तुति करते हुए सुश्री हर्षिता जी कवाड़ ने नवकार मंत्र का उच्चारण किया।

स्वागत गीत सुश्री नम्रता कांकरिया, संगीता, अनिता, ममता एवं पूजा ने प्रस्तुत किया। जिसके बोल थे -

हम जो बुलायें आप पधारे, स्वागत है अभिनन्दन हैं।

श्री ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर के अध्यक्ष माननीय श्री भंवरलाल जी चौपड़ा ने अतिथियों, दीक्षार्थी बहिन एवं वीर परिवारजनों के प्रति संघ की ओर से संक्षेप में, किन्तु प्रभावी शब्दों में स्वागत भाषण तो दिया ही,

सरस्वती नगर संघ में मुमुक्ष कान्ता जी पींचा की भागवती दीक्षा के सुयोग को आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की अत्यन्त कृपा का सुफल बताया। संतरत्नों के सान्निध्य एवं महासती मण्डल के अच्छी संख्या में सुयोग को सरस्वती नगर श्रीसंघ की पुण्यवानी बताते हुए वीर परिवार की भावना को अनुकरणीय बताया।

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर द्वारा मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों का स्वागत-सम्मान माला,शॉल एवं साफे द्वारा किया गया, वहीं सरस्वती नगर संघ द्वारा रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा का माल्यार्पण से स्वागत, शॉल एवं साफे से बहुमान किया गया।

वीर परिवार के ताउ-ताई, माता-पिता तथा परिवारजनों का माल्यार्पण, शॉल/चून्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान तो किया ही गया, रत्नसंघ की ओर से रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन ससम्मान भेंट किया गया।।

संघ द्वारा विरक्ता बहिन कान्ता जी पींचा का माल्यार्पण एवं चून्दड़ी से सम्मान सुश्राविका श्रीमती सज्जन जी चौपड़ा द्वारा किया गया। अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर संघ द्वारा निर्मित अभिनन्दन पत्र का वाचन जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने किया एवं मंचासीन अतिथियों द्वारा मुमुक्षु बहिन को अभिनन्दन-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विरक्ता बहिन सुश्री कान्ता जी पींचा ने संयम-साधना के प्रति अपने मनोभावों को सशक्त प्रस्तुति दी। **मुमुक्षु बहिन सुश्री कान्ता जी पींचा** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि यह अभिनन्दन मेरा नहीं वरन् उनका है जिन्होंने मुझे त्याग, वैराग्य, संयम में बढ़ने हेतु प्रेरित किया। मैं सन् 2007 में गुरुणी जी श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सरस्वतीनगर चातुर्मास में स्थानक में प्रतिक्रमण सीखने गई। प्रेरणा ऐसी मिली कि फिर दशवैकालिक के 4 अध्ययन सीखे एवं संयम लेने का निर्णय भी उसी चातुर्मास में कर लिया। प्राणिमात्र के प्रति करुणा, दया का भाव जागृत होने पर ही संयम के भाव दृढ़ होते हैं। आप सब मुझे आशीर्वाद दें कि मैं शीघ्र ही मुक्तिगामी बन सकूँ। मेरे माता-पिता ने मुझे सहर्ष संयम की स्वीकृति दी। मैं सभी पदाधिकारियों से, माता-पिता से, परिवारजनों से, समाज से क्षमायाचना करती हूँ। गुरुकृपा से संयम ग्रहण करने का अनमोल अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। यह सब इन महापुरुषों की कृपा का सुफल है।

मुमक्षु बहिन सुश्री कान्ता जी पींचा के भानजे **श्री अभिषेक जी कोठारी** ने किक्रेट खेल के साथ संयम भावना को जोड़ते हुए अपने विचार प्रस्तुत किये, वहीं भानजे **श्री अखिलेश जी कोठारी** ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा– जय गुरु हीरा, जय गुरु मान, कान्ता मौसी को सादर प्रणाम।

विरक्ता बहिन के समधि जी श्री सुनील जी सांखला, चेन्नई ने संयम की महत्ता प्रकट की। कान्ता जी की भाभीएँ श्रीमती मीनाक्षी जी एवं आशा जी पींचा ने दीक्षा को पाप निवारक बताते हुए विरक्ता बहिन की संयम भावना के प्रति प्रमोद व्यक्त किया।

वहीं दूसरी भाभी श्रीमती सरिता जी पींचा ने सुन्दर गीतिका प्रस्तुत की, जिसके बोल थे– आज अभिनन्दन है, बहना कल तुम्हें वंदन है।

श्री ओसवाल समाज, सरस्वती नगर के मंत्री श्री पारसमल जी ओस्तवाल ने भी हार्दिक उद्‌गार व्यक्त कर सबका स्वागत–अभिनन्दन किया।

श्री ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर संघ के उन्नयन एवं विकास में विशेष उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करने के उपलक्ष्य में माननीय श्री मोहनलाल जी देशलहरा, श्री रावलचन्द जी चौपड़ा, श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, श्री इन्दरचन्द जी देशलहरा, श्री घेवरचन्द जी भण्डारी आदि महानुभावों का माला, शॉल एवं साफे से सम्मान किया गया।

विशिष्ट अतिथि माननीय श्री बी.एल. खमेसरा ने दीक्षार्थी बहिन को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि अन्धकार से प्रकाश की यात्रा है दीक्षा, विनय विवेक का मोती है दीक्षा। संसार के समस्त नाटकों का पटाक्षेप करने का नाम है दीक्षा, आत्मा का परमात्मा से साक्षात्कार कराने का नाम है दीक्षा। कान्ता जी के हृदय में ज्ञान के जो सूक्ष्म अणु हैं वे विराट्‌ता को ग्रहण करें।

विशिष्ट अतिथि श्री आर.के. जैन साहब ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूँ कि विरक्ता बहिन के अभिनन्दन कार्यक्रम में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आज हम बहिन का अभिनन्दन कर रहें है कल ये वन्दनीय हो जायेंगी, और आगे पूजनीय हो जायेंगी। मैं क्या हूँ, कौन हूँ, इसका विचार आवश्यक है। कल क्या होने वाला है, पता नहीं। कभी भी अनहोनी हो सकती है, इसलिए जीवन को संयम के सन्मार्ग पर लगाने में ही सार्थकता है।

संघ–संरक्षक मण्डल के संयोजक **माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत** ने

अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जिसको हम त्याग गिनते हैं वह त्याग नहीं है। मालिकपना छोड़ने पर त्याग होता है। बहिन कान्ता जी ज्ञान-दर्शन-चारित्र में निरन्तर आगे बढ़ेगी, ऐसा विश्वास है। वीर परिवार का भी अभिनन्दन है। उन्होंने अपने कलेजे के टुकड़े को संघ में समर्पित किया है। हमारे भीतर में प्रेरणा जगे, इस हेतु अभिनन्दन है। हम ज्ञान-दर्शन-चारित्र की वृद्धि में उनका सहयोग करें। मोह व अज्ञान के वशीभूत होकर उन्हें गिराने का प्रयास न करें। अम्मापियरो के दायित्व का निर्वहन करें।

शहर विधायक **माननीय श्री कैलाश जी भंसाली**, जोधपुर ने कहा कि भगवान महावीर ने सत्य, अहिंसा व त्याग का मार्ग प्रदान किया। उस मार्ग पर बहिन कान्ता जी पींचा आगे बढ़ रही हैं, यह स्तुत्य ही नहीं अनुकरणीय है। आप अपने गुरु व गुरुणी जी का नाम रोशन करें, इन्हीं मंगल भावों के साथ।

शासन सेवा समिति के संयोजक **माननीय श्री रतनलालजी बाफना** ने मुमुक्षु बहिन को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि मेरी ही जन्म भूमि में जन्म लेकर इस बालिका ने महान कार्य किया है, वह अभिनन्दनीय है। अगर संसार में सुख होता तो जम्बुकूमार अपनी पत्नियों के साथ संयम अंगीकार नहीं करते।

मुख्य अतिथि माननीय डॉ. विनीत जी कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का सम्मान बहन कान्ता जी का है, उनका निश्चय महान है। संसार का एक किनारा दुःखों का है, दूसरा किनारा मोक्ष का है। मोक्ष में जाने का साधन संयम है। वीर परिवार ने भी कान्ता जी के निश्चय का सम्मान किया। अतः वह भी सम्माननीय है। हमारे भीतर भी ऐसा वैराग्य प्राप्त हो।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री ओसवाल समाज, बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर द्वारा अतिथियों को स्मृति चिह्न प्रदान किये गये।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि मुमुक्षु बहिन धन्य है। इनके परिवार वालों को हार्दिक धन्यवाद जिन्होंने अपने कलेजे के टुकड़े को जिनशासन हेतु समर्पित किया है। बहिन कान्ता जी और उसके परिवार वालों ने बहुत बड़ा कार्य किया है। अतः उनका संघ की ओर से हार्दिक आभार। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का भी संघ की ओर से एवं मेरी ओर से हार्दिक आभार। आप सब संघ के अंग हैं , आप संघ के गौरव हैं, अतः आप का पुनः पुनः हार्दिक आभार।

दीक्षा समिति के संयोजक **माननीय श्री पारसमल जी मुथा** ने ओसवाल समाज, सरस्वती नगर की ओर से सभी का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

संघ महामंत्री **श्री पूरणराज जी अबानी** ने भी सभी अतिथियों का, मुमुक्षु बहिन का, वीर परिवार का एवं आगन्तुक दर्शनार्थियों का आभार व्यक्त किया। अभिनन्दन-समारोह की सुन्दर-व्यवस्था के लिए ओसवाल समाज सरस्वती नगर संघ के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं संघ सदस्यों का आभार व्यक्त किया। सरस्वती नगर समाज ने पूर्ण मनोयोग से दीक्षा कार्यक्रम को सफल बनाया। श्राविका मण्डल, बालिका मण्डल, युवक मण्डल एवं समस्त समाज पूर्ण तत्परता से संलग्न रहा।

अभिनन्दन कार्यक्रम का सुन्दर संचालन **श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर** ने किया।

दीक्षा-पाठ

दीक्षा के दिन 5 मई को प्रातः प्रवचन हुआ तथा अपराह्न में पुनः 1.15 बजे प्रवचन सभा प्रारम्भ हुई, जिसमें 2.20 बजे आचार्यप्रवर ने अपने मुखारविन्द से मुमुक्षु कान्ता को दीक्षा पाठ दिया। आचार्यप्रवर ने अपने श्रीमुख से अपराह्न 2 बजकर 20 मिनट पर दीक्षा पाठ की विधि प्रारम्भ की। मुमुक्षु के द्वारा तिक्खुत्तो से तीन बार वन्दना करने के पश्चात् नवकार मंत्र, इच्छाकारेणं, काउस्सग, कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ, लोगस्स का पाठ बोलने के पश्चात् द्वितीय चउवीसत्थव कराया गया एवं पुनः उन्हीं पाठों का उच्चारण करते हुए 'लोगस्स' के पश्चात् 'करेमि भंते' के पाठ से जीवनभर के लिए सावद्ययोग का त्याग कराया गया। दीक्षा पाठ के पूर्व श्रावकों, परिवारजनों से आज्ञा ली गई। आचार्यप्रवर ने 'करेमि भंते' का पाठ देने के साथ ही फरमाया- ''विषयों के दमन का, कषायों के शमन का यह मंत्र सावद्य योगों के त्याग के साथ तीन लोक में पूजनीय बनाने वाला है। इस मंत्र को ग्रहण करने पर साधक षट्काय के जीवों का प्रतिपालक बन जाता है। सेवक से स्वामी बनाने वाला यह मंत्र भव-भव में शान्ति-समाधि देने वाला है जिसे बहिन कान्ता ग्रहण कर रही है। करेमि भंते के पाठ से दीक्षा ग्रहण करने के अनन्तर दो नमोत्थुणं दिए गए। दीक्षा के प्रसंग पर आचार्यप्रवर ने फरमाया- ''संसार में जितनी पीड़ा है, जितना दुःख नज़र आ रहा है, उसका एक मात्र कारण असंयम है। संयम क्या? हिंसा छोड़ना संयम है, झूठ छोड़ना संयम है, अदत्तादान का त्याग संयम है, शील संयम है, अपरिग्रह संयम है अनर्थदण्ड छोड़ना संयम है। आप संयम दीजिए,

उसका अनुमोदन कीजिए, साथ ही जितना सम्भव हो संयम को जीवन में अपनाइए। इस अवसर पर आप त्याग की कितनी भेंट देते हैं, उतने ही आप संयम के नजदीक हैं।''

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी ने फरमाया-''अध्रुव अनित्य यह संसार समस्याओं का भण्डार है। हर जीव समस्याओं से निदान पाना चाहता है। समस्त समस्याओं का समाधान है संयम। संयम वीतरागता का वरण है तथा आत्मा का चमन है। बहिन कान्ता ने बहुत सुन्दर संयम मार्ग का चयन किया है। वह बड़ी भाग्यशाली है।''

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी ने फरमाया- ''संसार का सुख असार है। 'खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा' वाक्य के अनुसार संसार का सुख क्षणमात्र रहता है तथा अधिक काल तक दुःख प्रदान करता है। जिस दिन संसार का स्वरूप समझ में आ जाएगा उस दिन वैराग्य भी जीवन में स्थान ले लेगा। संयम दीप्तिमान एवं प्राणवान तब बनता है जब लक्ष्य समझ में आ जाए। इस प्रसंग पर 4 बातों का संकल्प करना है- (1) जन्म भले ही रोते-रोते हुआ हो, किन्तु मरण हँसते-हँसते होना चाहिए। (2) जन्म भले ही निर्वस्त्र हुआ हो, किन्तु मरण श्वेत वस्त्र में (साधु जीवन में) होना चाहिए। (3) जन्म भले ही अस्पताल में हुआ हो, किन्तु मरण स्थानक में होना चाहिए। (4) जन्म चाहे माँ की गोद में हुआ हो, मरण गुरुचरणों में होना चाहिए। यह सब तब घटित होगा जब हमारा जीवन निवृत्ति प्रधान होगा।''

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी, श्री योगेशमुनि जी, श्री मनीषमुनि जी, श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. तथा श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. ने भी प्रवचन सभा को सम्बोधित किया।

दीक्षा के अवसर पर महासती सिद्धिप्रभा जी, महासती श्री शान्तिप्रभा जी, महासती श्री सरलेशप्रभा जी, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी, साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. ने भी विचाराभिव्यक्ति की। साध्वी प्रमुखा जी ने फरमाया-''अनन्त अनन्त उपकार करके गुरु भगवन्त जोधपुर पधारे, उसका एक मात्र श्रेय बहिन कान्ता को है। आज से 4 वर्ष पूर्व मेरा चातुर्मास सरस्वतीनगर में हुआ। उसमें कान्ता के पिताजी शान्तिलाल जी ने कान्ता को दो रास्ते बताये- एक भोग का, दूसरा योग का। यदि तू योग मार्ग में आगे बढ़ना चाहे तो हमारी स्वीकृति है। बहिन कान्ता ने रात्रि में चौविहार, संवर करना प्रारम्भ किया, उसी का परिणाम है आज वह संयम अंगीकार करने जा रही है।''

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 जून, 2011)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा	: जोधपुर के विभिन्न उपनगरों को अपनी पावन चरण रज से पावन कर रहे हैं।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा	: जोधपुर से विहार कर बावड़ी पधारे हैं। नागौर की ओर विहार संभावित है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा	: शास्त्रीनगर, जोधपुर से में सुख-शांति पूर्वक विराजमान हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: सुखसाता पूर्वक ब्यावर विराज रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: मालवीय नगर, भोपाल में सुख-शांति पूर्वक विराजित हैं।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: सरदारपुरा-जोधपुर में सुख-शांति पूर्वक विराजमान हैं।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	: मदनगंज में सुखशांति पूर्वक विराजमान हैं। जयपुर की ओर विहार संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	: सरदारपुरा, जोधपुर में सुख-शांति पूर्वक विराजित हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	: सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक में सुख-शांति पूर्वक विराजित है।
सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा	: अलीगढ (राज.) में सुख-शांति पूर्वक विराजमान हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा	: वेलेचेरी-चेन्नई में सुख-शांति पूर्वक विराजमान हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा	: चिंगलपेठ सुख-शांति पूर्वक विराजित हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	: मांगोद (म.प्र.) में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। धार की ओर विहार सम्भावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	: सहाडी (जि.अलवर) में सुख-शांति पूर्वक विराजमान हैं। खेरली की ओर विहार सम्भावित है।
महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	: गोटन में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा	: कजगांव (महा.) में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। मांडल की ओर विहार सम्भावित है।

आचार्य श्री हीरा के आचार्य पदारोहण दिवस पर सामूहिक सामायिक-साधना एवं गुणानुवाद

गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा का 21 वाँ आचार्य पद ग्रहण-दिवस ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, रविवार, 22 मई, 2011 को श्री महालक्ष्मी शिक्षण संस्थान, प्रतापनगर, जोधपुर में सामूहिक सामायिक-साधना के साथ उत्साह पूर्वक मनाया गया। अनेक श्रावंक-श्राविकाओं ने प्रवचन पूर्व पाँच-पाँच सामायिक के प्रत्याख्यान कर लिये थे।

प्रवचन-सभा में श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने गुरु हीरा के विशिष्ट गुणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की मंगल वेला में मंगलमय जीवन जीने वाले महापुरुष के गुणगान करने का दिन तो है ही, आचार्यश्री के जीवन से प्रेरणा लेने का दिन भी है। रत्नसंघ के नायक बीस वर्ष से शासन व्यवस्था को संभालते हुए जैन-जैनतर जनसमुदाय को अहिंसा-सत्य-सदाचार के संस्कार देकर आबाल-वृद्ध सबका जीवन-निर्माण कर रहे हैं, ऐसे यशस्वी आचार्य के प्रति हमारी-सबकी शुभभावना है कि आपश्री स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों और संघ को आपका वरदहस्त सदा प्राप्त होता रहे।

महासती श्री रुचिताजी म.सा., महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा., महासती

श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. और तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. ने संक्षेप में, किन्तु प्रभावशाली भाषा-भाव में यशस्वी आचार्यश्री के गुणकीर्तन कर आचार्यप्रवर के दीर्घायु-शतायु होने की मंगलकामना की।

श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने कहा-नमस्कार महामंत्र में आचार्य का स्थान मध्य में रहा हुआ है, अतः आचार्य, अरिहन्त और सिद्ध इन दो पदों से दिशा लेते हैं तथा उपाध्याय और मुनि इन दो पदों को दिशा देते हैं। आचार्य स्वयं आचार धर्म का पालन करते हैं और चतुर्विध संघ को आचार धर्म की पालना करवाते हैं। धर्माचार्य-धर्मगुरु आचार-विहीन लोगों की सुप्त शक्ति को जगाते हैं। उन्होंने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज की तीन विशेषताओं का उल्लेख किया-

1. **सेवा**- आपने अपने गुरुदेव आचार्य हस्ती की निष्काम भाव से तत्परतापूर्वक सेवा की।
2. **समर्पण**- आपने गुरु को गुरु ही नहीं, भगवन्त के रूप में देखा तथा सदैव समर्पित रहे। कभी भी गली नहीं निकाली।
3. **संयमनिष्ठा**- आप स्वयं पंच आचारों का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं तथा अपनी निश्रा के साधु-साध्वियों से निरतिचार पालन कराते हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य का प्रारम्भ गुरुस्तुति से इस प्रकार किया-

गुरुवर तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाए।
सच कहता हूँ मेरी तकदीर बदल जाए।।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना ने कहा कि गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा ने संघ की धरोहर को अच्छी तरह सम्हाला है तथा चतुर्विध संघ को आगे बढ़ाया है। संघ को दिशा प्रदान की है। सूर्यनगरी पर आपश्री ने महती कृपा की, आप एक-एक उपनगर-कॉलोनी-क्षेत्र में विचरण-विहार की क्रमबद्धता बनाए रखते हुए जन-जन को ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना में जोड़कर संघ की जाहोजलाली कर रहे हैं, हम-सब आपके उपकारों के प्रति सदा उपकृत रहेंगे। संघाध्यक्ष महोदय ने आचार्य श्री के समर्पण भाव एवं निस्पृहता के सम्बन्ध में कहा कि आचार्य श्री ने बातचीत में मुझे बताया कि- मैंने कभी किसी भक्त को अपने से नहीं जोड़ा, गुरुदेव से एवं धर्म से जोड़ा।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने पीपाड़ के कविरत्न स्व. श्री प्यारेलालजी कांकरिया द्वारा रचित भजन 'श्रमणों में श्रेष्ठ सुधीर हो' का हार्द रखते

हुए फरमाया कि संयम में रुचि वाला नायक ही सफल होता है। साथ में दृढ़ श्रद्धा एवं आत्मबल आवश्यक है। ये सभी गुण आचार्य हीरा में परिलक्षित होते हैं। परमाराध्य परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. ने जीवन के अन्त समय में दो मुख्य बातें कही। अपने लिए भगवन्त ने कहा-मैं खाली हाथ न चला जाऊँ और चतुर्विध संघ के लिए कहा कि क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज की समाचारी का पालन करना। गुरु हस्ती के अन्तिम शब्द थे-संघ का गौरव रखना,परस्पर प्रेम रखना।आचार्य हीराचन्द्र जी ने उनके वचनों को निभाया है। गुरु हस्ती के पट्टधर आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज को इसी जोधपुर में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी रविवार 2 जून, 1991 को आचार्य पद की चादर ओढ़ाई गई। आचार्य पद की प्राप्ति के पश्चात् 7 जून को युवा श्री कैलाशमुनिजी का देवलोक-गमन हो गया। निमाज की समस्या सामने आई, कहना होगा चादर महोत्सव के बाद कई तूफान आए, कई झंझावत उपस्थित हुए, पर आपश्री ने धीरता के साथ संयम के गौरव का रक्षण ही नहीं, संवर्धन किया। आपने धीरता से एक-एक विपदा का समाधान निकाला।

1992 के बालोतरा चातुर्मास में भवन के नामकरण को लेकर संघ में हलचल-सी मच गई, रात्रि में संघ के पदाधिकारियों ने आकर पूछा तब आपका उत्तर था कि मेरे गुरु ने सिवांची पट्टी का मनोमालिन्य मिटाकर प्रेम की गंगा बहाई है, इसलिए मैं नहीं चाहता कि मेरे निमित्त से संघ में कोई विवाद खड़ा हो। आपश्री द्वारा प्रदत्त समाधान से सबको सन्तुष्टि हुई।आज साधन बढ़ रहे हैं। बड़े-बड़े श्रावक और श्रीसंघ आपश्री से निवेदन करते रहते हैं कि डोली के बजाय व्हीलचेयर उपयोग में लाई जाये तो क्या हर्ज है ? आचार्यश्री का चिन्तन रहता है कि साधक कमजोर न हो, साधक सुविधाभोगी न बनें। जब बड़े-बड़े श्रावक निवेदन करते हैं उस समय सन्तुलन बनाए रखना मुश्किल होता है, पर आचार्यश्री बिना लाग-लपेट के अपना स्पष्ट अभिमत रखने में संकोच नहीं करते। आप अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में संघ को सदा सही निदान प्रस्तुत करते हैं। आज जहाँ परिवार की मर्यादा एवं गौरव सुरक्षित नही रख पाते, वहाँ आचार्यप्रवर ने संघ की मर्यादा को सुरक्षित रखा। हम संयम को सुरक्षित रखते हुए साधना-मार्ग में आगे बढ़ें।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने हृदयोद्गार रखते हुए फरमाया कि मैंने यह चादर ली नहीं है, चतुर्विध संघ ने मिलकर दी है, और यह कह कर दी गई कि चारों संघ की शोभा बढ़ाने में चादर के एक-एक तार की तरह हम आपके साथ आपको

हर स्थिति में सहयोग देंगे। चार संघ हैं-साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। चार कोने हैं-श्रद्धा, समर्पण, स्वाध्याय और सामायिक। मैं अपना चिन्तन करूँ, आप अपना चिन्तन करना कि हम संघ की शोभा बढ़ाने में श्रद्धा और समर्पण का भाव रखकर चल रहे हैं या नहीं ?श्रद्धा, समर्पण और सेवा में कोई शर्त नहीं होती। आप जरा अपना चिन्तन तो कीजिये कि जिस सामायिक और स्वाध्याय को आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज ने देश में ही नहीं, विदेश तक में पहुँचाया, क्या उनके भक्त आप श्रावक-श्राविकाएं सामायिक-स्वाध्याय के संवर्धन में प्रयास कर रहे हैं ? आप जरा यह चिन्तन तो करें कि हमारी श्रद्धा कितनी बढ़ रही है? कहीं इसमें मैं और मेरे की रेख तो नहीं आ रही?

समय के साथ विस्मृति संभव है। कदाचित् मद्रास-बैंगलोर वाले भूल जायें, उसमें अचम्भा नहीं, पर जोधपुर वाले भूल जायें तो यह आश्चर्य की बात है। दूर रहने वाले शायद ध्यान नहीं रख पायें, पर आपने अपनी आंखों से देखा है, स्वयं हाथ रखकर चादर ओढ़ाई है तो संघ की उन्नति के लिए, संघ के रक्षण और संवर्धन के लिए, संघ की दीप्ति के लिए जोधपुर वाले जिस उमंग और उत्साह से आगे रहे हैं उसमें आप अपने कार्यकलापों से, आचार-विचार-व्यवहार से और प्राण-प्रण से निभाने की कोशिश कर रहे हैं, या नहीं ? आप सेवा और समर्पण से संघोन्नति में चार चांद लगाने की कोशिश करें तो आपका यहाँ आना, सुनना, अनुमोदना करना सार्थक होगा। समय सीमित है, इसलिए संक्षेप में कहना चाहता हूँ कि संघ व्यक्ति के विचारों से नहीं व्यवहार से चलता है। आपका व्यवहार, आपकी भावना जितनी उत्कृष्ट होगी और वह आचरण में आयेगी तब ही आप पंचाचार के पालन में सहयोगी बन सकेंगे।

आचरण अमृत है। आप अमृत की बून्दों को सुरक्षित रखना चाहो तो अपने विचार ही नहीं व्यवहार को भी उन्नत बनाकर रखना। जंगल में आग लगने पर एक चिड़िया अपनी चोंच में पानी की बूंद भरकर आग पर डालती है। पास बैठे कौए ने पूछा-तू बड़ी भोली है, तेरी एक बूंद कहाँ काम आयेगी ? चिड़िया बोली- मेरी बूंद कितना काम करेगी, यह तो मैं नहीं जानती, पर लोग मुझे आग बुझाने वालों की गिनती में शुमार करेंगे, आग लगाने वालों की गिनती में नहीं।

आपके विचार आपके व्यवहार में, व्यवहार आचरण में उतर जायेगा तो आप संघ की उन्नति में निमित्त बन सकेंगे। आप अपना चिन्तन करना।

आचार्यप्रवर के मंगल उद्बोधन के अनन्तर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

एवं प्रतापनगर क्षेत्र की ओर से प्रवचन सभा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं का आभार व्यक्त किया गया। कल जैसे सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी गुन्देचा ने सपत्नीक शीलव्रत का खंद किया, आज सुश्रावक श्री मनसुखलालजी कोठारी ने जीवनपर्यन्त कुशील-सेवन का त्याग कर अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया। नित्य की भांति उपवास, एकासन, आयंबिल आदि तपश्चर्याओं के प्रत्याख्यान हुए, तदनन्तर पूज्य गुरुदेव ने मंगल पाठ सुनाया।

प्रवचन सभा में सैंकड़ों भाई सामायिक-साधना में दत्तचित्त हो प्रवचन श्रवण के लाभ से लाभान्वित हुए, वहीं युवकों की रविवारीय सामूहिक साधना आचार्यश्री के पावन श्री चरणों में हुई। मध्याह्न में शास्त्रवाचन, सायं प्रतिक्रमण में क्षेत्रवासियों का अच्छा उत्साह रहा।

उपाध्यायप्रवर के 49 वें दीक्षा-दिवस पर तप-त्याग एवं गुणानुवाद

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज के 49 वें दीक्षा-दिवस पर वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 15 मई, 2011 को जोधपुर के चौपासनी हाउसिंग बोर्ड में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में तथा घोड़ों का चौक में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में तप-त्याग, दया-संवर, उपवास-पौषध आदि की आराधना हुई। गुणानुवाद सभा में सन्तप्रवरों एवं महासती वृन्द में उपाध्यायप्रवर की विशेषताओं को रेखांकित किया। आचार्यप्रवर ने फरमाया- उपाध्यायप्रवर का जीवन सद्गुणों का पुंज है। उनमें संयम-साधना के प्रति सजगता, सरलता, सहजता आदि ऐसे गुण हैं जो साधक की साधना को सफल बनाते हैं। हम विषम परिस्थितियों में भी सहज रहेंगे तो कर्म काटने में समर्थ होंगे। यहाँ तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी, श्रद्धेय योगेशमुनि जी, श्री मनीषमुनि जी, शासन प्रभाविका श्री मैना सुन्दरी जी आदि ने भी उपाध्यायप्रवर के जीवन की विभिन्न विशेषताओं पर प्रकाश डाला। घोड़ों का चौक में मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी, श्री लोकचन्द्र मुनि जी, श्री जितेन्द्र मुनि जी, महासती श्री सरलेश प्रभा जी, रक्षिता जी, निरंजना जी आदि ने भी उपाध्याय प्रवर की संयम-साधना, गम्भीरता, धीरता, अल्पभाषिता आदि गुणों का कथन किया। उपाध्यायप्रवर ने इस अवसर पर अपने गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती के उपकारों का स्मरण किया तथा साधना में दृढ़ता के लिए चतुर्विध संघ के सहयोग की कामना की।

अक्षयतृतीया पर 62 पारणक एवं नये व्रत-प्रत्याख्यान

वैशाख शुक्ला तृतीया, 6 मई 2011 को सरस्वतीनगर के आदर्श विद्या मंदिर प्रांगण में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., सन्तप्रवरों, साध्वी प्रमुखा शासन प्रभाविका महासती श्री मैना सुन्दरी जी म.सा. एवं महासतीवृन्द के सान्निध्य में तप एवं दान का पर्व 'अक्षयतृतीया' तप-त्याग एवं व्रत-नियम के साथ मनाया गया। आचार्यप्रवर हस्तीमल जी महाराज का अक्षय तृतीया के दिन ही आचार्यपद पर आरोहण हुआ था। अतः सन्तों एवं महासती वृन्द ने समागत हजारों श्रावक-श्राविकाओं को जीवन में आगे बढ़ने हेतु व्रत-नियम एवं तप-त्याग स्वीकार करने की प्रेरणा की। श्री योगेशमुनि जी ने फरमाया कि तप में जीवन की सारी समस्याओं का समाधान छिपा हुआ है। मनुष्य को अपने जीवन को मोड़ देने के लिए पाँच चीजें त्यागनी होंगी- 1. चाय, 2. चीनी-मिठाई, 3. चरपरा, 4. चाट और 5. काम-सेवन। इन्द्रियों पर विजय जीवन-विकास की प्रथम सीढी है। मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी ने फरमाया कि आज का प्रसंग भव्य प्रेरणा एवं उत्तम सीख लेकर उपस्थित हुआ है। तप तो तत्काल पवित्र करता है, किन्तु इसमें आहार त्याग के साथ आस्रव का निरोध भी होना चाहिए। वर्तमान में तपस्याओं का वृहत् रूप देखने को मिलता है। यह दान का भी पर्व है और दान अमृत का झरना है। आचार्य हस्ती के पदारोहण दिवस पर उन्होंने कहा कि आचार्य हस्ती जब आहार करने बैठते एवं उन्हें उनके शरीर के अनुकूल कोई वस्तु होती तो उसे भी अन्य संतों को बांटकर खाते। पूछने पर कहते- भाई! मेरा नाम हाथी है। हाथी उछाल-उछाल कर खाता है। कोई तो पद से पूजा जाता है, किन्तु उनसे पद पूजित हुआ। उनका जीवन पद और पदवी से अनासक्त था। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया कि मुक्ति के लिए सरल से सरल रास्ता भगवान ने तप का बताया। पौरसी, आयम्बिल, उपवास आदि सब तप के रूप हैं। किन्तु भूखा रहना मात्र तप नहीं है, मन के विकारों का त्याग आवश्यक है। 32 वर्ष की युवावय में भी ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करने वाले श्रावक हुए हैं। वर्षों से पति-पत्नी एकान्तर कर रहे हैं। उनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

तपस्वी भाई-बहिन जिनके वर्षी तप चल रहे है उनमें से कईयों ने तप-साधना की वृद्धि का नियम अंगीकार किया। तो कतिपय नये प्रत्याख्यान भी हुए। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर, प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रवचन के पश्चात् सु हस्ती

भवन सरस्वती नगर, के तप साधकों एवं उनके पारिवारिक परिजनों के बैठने की व्यवस्था भी ओसवाल समाज बासनी क्षेत्र सरस्वती नगर श्री संघ द्वारा की गई। प्रवचन के पश्चात् सभी तपस्वी भाई-बहिन अपने नियत स्थान पर विराजे। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में संघाध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर, कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल-चेन्नई, संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी एवं ओसवाल समाज बासनी क्षेत्र, सरस्वती नगर के संरक्षक माननीय श्री इन्दरचन्द जी देशरला, श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, अध्यक्ष श्री भंवरलाल जी चौपड़ा, मंत्री श्री पारसमल जी ओस्तवाल एवं पारणा समिति के संयोजक श्री जवाहरलाल जी मुणोत आदि स्थानीय संघ के पदाधिकारियों ने तपसाधकों की सुख शांति की पृच्छा के पश्चात् ईक्षु रस का पान करवाया और संघ की ओर से तपस्वियों के सम्मान में स्मृति चिह्न भेंट कर उनका अभिनन्दन किया।

संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं पदाधिकारियों तथा संघ-सेवी श्रावक-श्राविकाओं ने भी तप-साधकों को ईक्षु रस का पान करवाने के अनन्तर तप की अनुमोदना में भेंट स्वरूप स्मृति चिह्न प्रदान किए। तपसाधकों के पारिवारिक परिजनों ने हर्षित, उल्लसित मन से तप की अनुमोदना में तपस्वियों का स्वागत, सत्कार एवं बहुमान किया। प्रवचन, पारणा, भोजन आदि सभी व्यवस्थाएँ समीप थी। सरस्वती नगर के श्रावकों, श्राविका-मण्डल एवं बालिका-मण्डल एवं युवकों सभी ने व्यवस्था में उत्साह से योगदान किया।

पारणा करने वालों की सूची

श्रीमती रेशमीबाई इंद्रचन्द जी देसरला-जोधपुर, श्रीमती अकलकंवर इंद्रचन्द जी सिंघवी-जोधपुर, श्रीमती सज्जनकंवर जीतमल जी बालड़-जोधपुर, श्रीमती सुधा ए.एम. जैन-जोधपुर, श्रीमती कमला पारसमल जी मोहनोत-जोधपुर, श्रीमती किरणकंवर सोहनलाल जी सिंघवी-जोधपुर, श्रीमती तारादेवी भंवरलाल जी गोगड-जोधपुर, श्रीमती कंचन सुमेरमल जी कांकरिया-जोधपुर, श्रीमती पदमकला पारसमल जी कांकरिया-जोधपुर, श्रीमती पानीदेवी रणछोडमल जी चौपड़ा-जोधपुर, श्रीमती अमृतकंवर पारसमल जी गिडिया-जोधपुर, श्रीमती प्रेम धर्मपत्नी स्व. श्री दीवानचन्द जी भण्डारी-महामन्दिर, जोधपुर, श्रीमती चन्द्राबाई देवराज जी रांका-महामंदिर, जोधपुर, श्रीमती शांतिबाई धर्मपत्नी स्व.श्री प्रकाशचन्द जी चौपड़ा-सरदारपुरा, जोधपुर, श्रीमती चन्द्रा जी धर्मपत्नी श्री पी.सी. अबाणी-चौ.हा.बोर्ड,जोधपुर, श्रीमती कपूरीदेवी फूलचन्द जी जैन-जोधपुर, श्रीमती राजकुमारी सुराणा-बीकानेर, श्रीमती स्नेहलता प्रकाशजी गांधी-अमरोली, सूरत,

श्रीमती सरला जी छाजेड़-गांधीनगर, श्री हस्तीमल जी सुराणा-कोलकाता, श्रीमती बसंतीदेवी हस्तीमल जी सुराणा-कोलकाता, श्रीमती रतनदेवी विजयराज जी सुराणा-कोलकाता, श्रीमती मनिका राजेन्द्र जी श्यामसुखा-मुम्बई, श्रीमती संपतदेवी सुमेरमल जी मेहता-बेंगलूरु, श्रीमती कांता बहन धर्मपत्नी श्री दगडुलाल जी कांकरिया-नंदूरबार, महाराष्ट्र, श्रीमती चंचल राजेन्द्र जी भण्डारी-चेन्नई, श्रीमती आयचुकीदेवी किस्तूरचन्द जी बाघमार-पीपाड़ शहर, श्रीमती राजुला अशोक जी भण्डारी-पीपाड़शहर, श्रीमती विमलाबाई कमलजी बोहरा-पीपाड़ शहर, श्रीमती उगमाबाई अमरचंद जी बोहरा-पीपाड़शहर, श्रीमती रेखा परम जी लुणावत-पीपाड़शहर, श्रीमती सुमित्रा धर्मेन्द जी चौधरी-पीपाड़ शहर, श्रीमती शीलादेवी रतनलाल जी लोढ़ा-पीपाड़शहर, श्रीमती देवीकंवर रमेश जी बाघमार-पीपाड़शहर, श्रीमती कमलादेवी भंवरलाल जी पींचा-भोपालगढ़, श्रीमती प्रेमदेवी सोहनलाल जी बोथरा-भोपालगढ़, श्रीमती शांति देवी जी ललवाणी-मेड़तासिटी, श्री गौतम जी-हैदराबाद, श्रीमती राजेश त्रिलोक जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती प्रियदर्शना राजेन्द्रप्रसाद जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती संतोष देवी सुबाहु कुमार जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती रूपादेवी गणपतलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती चमेली देवी नरेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती शर्मिलादेवी मांगीलाल जी चोरडिया-चेन्नई, श्री ज्ञानचन्द जी ओस्तवाल-चेन्नई, श्रीमती ज्ञानचंद जी ओस्तवाल-चेन्नई, श्रीमती विमला माणकचन्द जी रांका-अजमेर, श्रीमती उर्मिला प्रकाशचन्द जी रांका-अजमेर, श्री प्रकाशचन्द जी रांका-अजमेर, श्रीमती लीला भंवरलाल जी बागरेचा-बालोतरा, श्रीमती काजूदेवी चौपड़ा-बालोतरा, श्रीमती लीलादेवी जवरीमल जी छाजेड़-बालोतरा, श्रीमती शांतिदेवी भंवरलाल जी गोलेछा-बालोतरा, श्रीमती आशा भीकमचंद जी मोहनोत-बागबहरा, छतीसगढ़, श्रीमती शकुंतला रतनलाल जी रांका-सेलाना, श्रीमती लाडजी बाई धनराज जी लोढ़ा-कानपुर, श्रीमती पुष्पा जी भण्डारी-कमला नेहरू नगर, जोधपुर, श्रीमती शशि महावीर राज सा मेहता-बैंगलूरु, श्रीमती विनिता पपैयालाल जी -पीपाड़ शहर, श्रीमती विमला बाई विमलचन्द जी-जयपुर, श्री अशोककुमार सुपुत्र श्री मांगीलाल जी-ब्यावर, श्री ओमप्रकाश जी परमार-ब्यावर।

नवदीक्षिता कान्ता जी म.सा. की बड़ी दीक्षा सानन्द सम्पन्न

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., महान अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 16 एवं साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.आदि ठाणा

के पावन सान्निध्य में सूर्यनगरी जोधपुर के गुलाबनगर में वैशाख शुक्ला 9, दिनाँक 12 मई, 2011 को प्रातः 9 बजे नवदीक्षिता महासती श्री कान्ता जी म.सा. की बड़ी दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रवचन सभा में छेदोपस्थानीय चारित्र का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए फरमाया कि जैन भागवती दीक्षा आपने 5 मई को सरस्वती नगर में देखी थी वह सैद्धान्तिक दीक्षा थी, आज महासती कान्ता जी को छेदोपस्थानीय चारित्र में आरूढ़ कराया जा रहा है। कोई व्यक्ति पुलिस में भर्ती होता है तो उसे ट्रेनिंग दी जाती है। इसी तरह नव संत या सती हो उसे पहले ट्रेनिंग दी जाती है कैसे बैठना, कैसे खड़ा रहना, कैसे खाना, कैसे पीना, कैसे सोना यह सब ट्रेनिंग के अन्तर्गत देखा जाता है। साध्वी जी ने सात दिन की ट्रेंनिग में पाँच समिति-तीन गुप्ति, पाँच महाव्रत के पालन के साथ छःकाया के जीवों की रक्षा कैसे करना, यह समझ लिया है। इसलिए इन्हें आज छेदोपस्थानीय चारित्र में आरूढ़ कराया जा रहा है।

आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र से लेकर एक-एक सूत्र पाठ का उच्चारण किया। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम चार अध्ययन के उच्चारण के साथ एक-एक महाव्रत का स्वरूप समझाया। पृथ्वीकाय, अपकाय्, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय विषयक अब तक लगे पापों की निंदा गर्हा द्वारा शुद्धीकरण के साथ साधक हर क्रिया करते हुए यतना का कैसे ध्यान रखे, चिन्तन प्रस्तुत किया। संसार के सब जीवों को अपने समान समझना हर प्राणी की प्राणरक्षा का भाव रखना और सभी जीवों के साथ आत्मवत् व्यवहार करना साधक के लिये क्यों आवश्यक है, विस्तार से समझाया।

आचार्यप्रवर ने जीव-अजीव के स्वरूप के साथ ज्ञान और क्रिया विषयक चिन्तन रखते हुए क्रोध, मान, माया, लोभ से किनारा कर सिद्ध स्वरूप तक की व्याख्या की तथा सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास के साथ अनुकूलता, प्रतिकूलता से समभावपूर्वक रहकर परीषहजयी बनने की प्रेरणा प्रदान की।

छेदोपस्थानीय चारित्र में आरूढ़ करवाकर आचार्यप्रवर ने नवीदीक्षित साध्वी जी का नाम यथावत् रखने की घोषणा करते हुए नवदीक्षिता साध्वी जी का नामकरण **महासती श्री कान्ता जी म.सा.** किया। नाम की घोषणा होते ही कान्ता जी म.सा. की जय-जयकार से संघ सदस्यों ने पांडाल को गुंजायमान कर दिया।

कार्यक्रम संचालक द्वारा आगन्तुक महानुभावों का एवं गुलाबनगर श्री संघ के समस्त पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय आयोजकों का आचार्यप्रवर श्री

हस्तीमल जी म.सा. के स्मृति-दिवस एवं बड़ी दीक्षा दोनों दिन की सुन्दर-समुचित व्यवस्था हेतु आभार व्यक्त किया। गुलाबनगर क्षेत्र में आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सती मण्डल के विराजने से धर्मध्यान का ठाट लगा रहा। मुनिमंडल एवं महासती मण्डल का पावन सान्निध्य प्राप्त कर गुलाबनगर वासी सभी प्रफुल्लित थे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने गुलाबनगर प्रवचन सभा में अपने स्वयं का चातुर्मास लक्ष्मीनगर खुला रखते हुए पावटा के लिए स्वीकृत किया। वहीं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास पीपाड़ शहर एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास वैशाली नगर, अजमेर के लिए स्वीकृत किया।

आराध्य आचार्य हस्ती के 20 वें पुण्य-दिवस पर तप-त्याग के साथ देश-विदेश में कार्यक्रम

जोधपुर- अध्यात्म योगी, युग मनीषी आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का 20 वां पुण्य-दिवस वैशाख शुक्ला अष्टमी को गांव-गांव नगर-नगर में मनाया जाता है। जहाँ आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर, संत-सतीवृन्द विराजते हैं वहाँ त्याग-तप के प्रति जनमानस का विशेष उत्साह रहता है। जोधपुर शहर के विभिन्न क्षेत्रों से एवं बाहर गांव से श्रद्धालुओं ने गुलाबनगर जोधपुर में 11 मई, 2011 को आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के पावन श्री चरणों में पहुँचकर प्रतिपल स्मरणीय पूज्य आचार्य भगवन्त के गुण-स्मरण, गुण-कीर्तन किए। कई श्रावक श्राविकाओं ने पांच-पांच सामायिक की साधना की, एकाशन, उपवास व दया-संवर की आराधना हुई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने फरमाया कि अनन्त प्राणी हर समय जन्म लेते हैं, किन्तु उनके जीवन से जन्म-मरण को याद किया जाता है। पूज्य गुरुदेव ने दीक्षा लेने के साथ "खण निकम्मो रहणो नहीं, करनो आतम काम", गुण को जीवन में चरितार्थ किया। परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन में हम सबको बतला दिया कि जिन्हें भी अपना जीवन बनाना है वे क्षण मात्र का प्रमाद न करें। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा. आदि संत मण्डल ने आचार्य भगवन्त के यशस्वी जीवन पर प्रकाश डाला।

साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेश प्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विनीत

प्रभा जी म.सा. आदि सती-मण्डल ने भी गुरुदेव के प्रेरणादायी जीवन के अनेक गुणों को प्रकाशित करते हुए गुणग्राम किए।

एकाशन, संवर, दया, उपवास आदि आराधना के साथ आचार्यप्रवर का पुण्य-स्मृति दिवस त्याग-तप एवं धर्म-ध्यान के साथ मनाया गया। गुलाबनगर श्री संघ ने आगन्तुक महानुभावों के आतिथ्य सत्कार एवं सेवा का लाभ प्राप्त किया।

बैंगलोर- आचार्य हस्ती के पुण्य स्मृति दिवस पर 11 मई 2011 को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलुरु के तत्त्वावधान में महावीर भवन, अशोकनगर में सामूहिक दो-दो सामायिक साधना कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल ने कहा कि पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज एक युगद्रष्टा आचार्य थे। उन्होंने जैन समाज की नब्ज को पहचाना और समग्र भारत वर्ष में 'सामायिक-स्वाध्याय' का शंखनाद किया। सम्पूर्ण देश में पदविहार कर उन्होंने महावीर वाणी को प्रचारित किया। वे अप्रमत्त साधक, गुणग्राही, विद्वान् एवं सिद्धान्तप्रिय आचार्य थे। उनका अन्य अनेक सन्तों एवं आचार्यों से आत्मीय सम्बन्ध रहा। श्री शान्तिलाल जी डूंगरवाल ने गद्य व पद्य में भावाभिव्यक्ति की। स्वाध्यायी श्री नवरतनमल जी भंसाली ने भी श्रद्धाभाव प्रकट किए। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भक्तिगीत से गुणगान किए। सभा का संचालन संघ अध्यक्ष श्री यशवन्तराज जी सांखला ने किया। मंगलपाठ श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने तथा धन्यवाद संघमंत्री श्री निर्मल जी बम्ब ने दिया।

न्यूयार्क- न्यूयार्क जैन सेण्टर ऑफ अमेरिका के स्थानक में शनिवार 7 मई 2011 को प्रातः 10 बजे से 24 घण्टे का अखण्ड नवकार मंत्र का जाप प्रारम्भ हुआ, जो दूसरे दिन प्रातःकाल तक जारी रहा। जाप में सभी जैन सम्प्रदायों के श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। जाप में रात्रि के समय उपस्थिति काफी अच्छी रही। उसके पश्चात् सामूहिक सामायिक का आयोजन था, जिसमें श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी, दादाबाड़ी ग्रुप एवं श्रीमद् राजचन्द्र सम्प्रदाय के 400-425 लोगों ने हिस्सा लिया। यहाँ गत छह वर्षों से प्रतिमाह दूसरे रविवार को प्रातः 10.15 बजे से 12 बजे तक सामायिक का कार्यक्रम होता है। *-मुन्नाजी करनावट*

आवड़ी में आस्था अनुशास्ता शिविर आयोजित

श्री एस.एस. जैन संघ, आवड़ी तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के संयुक्त तत्त्वावधान में तथा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.

की सुशिष्या मधुर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-7 के पावन सान्निध्य में आस्था अनुशास्ता चतुर्थ शिविर का आयोजन 30 अप्रैल से 4 मई 2011 तक किया गया।

इस पंच दिवसीय आवासीय शिविर में 13 वर्ष से 26 वर्ष तक की बालिकाओं ने लगभग 160 की संख्या में भाग लिया। चेन्नई के उपनगरों एवं मैसूर आदि से आए शिविरार्थियों को श्रद्धा, प्रतीति, रुचि और उपासना के रूप में विभक्त कर चार कक्षाओं के माध्यम से संस्कार बीजारोपण के साथ धार्मिक अध्ययन करवाया गया।

अध्ययन विषयों में धोवन पानी, 25 बोल, गति-आगति, आचारांग सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र का 29 वाँ अध्ययन, दशवैकालिक सूत्र, 14 नियम, आस्रव-संवर, जैन युवा शक्ति, साधना की प्रायोगिक विधि आदि रहे। प्रतिदिन चार कालांशों में अध्ययन हुआ। प्रातःकालीन सत्र में ध्यान तथा सामूहिक कक्षा में महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. ने संयम वेरी गुड, संसार वेरी बेड, साधना वेरी गुड, आशातना वेरी बेड आदि विषयों पर प्रवचन देकर वैराग्यवृद्धि का कार्य दिया। महासतीवृन्द तथा अध्यापकों द्वारा अपने-अपने विषय को पूर्ण कराया गया। व्यवस्था की दृष्टि से सभी कक्षाओं के चार हाउस बनाये गये, जिनसे अनुशासन बना रहा।

प्रतिदिन दोपहर में प्रतियोगिताओं में पोस्टर कलाकृति द्वारा प्रेरणा, साध्वी जी के संयम-जीवन अनुभव, ग्रुप विचार-विमर्श आदि के माध्यम से साधना की प्रेरणा प्रदान की गई। रात्रि कालीन सत्र में संवाद कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिभाशाली बालिकाओं ने अलग-अलग संवाद प्रस्तुत कर धर्म का जीवन्त रूप प्रकट किया। जिसमें आधुनिक लड़की की व्यथा, अन्तर्जातीय विवाह के दुष्परिणाम, संयम हेतु अन्तर्मन का द्वन्द्व, बुजुर्गों की सेवा का सुफल आदि थे। शिविर में भोजन, नाश्ता आदि क्रियाओं में सभी शिविरार्थियों ने थाली धोकर पीने का उत्कृष्ट कार्य किया, साथ ही अपने बर्तनों को लकड़ी के भूसे से मांजकर स्वावलम्बन की एक मिसाल तो कायम की ही, साथ ही कर्म-निर्जरा का कार्य भी किया।

व्याख्यान और विभिन्न कक्षाओं के माध्यम से महासती-वृन्द की कृपा निरन्तर रही, साथ ही अधिकांश बालिकाओं ने आलोचना कर अपने जीवन की शुद्धि करके आदर्श स्थापित किया। प्रतिदिन प्रेरणाओं के माध्यम से हुए प्रत्याख्यानों का तो तांता सा लग गया, जिसमें रात्रि भोजन-त्याग के 50, जमीकन्द-त्याग के 66, होटल की मर्यादा 41, टी.वी. की मर्यादा 10, स्वीमिंग

पूल-समुद्री तट पर जाने की मर्यादा 65, प्रतिक्रमण करने का संकल्प 15, मोबाइल चैंटिंग और इन्टरनेट की मर्यादा 70, कोसमेटिक की मर्यादा 70, एग की चीजों का आजीवन-त्याग 70, वेज-नोनवेज होटल में आजीवन नहीं जाने का नियम 87, नवकारसी 46, धोवन पानी 44, एकाशना व उपवास 23, सामायिक प्रतिदिन एक साल के लिए 72, वन्दना प्रतिदिन 22, स्नान की मर्यादा 15, फूल-गोभी-बैंगन की मर्यादा के 29 शिविरार्थियों ने संकल्प लिए। इसके अलावा धार्मिक पुस्तकें पढ़ना एक साल तक 7, चौदह नियम करने का संकल्प 14, पान-सुपारी का त्याग एक वर्ष के लिए 18, चाय-कोल्ड-ड्रिंक्स-आईसक्रीम की मर्यादा 10, नवकार मंत्र की माला प्रतिदिन 18, सचित्त फूलों का त्याग आजीवन 32, चॉकलेट का त्याग 4, गुस्से में खाना-खाने का त्याग 20, जिससे गुस्सा किया उससे बात कर लेना 24, एवं चिप्स (लेज,कुरकुरे) का त्याग 11 शिविरार्थियों ने किया। शिविर के अन्तिम दिवस सभी की मूल्यांकन परीक्षा भी ली गयी। मेधावी, अनुशासित एवं गम्भीरता की त्रिपुटी के आधार पर श्रेष्ठ 25 शिविरार्थियों का चयन किया गया, फिर उनका समीक्षात्मक मूल्यांकन करके श्रेष्ठ तीन का चयन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा द्वारा किया गया। उनमें से आस्था आराधिका-मेघा वैद-मैलापुर, आस्था पथिका-करिश्मा सुराणा-वेपेरी, आस्था पथिका 2-नीतू कवाड़-पुन्नमल्लई का श्रेष्ठ शिविरार्थी के रूप में अभिनन्दन किया गया। शिविर में कुल 2462 सामायिकें हुईं।

शिविरार्थियों को दी गयी स्वाध्यायी सेवा की प्रेरणा के फलस्वरूप 25 नये स्वाध्यायी बनाये गये तथा 'आओ प्रतिक्रमण सीखें' अभियान के अन्तर्गत 40 नये प्रतिक्रमण 6 माह में याद करने के संकल्प करवाये गये। क्रमिक अध्ययन हेतु शिक्षण बोर्ड की परीक्षा हेतु फार्म भी भरवाये गये। शिविर के दीक्षान्त समारोह में आवड़ी श्री संघ एवं श्री रत्नसंघ के सदस्य उपस्थित थे। शिविर की सफलता में 8-10 बालिकाओं के संयम के भाव भी परिलक्षित हुए। साथ ही शिविर समापन पश्चात् शिविरार्थियों के अन्तर्मन की प्रसन्नता एवं शिविर के पूर्ण होने का गम चेहरे से दृष्टिगत कर रहा था कि शिविर ने तमिलनाडु की युवा बालिकाओं के जीवन में एक अलग आयाम स्थापित किया है।

शिविर में उपस्थित बालिकाओं का नियमित स्वाध्याय चलता रहे एवं जिनशासन की सेवा में वह भी एक कड़ी बने इस हेतु सभी को एक माह में एक सेवा में आने का भी संकल्प करवाकर उनके व्यवस्थित रूप से 'आस्था ग्रुप ऑफ गर्ल्स' रूप में संचालन की जिम्मेदारी श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती मधु जी सुराणा

आदि चार श्राविकाओं को दी गयी। शिविरावधि में युवकों के द्वारा की गयी सेवा भी अनुकरणीय थी।

प्रश्नव्याकरण सूत्र प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

श्राविका मण्डल द्वारा प्रश्नव्याकरण सूत्र पर आयोजित प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर दिया गया है, विजेता इस प्रकार हैं:-

प्रथम पुरस्कार- श्री राजकुमार केवलचन्द जी बांठिया-पाली (495)।

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती अरुणा संजीवकुमारजी जैन-होशियारपुर(491)

तृतीय पुरस्कार- श्री जेठमल मांगीलाल जी मोहनोत-जोधपुर (489)

सांत्वना पुरस्कार (प्रत्येक 1000/रुपये)- श्रीमती सुमन बांठिया-पाली (488), श्रीमती कुसुम सिंघवी-जोधपुर (488), श्रीमती चन्द्रा रतनलाल जी बोथरा-चेन्नई (488), श्रीमती प्रीति त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर (487), श्रीमती हेमलता जी जैन-ब्यावर (487)।

सांत्वना पुरस्कार (प्रत्येक 500/- रुपये)- श्रीमती नम्रता मेहता-जयपुर (486), श्रीमती वन्दना महेन्द्रराज जी लोढ़ा-चेन्नई (486), श्रीमती विमला नरेन्द्रकुमार जी कोठारी-नीमच (486), श्रीमती रतनबाई पूनमचन्द जी संकलेचा-चेन्नई (486), श्री धर्मीचन्द जी रांका-ब्यावर (486), श्रीमती अल्का जी नाहर-चेन्नई (486), श्रीमती उषा राजेन्द्र जी सेठिया-चेन्नई (486), श्रीमती मंजुदेवी जी बांठिया-सिरकाली-(तमिलनाडु) (485), श्रीमती प्रमिला जी बम्ब-जयपुर (485), श्रीमती निर्मला रिखबचन्द जी कांकरिया-चेन्नई (485)।

सांत्वना पुरस्कार (प्रत्येक 100/- रुपये)- **484 अंक**-श्रीमती पुष्पा जी चौधरी-जोधपुर, श्रीमती प्रतीक्षा प्रदीप जी गांधी-पूना, श्रीमती सुशीला सुमतिलाल जी बरलोटा-अहमदनगर, श्रीमती सुनीता जी डागा-जयपुर, श्रीमती क्षमा राहुल जी जैन-वरली-मुम्बई, श्री सुभाष सागरमल जी कोठारी-चेन्नई, श्रीमती निर्मला ललित कुमार जी चोरडिया-चेन्नई, श्रीमती मीनाक्षी जी कांकरिया-चेन्नई, श्री महेन्द्र कुमार मोहनलाल जी शर्मा-पाली, श्रीमती सरोज मकाना-होसूर-तमिलनाडू , **483 अंक**-सुश्री शिल्पा इंदरचन्द जी गांधी-जोधपुर, श्रीमती दया रसिक जी नाहर-पुणे, श्रीमती अनु पवन कुमार जी जैन-होशियारपुर(पंजाब), श्रीमती अभिलाषा जी हीरावत-मुम्बई, **482 अंक**-श्रीमती शीला नरेशचन्द्र जी जैन-कुशतला, सवाईमाधोपुर, श्रीमती संगीता राजेश जी जैन-कुशतला, सवाईमाधोपुर, श्रीमती एस. शशिकला जी बांठिया-के.जी.एफ., श्री गौतमचन्द जयवन्तराज जी बोहरा-ब्यावर, सुश्री प्रीति महेन्द्र जी डांगी-होसुर-तमिलनाडू, श्रीमती रीतु जी जैन-नागपुर, श्रीमती श्वेता राहुल जी जैन-जयपुर, श्रीमती

कविता मनोज जी जैन-मुम्बई, श्रीमती सुधा पंकज कुमार जी जैन-इन्दौर, श्रीमती कुसुम अशोक जी फोफलिया-जयपुर, श्रीमती सोनाली संदीपजी बोथरा-जयपुर, श्रीमती सुनीता नरेन्द्रलाल जी दूसाज-जयपुर, श्रीमती मानकंवरबाई जांगड़ा- बैंगलोर, **481 अंक-** श्रीमती निशा महेन्द्रकुमार जी जैन-अलीगढ़-टोंक, श्रीमती नीरा राजेश जी भण्डारी-ब्यावर, श्री सुभाषचन्द मोहनलाल जी धारीवाल-भायंदर,मुम्बई, श्रीमती कान्ता खेतपालिया-चेन्नई, श्रीमती प्रियंका चैनराज जी गोगड़-हुबली, सुश्री चांदनी जी जैन-इन्दौर, **480 अंक-**श्रीमती वीणादेवी राजेन्द्रकुमार जी सालेचा-ईरोड़, श्रीमती अंजु कुशल जी जांगड़ा-जयपुर, श्रीमती पुष्पा बिजेन्द्र सिंह जी जैन-जयपुर, **479 अंक-** श्रीमती सरोज मुकेश जी जैन-तिरुकोइलुर-तमिलनाडू, श्रीमती वन्दना अनिल जी खींचा-सूरत, श्रीमती प्रमिला बोहरा-ब्यावर, श्रीमती लता एस. आंचलिया-धुले,श्रीमती उर्मिला सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर, श्रीमती निर्मला शांतिचन्द जी खिंवसरा-जयपुर, श्रीमती रेखा गुगलिया-नागौर, श्रीमती नीरू सुरेन्द्र जी जैन-जयपुर, श्रीमती हेमलता दिनेश जी हीरावत-जयपुर, श्रीमती प्रवेश कुशलचन्द जी हीरावत-जयपुर, **478 अंक-**श्रीमती विनीता बोथरा-जयपुर, श्रीमती सुशीला जी हीरावत-जयपुर, श्रीमती सुशीला कांतिलाल जी रूणवाल-पुना, श्रीमती पुष्पा अभयचन्द जी जैन-जयपुर, श्री मनोज लेखिचन्द जी संचेती-जलगांव, **477 अंक-**सुश्री सीमा मीठालाल जी कोठारी-ब्यावर, श्रीमती चन्द्रकान्ता विमलचन्द जी लुणावत-शिमोगा, श्रीमती चन्द्रा जी मुणोत-मुम्बई, **476 अंक-**श्रीमती चन्द्रकान्ता जी लोढ़ा-ब्यावर, श्री नैनचन्द रतनचन्द जी बाफना-जोधपुर, श्री भगवानराज अखेराज जी सिंघवी-पाली, श्रीमती प्रमीला बाबुलाल जी पोखरना-धुले, श्री तरूणभाई रसिकलाल जी कांठडिया-पुने, श्री गौतमचन्द जीवराज जी सुराना-जयपुर, श्रीमती मोनिका नवीन कुमार जी कोठारी-बीकानेर, श्रीमती मंगला कांकरिया-जयपुर, श्रीमती शारदा मंगलचन्द जी बाघमार-मेड़तासिटी, श्रीमती राजुभाई रमेशचन्द जी कोठारी-धुले, श्री निर्मल टिकमचन्द जी जैन-बैंगलोर, **475 अंक-**श्रीमती सुनीता जी डोसी-ब्यावर, श्री संजय के.सी. डोसी-ब्यावर, सुश्री सीमा सुरेशचन्द जी बम्ब-ब्यावर, श्रीमती एम. नम्रता जी पीपाड़ा-कूनुर, श्रीमती अर्चना जी जैन-चेन्नई, **474 अंक-**श्रीमती सीमा नरेशचन्द जी जैन-नदबई, श्रीमती रेखा महावीरचन्द जी कोठारी-बैंगलोर, श्रीमती कमलादेवी जी चौपड़ा- ईरोड, श्रीमती दीपा जी झाबक-मुम्बई, श्रीमती चित्रा हेमन्त जी डागा-बूंदी, श्रीमती उषा नरेन्द्रकुमार जी लोढ़ा-नीमच, **473 अंक-**श्रीमती प्रवीणा अमरचन्द जी कोठारी-जयपुर, श्रीमती सुशीला इन्दरचन्द जी रांका-जलगांव, श्रीमती नयनतारा रतनलाल जी बाफना-जलगांव, **472 अंक-**श्रीमती शकुन्तला जयन्तिलाल जी हींगड़-पाली, श्री सचीन राजेन्द्र कुमार जी जैन-बाडराखान,अलवर, श्रीमती प्रमीला जी मेहता-दूदू , श्रीमती सरलाबाई उगमराज

जी बाफना-चेन्नई, श्रीमती कंचनदेवी धनराज जी सोनावत-ईरोड, श्रीमती निर्मला जी बम्ब-जयपुर, श्रीमती शीतल जी हीरावत-मुम्बई, श्रीमती कुसम संजय जी बोथरा-कोलकाता, श्रीमती कमला जी सिंघवी-जयपुर, श्रीमती लक्ष्मीबाई जी बोथरा-ईरोड, श्रीमती सूर्यकान्ता रसिकलाल जी कोठारी-अहमदनगर, **471 अंक**-सुश्री खुशबू गौतमराज जी कटारिया-ब्यावर, श्रीमती प्रेम कुशल जी संचेती-अलवर, श्रीमती प्रभा प्रकाश चन्द जी संचेती-अमरावती, श्रीमती शर्मिला अजीतकुमार जी मरलेचा-रेडहील्स, चेन्नई, श्रीमती सुमन लुणावत-शिमोगा, श्रीमती वर्षा वीरेन्द्र जी लुंकड़-जलगांव, श्रीमती चन्दनबाला अशोक कुमार जी धोका-चेन्नई, **470 अंक**-श्री पी.आर. गुमानमल जी जैन-जोधपुर, श्रीमती अमराबाई महावीरचन्द जी बांठिया-के.जी.एफ., श्री महेन्द्रकुमार सूरजमल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती आरती राजेन्द्रकुमार जी मूथा-अमरावती, श्रीमती सुन्दर गौतमचन्द जी बोथरा-ईरोड, श्रीमती प्रभा जी सुराना-चेन्नई , श्री प्रमोद कुमार कमलचन्द जी दुग्गड़-ईरोड, श्रीमती रेखा प्रवेश जी कोठारी-जयपुर, श्रीमती सुनीता जी सुराणा-बैंगलोर, श्रीमती मंजू विजयराज जी मेहता-मंडीया।

कोलकाता में श्री पी.एस. सुराणा का व्याख्यान

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 20 वीं पुण्यतिथि रविवार 8 मई 2011 को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा महावीर सदन में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष एवं अन्तरराष्ट्रीय विधिवेत्ता श्री पी.शिखरमल जी सुराणा तथा उनकी धर्मपरायणा धर्मपत्नी श्रीमती लीला जी सुराणा के सान्निध्य में मनायी गयी। समारोह की अध्यक्षता कोलकाता के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री सुन्दरलाल जी दुगड ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री श्वेताम्बर जैन सभा के ट्रस्टी श्री रिखबदास जी भंसाली उपस्थित थे। मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता श्री पी.शिखरमल जी सुराणा ने आचार्य हस्ती के जीवन की विशेषताओं एवं उनके गुणों पर प्रकाश डाला तथा सभी को उनके द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलने का सन्देश दिया। उन्होंने अपने पिताश्री के साथ घटित घटना "नूवो जूनो मत करीजै" का भी स्मरण कराया। विशिष्ट अतिथि श्री रिखबदास जी भंसाली ने तप, त्याग एवं संयम से चलने की सीख दी। संघ-महामंत्री डॉ. गुमानसिंह जी पीपाड़ा ने सबका स्वागत करते हुए संस्था का परिचय दिया। श्रीमती लीला जी कटारिया, महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती विमला जी भण्डारी, मंत्री श्रीमती रश्मि जी ने भी विचार व्यक्त किए। बालकों द्वारा 'धर्म के साथ जीने की कला' विषय पर एक सुन्दर नाट्य प्रस्तुति दी गई, जिससे प्रभावित होकर श्री सुराणा साहब द्वारा 1000 रुपये प्रत्येक बालक-बालिका को दिए एवं

संघ ने भी पुरस्कृत किया। इस अवसर पर आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा के सिक्के भी प्रदान किए गए। श्रीमती मंजू भण्डारी का शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री सुन्दरलाल जी दुगड़ ने आचार्य नानेश एवं आचार्य श्री हस्ती की समानता पर प्रकाश डाला। कुसुम जी कांकरिया ने भजन प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन संघ-अध्यक्ष श्री सुमेरचन्द जी मेहता ने किया। समारोह में पश्चिम बंगाल सरकार के वित्त सचिव श्री चंचलमल जी बच्छावत, उपाध्यक्ष श्री पारसचन्द जी मेहता आदि भी उपस्थित थे। नये चुनावों में श्री चंचलमल जी बच्छावत उपाध्यक्ष मनोनीत हुए हैं।

केन्द्रिय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर जुलाई में

स्वाध्यायियों के सर्वाङ्गीण विकास को लक्ष्य में रखकर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष भी 24 से 30 जुलाई 2011 तक 'सप्त दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर' आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। अतः समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि वे इस शिविर में भाग लेकर अपने ज्ञान में वृद्धि करें। इस शिविर में निम्नांकित योग्यता में से एक योग्यता प्राप्त स्वाध्यायी भाग ले सकेंगे-1. श्री स्थानक जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी हो एवं पर्युषण सेवा देते हैं। 2. अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पंचम परीक्षा उत्तीर्ण हो। 3. सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल कण्ठस्थ हो। शिविर की सम्पूर्ण रूपरेखा सभी स्वाध्यायियों को पत्र द्वारा भेजी जा रही है तथा जिनवाणी के आगामी माह के अंक में भी प्रकाशित की जाएगी।

-राजेश भण्डारी, सचिव, फोन : 0291-2624891

शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में भाग लीजिए

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 31 जुलाई 2011, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

सभी कक्षाओं की उक्त परीक्षा संशोधित पाठ्यक्रम एवं संशोधित पाठ्य पुस्तकों के आधार पर होगी। 10 परीक्षार्थी होने पर नया केन्द्र प्रारम्भ किया जा सकता है। आवेदन-पत्र जमा कराने की अन्तिम तिथि 30 जून, 2011 है। इच्छुक महानुभाव आवेदन-पत्र, पाठ्य पुस्तकें आदि के लिए सम्पर्क करें- *सुशीला बोहरा, संयोजक-94141-33879, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-*

·*89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय- 0291-2630490*

कोडैकनाल में 'युवाशक्ति ऊर्ध्वारोहण' शिविर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा 23 से 26 जून 2011 तक चेन्नई एवं कोडैकनाल में 'युवाशक्ति ऊर्ध्वारोहण' (The Power of Youth) का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें केन्द्रीय कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य तथा शाखा प्रमुख एवं शाखा सचिव सपरिवार आमन्त्रित हैं। 25 जून को सांय 6.30 बजे यु*वक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक भी आयोजित होगी। सम्पर्क सूत्र- मनीष जैन, चेन्नई- 044-42728476, 95430-68382, ई-मल-* Jainmanish44 u@ gmail.com

आचार्य हस्ती प्रणीत जैन इतिहास (अंग्रेजी) अमेरिका में

अमेरिका के प्रमुख जैन संगठन फेडरेशन ऑफ जैन एसोशिएशन इन नॉर्थ अमेरिका (जैना) की ओर से ह्यूस्टन (टेक्सास, यू.एस.ए.) में 1 जुलाई से 4 जुलाई 2011 तक 16वें द्वैवार्षिक अन्तरराष्ट्रीय जैना अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। इस अधिवेशन के साथ ही 3 जुलाई रविवार को द्वितीय जैन प्रवासी सम्मेलन आयोजित किया जायेगा। जैना की ओर से युवा विधिवेत्ता डॉ. विनोद जी सुराणा, चेन्नई को सम्मेलन में भाग लेने और वक्तव्य देने के लिए आमंत्रित किया गया है। इस सम्मेलन में दस जनों को जैन धर्म और समाज के उन्नयन में उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जायेगा। पुरस्कार के अन्तर्गत उन्हें साहित्य के रूप में आचार्य श्री हस्ती प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास (संक्षिप्त) के अंग्रेजी संस्करण Jain Legend के चारों भाग प्रदान किये जायेंगे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस.सुराणा, चेन्नई की ओर से इन ग्रंथों के दस सेट अमेरिका भिजवाये गये हैं।

विधवाओं एवं जरूरतमन्दों को सहयोग

श्वेताम्बर जैन ओसवाल समाज की विधवाएं एवं जरूरतमन्द परिवार जिनको जीवन यापन में कठिनाई है, जिन्हें कहीं से भी सहयोग नहीं मिल रहा हो और मासिक आय रुपये 1500/- से अधिक न हो, आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिए अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता मय पिन कोड, दो लिफाफों पर लिखकर प्रत्येक पर 5/-रु. का डाक टिकट लगाकर दोनों लिफाफों को पत्र में रखकर, आवेदन पत्र मंगाने के लिए निम्नलिखित पते पर भेजें- *गोठी चेरिटेबल*

ट्रस्ट, श्री लाभचन्द जी कोठारी, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापू नगर, जयपुर-302015, फोन: 93140-03536 (मोबाइल)

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2011 का प्रकाशन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सम्पूर्ण जैन समाज के चारों समुदायों के लगभग 14,500 जैन साधु-साध्वियों के 2011 में स्वीकृत होने वाले चातुर्मासों एवं समाज की सभी गतिविधियों की जानकारियों से युक्त 'समग्र जैन चातुर्मास सूची 2011' प्रकाशित की जा रही है। इसके अतिरिक्त मुम्बई स्थानकवासी जैन चातुर्मास सूची (गुजराती पाकेट बुक्स) एवं रंगीन चार्ट के 33 वें अंक का प्रकाशन भी किया जा रहा है। नम्र निवेदन है कि आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन पूज्य जैन गच्छ नायक आचार्यों, साधु-साध्वियों के 2011 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी संत-सतियों की चातुर्मास की जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करें, ताकि हम चातुर्मास प्रारम्भ होने तक इनका प्रकाशन कर सकें। **सम्पर्क सूत्रः-** *बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल' संपादक, 105, तिरुपति अपार्टमेंट, आकुर्ली क्रोस रोड नं. 1, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101 (महा.), टेलीफैक्स : (022) 28871278, मोबाइल : 9324521278,* Email: ujjwal prakashan@gmail.com.

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के मेधावी, होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है, जिनके परिवार की मासिक आय रुपये 8500/- से अधिक नहीं है, वे छात्रवृत्ति के लिये आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पत्र मंगाने के लिए, अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता मय पिन कोड, दो लिफाफों पर लिखकर प्रत्येक पर 5/- रु. का डाक टिकट लगाकर दोनों लिफाफों को पत्र में रखकर, निम्न पते पर भेजें - *सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री लाभचन्द जी कोठारी (एम.ए.), डी120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापू नगर, जयपुर-302015, मोबाइल नं. 93140-03637*

संक्षिप्त-समाचार

सूरत- आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आशीर्वाद व प्रबल प्रेरणा से श्री जैन रत्न युवक परिषद, सूरत के तत्त्वावधान में विगत 8 माह से प्रत्येक रविवार हर रत्नवंशीय परिवार के घर पर सामूहिक सामायिक एवं स्वाध्याय का कार्यक्रम बहुत

सफलतापूर्वक चल रहा है, जिसमें लगभग 25 से 35 युवक व वरिष्ठ श्रावक नियमित भाग ले रहे हैं। सामायिक में सर्वप्रथम सामूहिक प्रार्थना उसके पश्चात् युवा रत्न सुज्ञ श्रावक श्री संजीव जी नाहर विभिन्न धार्मिक विषयों पर सारगर्भित जानकारी दे रहे हैं। नवतत्त्व, सामायिक, प्रतिक्रमण एवं 25 बोल भी सिखा रहे हैं। अन्त में संकल्प, सामूहिक वन्दना एवं वरिष्ठ श्रावक द्वारा मांगलिक फरमाया जाता है। यह संघ एकता का अनूठा प्रयास है। *-राजीव नाहर, सूरत*

अजमेर- काश्मीर प्रचारिका मालव ज्योति महासती श्री उमरावकंवर जी म.सा. 'अर्चना' की द्वितीय पुण्यतिथि त्रिदिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ श्री पार्श्वनाथ मानव सेवा संस्थान, अजमेर में मनायी गई। उनकी स्मृति में पाँच रुपये के डाक-टिकट का निर्गमन केन्द्रीय सूचना औद्योगिक एवं संचार राज्यमंत्री श्री सचिन पायलट ने किया। भारत सरकार द्वारा यह डाक टिकट किसी जैन साध्वी की स्मृति में प्रथम बार जारी किया गया है। डाक टिकट का लोकार्पण सिकन्दराबाद में संघमंत्री श्री हस्तीमल जी मुणोत द्वारा किया गया तथा इसी दिन 35000 रुपये के डाक टिकटों का विक्रय हो गया। *-माणकचन्द शिशोदिया*

बैंगलोर- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के तत्त्वावधान में 4 से 8 अप्रेल तक शिक्षण संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अध्यापन श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के पाठ्यक्रमानुसार किया गया। शिविर का संचालन श्री शान्तिलाल जी बोहरा ने किया।

टोंक- जैन समाज के दीन-दुःखी, अनाथ-अपंग, संकटग्रस्त एवं निर्धन विद्यार्थियों को मासिक सहायता दी जाती है। इस हेतु सहायता आवेदन पत्र वहाँ के स्थानीय श्री संघ के अध्यक्ष व मंत्री से मय अभिशंसा के प्रमाणित करा कर निम्न पते पर भिजवाए। साथ में राशन कार्ड, पेंशन कार्ड, मासिक आय आदि के प्रमाण पत्रों की प्रमाणित प्रतियां भी भेजें। *-मंत्री, जीवदया मण्डल ट्रस्ट (रजि.), डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक-304001 (राज.), फोन: 01432-243041*

गुलाबपुरा- श्री स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा का वार्षिक अधिवेशन 7 अगस्त 2011 को शाहीबाग, अहमदाबाद में आयोजित है। इस अवसर पर 4 से 6 अगस्त तक स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर एवं 3 से 5 अगस्त तक वृहद् महिला स्वाध्यायी शिविर आयोजित है। सम्पर्क सूत्र- रतनलाल नाहर-01483-223592 (का.)

मेड़तासिटी- श्री जयमल जैन छात्रावास में प्रवेश चालु है। **सम्पर्क सूत्र**- *नेमराज मेहता-01590-331160*

हैदराबाद- श्री जैन सेवा संघ के तत्त्वावधान में 22 मई को हैदराबाद में विशाल अहिंसा शान्ति यात्रा का आयोजन किया गया। यह आयोजन उत्तरप्रदेश में 8 नये यान्त्रिक कत्लखाने खोलने की अनुमति के विरोध में आमरण अनशन कर रहे जैन मुनि मैत्री प्रभसागर जी को गिरफ्तार करने एवं अन्धाधुंध कत्लखाने खोलने के विरोध में किया गया। - *रिद्धीश रमेश जागीरदार*

बधाई/चुनाव

जोधपुर- सुश्री रूपल गांग सुपुत्री श्रीमती योगिता एवं श्री राजेश जी गांग तथा

सुपौत्री श्रीमती केसर एवं श्री चंचलमल जी गांग ने सी.बी.एस.ई. की 12 वीं कक्षा के वाणिज्य वर्ग में 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। सेण्ट्रल एकेडमी, हाउसिंग बोर्ड विद्यालय में उसका प्रथम स्थान है।

जोधपुर- सुश्री अमिता जैन सुपुत्री श्रीमती ममता एवं श्री धर्मचन्द जी जैन

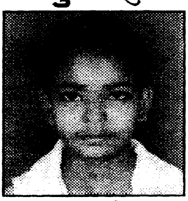

(रजिस्ट्रार, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर) ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकेण्डरी परीक्षा के सभी विषयों में A-1 ग्रेड (95 प्रतिशत से अधिक अंक) प्राप्त किया है। युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भी मेरिट में स्थान अर्जित करती रही है।

जोधपुर- सुश्री कृतिका जैन मेहता सुपुत्री श्रीमती कंचन एवं श्री रवि जी मेहता ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की सीनियर सैकेण्डरी परीक्षा में 91 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जोधपुर जिले में 10 वां स्थान प्राप्त किया है।

कोलकाता- अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस, नई दिल्ली की महिला

शाखा ने 27 अप्रेल 2011 को राष्ट्रस्तरीय सम्मेलन में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती मंजु प्रेम भण्डारी, कोलकाता को प्रशंसनीय सेवा के लिए 'राष्ट्र श्रेष्ठ सेवा सम्मान' से सम्मानित किया है। अनन्य गुरुभक्त स्व. श्री मदनरूपचन्द जी भण्डारी की वे पुत्रवधू हैं।

सी.ए. उत्तीर्ण होने पर बधाई

1. श्री प्रवीण बोकड़िया सुपुत्र श्री बाबूलाल जी बोकड़िया, नोखा वाले, बालोतरा, प्रथम प्रयास में सी.ए. बने।

2. श्री श्रेणिक कुमार चौपड़ा, सुपुत्र श्री धर्मेशकुमार जी चौपड़ा, बालोतरा।

3. श्री तरुण मोदी, मदनगंज-किशनगढ़

श्रद्धाञ्जलि

बीजापुर- धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती पुष्पलता धर्मपत्नी श्री गणपतलाल जी

रूणवाल का 19 मार्च 2011 को 67 वर्ष की आयु में स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित रूप से मौन सामायिक, ध्यान एवं योग-साधना करती थीं। आप सरलता, सादगी, उदारता, धर्मपरायणता, कर्मठता, स्पष्टवक्तृत्व आदि गुणों से सम्पन्न थीं। घर-परिवार एवं संघ-समाज में प्रतिष्ठित श्राविका अपने पीछे भरापूरा धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गयी हैं।

ब्यावर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री लालचन्द जी श्रीश्रीमाल का 86 वर्ष की आयु में 3

अप्रेल 2011 को समाधिभावों में देहावसान हो गया। आप सभी चारित्रनिष्ठ संत-सतियों की सेवा में तत्पर रहते थे तथा अनेक वर्षों तक अखिल भारतीय जयमल जैन श्रावक संघ के विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे। आपने जीवन में समाजसेवा को अधिक महत्त्व दिया।

जयपुर- युवा श्रावक श्री संजय जी जामड़ सुपुत्र श्री हुकमचन्द जी जामड़ का 47 वर्ष

की वय में अल्प बीमारी के पश्चात् 1 मई 2011 को आकस्मिक निधन हो गया। वे एक मिलनसार, विनम्र, सरल एवं प्रतिभासम्पन्न श्रावक थे। विगत 10 वर्षों से वे सुबोध शिक्षा समिति के कार्यकारिणी-सदस्य के रूप में भी उत्साहपूर्वक रचनात्मक सहयोग कर रहे थे। शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में उनका योगदान सराहनीय रहा। उनके पिताश्री हुकमचन्द जी जामड़ जैन कांफ्रेंस सहित अनेकानेक संस्थाओं के शीर्ष पदों से जुड़े हुए हैं तथा समाजसेवा के कार्य में सदैव तत्पर रहते हैं। जामड़ परिवार धर्मनिष्ठ एवं सेवाभावी है।

जोधपुर- जैन-विद्या के लेखन तथा सम्पादन कार्य से जुड़े रत्नसंघीय सुश्रावक श्री

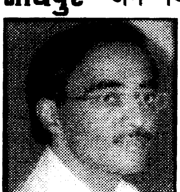

पुखराज जी मोहनोत के धर्मरुचि सम्पन्न जामाता **श्री अनिल जी भंडारी** (सुपुत्र स्व. श्री राजेन्द्र जी भण्डारी)का 48 वर्ष की आयु में 2 मई 2011 को देवलोक गमन हो गया। आपकी पत्नी श्रीमती सुमन भंडारी देव, गुरु, धर्म में श्रद्धानिष्ठ व व्रतशीला हैं।

पुत्र अंकित तथा पुत्री आकांक्षा अध्ययन-रत हैं।

होसपेट- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती फूलीबाई धर्मपत्नी श्री लालचन्द जी

बोरडिया, अलसूर बैंगलोर का 23 अप्रेल 2011 को 86 वर्ष की आयु में देवलोक गमन हो गया। आपने मासखमण, एकान्तर तप आदि अनेक तप किए तथा 40 वर्षों से चारों खंदों का पालन कर रही थी। खादी के वस्त्र पहनती थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

केकड़ी- धर्मपरायण, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री हीराचन्द जी लोढ़ा का 8 मई, 2011

को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों से प्रारम्भ से ही जुड़े हुए थे तथा तन-मन-धन से उनका सहयोग रहता था। समाज को एकजुट रखकर चलने की उनमें खूबी थी।

मेड़तासिटी- सुश्राविका श्रीमती नवलकंवर कोठारी धर्मपत्नी श्री माणकचन्द जी

कोठारी का 3 मई 2011 को स्वर्गगमन हो गया। धर्मनिष्ठ सुश्राविका का जीवन, सरलता, मधुरता, उदारता, सेवा आदि सद्गुणों से ओत-प्रोत था। आचार्य श्री हीरा उपाध्याय श्री मान एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धानिष्ठ श्राविका नियमित सामायिक स्वाध्याय करती थी। रत्नसंघ की महासती श्री मनोहर कंवर जी म.सा. की आप सांसारिक पक्ष में बड़ी बहन थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा सुसंस्कृत परिवार छोड़ गई हैं।

बालोतरा- श्री सुरेशकुमार जी सुपुत्र श्री दौलतराज जी बागमार का 40 वर्ष की

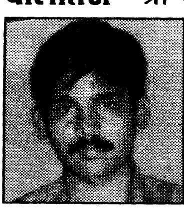

अल्पवय में मुम्बई में 3 मई को स्वर्गगमन हो गया। आपका सम्पूर्ण परिवार धर्मनिष्ठ है। आपकी बहिन विवेक श्री जी, आचार्य श्री रामलाल जी महाराज के संघ में दीक्षित हैं तथा संघ के कार्यों में आपका सम्पूर्ण परिवार तत्पर रहता है।

जोधपुर- समाजसेवी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नेमीचन्द जी कर्णावट सुपुत्र स्व. श्री

लिखमीचन्द जी कर्णावट, महामन्दिर का 83 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप कर्त्तव्यपरायण, कर्मठ, विनम्र एवं मृदुभाषी थे तथा देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित थे। आपने अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

धुलिया- श्रीमती रम्भादेवी छाजेड़ धर्मपत्नी श्री कन्हैयालाल जी छाजेड़ का 27

अप्रेल, 2011 को सायंकाल प्रतिक्रमण के पश्चात् संथारा पूर्वक स्वर्गवास हो गया। छाजेड़ परिवार धर्मनिष्ठ होने के साथ मानव सेवा से जुड़ा हुआ है। श्राविका प्रतिदिन परिवार के साथ सामायिक-स्वाध्याय करती थी। स्व. पूज्य श्री कल्याणऋषि जी के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी।

बालोतरा- श्रीमती मोथीदेवी धर्मपत्नी श्री कुन्दनमल जी का 80 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। वे धर्मध्यान में दृढ़ थीं तथा नियमित 11-12 सामायिक करती थीं।

मदनगंज (किशनगढ़)- श्रद्धानिष्ठ संघसेवी सुश्राविका श्रीमती शांतिदेवी जी मोदी

धर्मपत्नी स्व. श्री अमरचन्द जी मोदी (डीडवाडा वाले) का 30 अप्रेल 2011 को संलेखना संथारा पूर्वक देवलोक गमन हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका की आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सभी संत सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आपका समस्त परिवार सामायिक-स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचिशील है। संघ की सभी गतिविधियों में मोदी परिवार का सक्रिय सहयोग रहता है।

अहमदाबाद- श्रीमती नूतनबेन मेहता धर्मपत्नी श्री उत्तमचन्द जी मेहता का 15

अप्रेल, 2011 को संथारा सहित देहावसान हो गया। आपके शीलव्रत अंगीकृत था। आप असाध्य बीमारी में अन्तिम क्षण तक जागृत अवस्था में रहते हुए आत्म-साधना की ओर अग्रसर रहीं। आपका पूरा परिवार आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. को समर्पित हैं। आप वाणी में मधुरता, व्यवहार में सरलता एवं मन में निष्कपटता आदि गुणों की धनी थीं। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में समर्पित रहती थीं। आप अपने पीछे पुत्र श्री प्रवेश मेहता, पुत्री निशा गोखरू, पौत्र एवं दौहित्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

अमरावती- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी युवारत्न श्री जयचन्दजी मरलेचा का 25 मई

2011 को आकस्मिक देहान्त हो गया। वे श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। आचार्य भगवन्त हस्ती, आचार्यप्रवर हीरा, उपाध्यायप्रवर मान एवं संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-

सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में वे सदैव तत्पर रहते थे। सामायिक-स्वाध्याय के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। संघ एवं समाज की प्रत्येक गतिविधि में उनका सदैव तन-मन-धन से सहयोग रहता था। सादा जीवन उच्च विचार की लोकोक्ति आपके जीवन में परिलक्षित होती थी। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा.आदि ठाणा के विचरण एवं आहार-विहार में आपकी उल्लेखनीय सेवाएँ रही। दोनों सिंघाड़ों का महाराष्ट्र क्षेत्र में जब तक विचरण रहा नियमित रूप से दर्शन-वन्दन का लाभ लेने के साथ आहार-विहार एवं श्रमणोचित औषधोपचार जैसी सेवाओं में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता था। गत वर्ष पाली चातुर्मास के समय परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से आपने युवावस्था में शीलव्रत अंगीकार किया था। धर्म के प्रति आपकी उत्तम भावना प्रमोदजन्य रही।

सवाईमाधोपुर- दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी, आदर्शश्रावक रत्न श्री लड्डूलाल जी जैन

बगावदा वाले का 67 वर्ष की आयु में 8 मई, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के वरिष्ठ स्वाध्यायी सदस्य थे। आपने लगभग 25 वर्षों तक पर्वाधिराज पर्युषण में बाहर जाकर स्वाध्यायी सेवा प्रदान की। आप दृढ़धर्मी क्रियावान श्रावक रत्न थे। आपने लगभग 28 वर्ष पूर्व पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुखारविन्द से 39 वर्ष की वय में सपत्नीक शीलव्रत अंगीकार किया। साथ ही 3 खंध का आजीवन प्रत्याख्यान लेकर जीवन पर्यन्त गृहीत व्रतों का दृढतापूर्वक पालन किया। आप नियमित सामायिक स्वाध्याय के साथ उभयकाल प्रतिक्रमण करते थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रसादी देवी ने भी आपके जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर 26 वर्ष पहले आजीवन तीन खंध के प्रत्याख्यान कर लिये हैं।

जयपुर- श्रीमती मिलापकंवर जी धर्मपत्नी श्री जेठमल जी शामसुखा एवं सुपुत्री स्व. श्री लादूराम जी डोसी, जोधपुर का 9 मई 2011 को जयपुर में निधन हो गया। आप रत्नसंघ की धर्मनिष्ठ श्राविका थीं तथा प्रतिदिन नवकारमंत्र की माला फेरकर ही जलग्रहण करती थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

21000/- जिनवाणी आजीवन स्तम्भ सदस्यता हेतु प्रत्येक

205 Shri Nihal Chand J. Munot ji, Mumbai (M.H.)

4000/- साहित्य सदस्यता हेतु प्रत्येक

730 Shri Veer Chand ji Chhajed, Bangaluru(Karnataka)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13082 Shri Veer Chand ji Chhajed, Bangaluru (Karnataka)
13083 Shri Sandeep ji Bhandari, Bangaluru (Karnataka)
13084 श्री जम्बूकुमारजी जैन (चौधरी),चौथ का बरवाडा, सवाईमाधोपुर (राज.)
13085 श्री मनोज जी लोढ़ा, 91, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)
13086 श्री गौरवजी जैन,पोस्ट-पहरसर, तहसील-नदबई, जिला-भरतपुर (राज.)
13087 श्रीमती उगमकँवर जी लोढ़ा, चन्दन, 2 बी रोड, पावटा, जोधपुर (राज.)
13088 श्री दिलीपजी चोरड़िया,पोस्ट-बेटावद,शिन्दखेडा,जिला-धुलिया (महा.)
13089 श्री अशोककुमार जी बाफणा,नीमझरी रोड,शिरपुर,जिला-धुलिया (महा.)
13092 सौ. छाया जी भण्डारी, शास्त्री टॉवर चौक, जलगाँव (महाराष्ट्र)
13093 श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ, मोताला, जिला-बुलडाणा (महाराष्ट्र)
13094 श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ,खामगाँव,जि.-बुलडाणा(महा.)
13095 श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, बडनेरा, अमरावती (महा.)
13096 श्री आनन्द जी भंडारी, देवरणकर नगर, अमरावती (महाराष्ट्र)
13097 श्री सुशील कुमार जी बोकरिया, मुधोलकर पेठ, अमरावती (महाराष्ट्र)
13098 श्रीमती राजश्री जी जागडा, धमणगाँव रेलवे, जिला-अमरावती (महा.)
13099 सौ. संगिना जी कोठारी, कॉटन मार्केट, मेहकर, जिला-बुलढाणा (महा.)
13100 श्री कुणाल जी लोढ़ा, शिवाजी नगर, मेहकर, जिला-बुलढाणा (महा.)
13101 सौ. सुषमा जी जैन, एकता नगर, मेहकर, जिला-बुलढाणा (महाराष्ट्र)
13102 श्री अरविन्द जी जैन (भेडोला वाले), बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)
13103 श्री विजय कुमार जी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13104 Shri Hansraj ji Jhabak, Prabha Devi, Mumbai (M.H.)
13105 Shri Yashwant Kumar ji Golecha, Hyderabad (A.P.)
13106 श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन (एडवोकेट), टोंक फाटक, जयपुर (राजस्थान)
13112 श्री पवन कुमार जी जैन, चौधरी कटला, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)
13113 Shri Inder Chand ji Kothari,Jalgaon-425001(M.H.)
13114 Shri Prakash Chand ji Jain, Jalgaon (M. H.)
13115 श्री उत्कर्ष जी मेहता, गोविन्दपुरी, रामनगर सोडाला, जयपुर (राजस्थान)
13116 Prof. P. S. Narwania ji, Kaithal (Harayana)
13117 Shri Jitendra ji Tatiya, Andheri (W), Mumbai(M.H.)
13118 श्री माणकचन्दजी कोठारी,सरकारी अस्पताल, मेड़तासिटी, नागौर (राज.)

अर्द्धमूल्य योजना, श्री दिनेशमल जी खिंवसरा, जोधपुर के सौजन्य से

13090 श्री महेश कुमार जी जैन, शर्मा सायबर कैफे के पास, जलगाँव (महाराष्ट्र)
13091 श्री बंशीलाल जी भण्डारी, एकता नगर, पारोला, जिला–जलगाँव (महा.)
13107 श्री पुरुषोत्तम जी पांचाल, बैंक गली, रावटी, जिला–रतलाम (मध्यप्रदेश)
13108 श्री राकेश कुमार जी वैरागी, रावटी, जिला–रतलाम (मध्यप्रदेश)
13109 श्री प्रमोद कुमार जी कटारिया, शिव मन्दिर मार्ग, रावटी, रतलाम (म.प्र.)
13110 श्री अशोककुमार जी गुजाल,महाकाल घाटी,गुजालवाडी, उज्जैन (म.प्र.)
13111 श्री रविन्द्र कुमार जी सुराणा, शिवगढ़ बस स्टैण्ड, जिला–रतलाम (म.प्र.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

15000/- श्रीमान् महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर, जिनवाणी पत्रिका में बाल-स्तम्भ के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को पुरस्कृत करने हेतु सहयोग।

11000/- श्रीमती प्रेमकँवर जी, माणकचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी, सुनील कुमार जी एवं समस्त रांका परिवार, अजमेर, श्रीमती विमला जी रांका धर्मपत्नी श्री माणकचन्द जी रांका का द्वितीय वर्षी तप सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

10,000/- श्रीमती चन्द्रकला जी धर्मपत्नी श्री पवनलाल जी नाग सेठिया, होलनांथा,जिला-धुलिया (महा.), द्वारा भेंट।

2100/- श्री पारस, सिद्धार्थ, आकाश जी कांकरिया, जलगांव, सौ. रीना सुपुत्री पारस कपूरचन्द जी कांकरिया (भोपालगढ़) का शुभविवाह चि. सम्यक सुपुत्र श्री राजेन्द्र सिंह जी मोदी, इन्दौर के संग 23 अप्रेल को इन्दौर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

2001/- श्री हुकमी चन्द जी जामड़ एवं पारिवारिकजन, जयपुर, सुपुत्र श्री संजय जी जामड़ का दिनांक 01/05/2011 को अल्पायु में स्वर्गवास हो जाने पर पुण्य स्मृति में।

2000/- श्रीमान् बालचन्द जी, अगमराज जी, राजेश जी, विकास जी, आर्यन जी, अलसूर-बैंगलोर, पूज्य माताश्री की पुण्य स्मृति में भेंट।

1111/- श्री राजेन्द्र जी-मंजु जी रांका, अजमेर, सुपुत्री श्रीमती रितु जी धर्मपत्नी श्री राहुल जी चौधरी, भीलवाड़ा, की सुपुत्री चाहना के जन्म-दिवस की खुशी में भेंट।

1111/- श्री राजेन्द्र जी-मंजु जी रांका, अजमेर, सुपुत्री श्रीमती रेनु जी धर्मपत्नी श्री अंकित जी अब्बाणी, चित्तौड़गढ़ की शादी की सालगिरह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री माणकचन्द जी, शिखरचन्द जी कोठारी, अजमेर, श्रीमती नवलकँवर जी कोठारी का दिनांक 3 मई को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री प्रकाशचन्द जी भण्डारी सुपुत्र श्री सुगनचन्द जी भण्डारी 'जोधपुर वाले', गुड़गांव, द्वारा भेंट।

1100/- श्री कन्हैयालाल जी, विनोदकुमार जी छाजेड़, विजयनगर-अजमेर (राज.), आयुष्मान अभिषेक का मंगल परिणय सौ. कां. पूजा सुपुत्री श्री टीकमचन्द जी मेहता, पीपलियाकलां के साथ 5 मई को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री प्रेमचन्द जी डोसी, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री सम्पतराज जी डोसी की प्रथम पुण्य तिथि दिनाँक 10 जून, 2011 पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री मनमोहनराज जी, रविप्रकाश जी, दर्शन जी मेहता, जोधपुर, सुश्री कृतिका

मेहता के 12 वीं कामर्स परीक्षा में 91 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जोधपुर जिलें में 10 वां स्थान प्राप्त करने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री जे.के. रांका, जयपुर, अपनी पौत्री के जन्म (सुपुत्री श्रीमती स्वाति एवं संभव जी रांका) की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- डॉ. धनपतराज जी सिंघवी, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला जी सिंघवी की दिनाँक 5 जून, 2011 को चतुर्थ पुण्य स्मृति पर सादर भेंट।

1000/- श्रीमती केशर एवं श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, अपने विवाह की 45 वीं वर्षगांठ तथा अपने पौत्र राहुल गांग पुत्र श्रीमती योगिता-राजेश गांग के 15 वें जन्म दिवस एवं अपनी पौत्री सुश्री रूपल गांग के 12 वीं कार्मस सी.बी.एस.ई. में 94 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपनी स्कूल में प्रथम स्थान पर रहने पर भेंट।

600/- श्री संदीप जी, धीरज जी भंडारी, बैंगलोर, सप्रेम भेंट।

501/- श्री देवकरण धर्मचन्द जी जैन, कोटा, स्व. श्रीमती नन्दकंवर बाईजी (मातुश्री) की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्रीमती दर्शना जी धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र प्रसाद जी चौधरी, सवाईमाधोपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में सरस्वती नगर, जोधपुर में वर्षी तप पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती सीरेकंवर जी मेहता, जोधपुर, श्री भभूतराज जी मेहता की 18 अप्रेल को पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री भीकमचन्द जी, अरविन्द कुमार जी मुणोत, बागबारह (छतीसगढ़), श्रीमती आशाबाई जी मुणोत के वर्षीतप पारणा के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री आयूष बोहरा, दिल्ली, अपने परदादा की 21वीं पुण्यतिथि पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री आयूष बोहरा, दिल्ली, अपने परदादी श्रीमती बदनकंवर बोहरा धर्मपत्नी स्व. श्री बस्तीमल जी बोहरा की दूसरी पुण्यतिथि दिनाँक 17 जुलाई, 2011 पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्रतापनगर, जोधपुर, मुमुक्षु बहिन सुश्री कान्ता जी पींचा का सामायिक-स्वाध्याय भवन (महावीर भवन) प्रतापनगर में 10 अप्रेल, 2011 को भाई-बहिनों द्वारा स्वागत-अभिनन्दन करने एवं खोल भरने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती मोहनकँवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री बुद्धराज जी कोठारी, मेड़तासिटी-नागौर सुपुत्र श्री राजेन्द्र जी कोठारी की शादी के 25 वर्ष सानन्द पूर्ण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रमोद कुमार जी, प्रवीण कुमार जी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़, सुश्राविका माताश्री श्रीमती शांतिदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री अमरचन्द जी मोदी (डीडवाड़ा वाले) का दिनांक 30 अप्रेल को संथारा पूर्वक स्वर्गगमन होने पर।

500/- श्रीमती रूपादेवी धर्मपत्नी श्री गणपतलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में सरस्वती नगर, जोधपुर में वर्षी तप पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री धनपतराज जी, सुरेशचन्द जी भंसाली, मुम्बई, स्वर्गीय पूज्य पिताश्री श्री विजयराज जी भंसाली की चतुर्थ पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- सुश्री हर्ष जी, लब्धि जी जैन, मुम्बई, सप्रेम भेंट।

500/- श्री पन्नालाल जी, माणकचन्द जी श्री श्रीमाल, ब्यावर-अजमेर, श्री लालचन्द जी श्री श्रीमाल की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती सूरजकान्ता जी नाहर, जोधपुर, द्वारा सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- श्रीमती चन्द्रकला जी धर्मपत्नी श्री पवनलाल जी नाग सेठिया, होलनांथा, जिला-धुलिया (महा.), द्वारा भेंट।

2100/- स्व. श्री उत्तमचन्दजी सुपुत्र श्री चुन्नीलालजी चोरडिया, इच्छापुर (म.प्र.), द्वारा भेंट।

501/- श्रीमती दर्शना जी धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र प्रसाद जी चौधरी, सवाईमाधोपुर पूज्य आचार्य भगवन्त, उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में सरस्वती नगर, जोधपुर में वर्षी तप पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, शाखा बजरिया को साभार प्राप्त

1100/- श्री सूरजमजल जी रमेशचन्द जी बगावदा वाले, सवाईमाधोपुर, पिताजी श्री लड्डूलाल जी जैन 'बगावदा' वालों की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री बाबूलाल जी, जम्बूकुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. संदीप सुपुत्र श्री जम्बूकुमार जी के विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री हरकचन्द जी, रमेशचन्द जी जैन, मोहम्मदपुरा वाले सवाईमाधोपुर, चि. सुनील जैन का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार

4000/- श्रीमती चन्द्रकला पवनलाल जी नागसेठिया, होलनांथा, धुलिया (महा.), द्वारा भेंट।

2100/- श्रीमती अरूणा संजीव जी जैन, होशियारपुर (पंजाब), द्वारा सप्रेम भेंट।

1001/- श्री रामकृष्ण जी कुंभट, नेहरूपार्क, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री मगराज जी कुम्भट की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार

11000/- श्रीमती शकुन्तला जी धर्मपत्नी श्री रतनलाल जी रांका, सैलाना, पूज्य आचार्य भगवन्त एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में सरस्वती नगर, जोधपुर में अक्षय तृतीया पर वर्षीतप पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

2,52,000/- श्री धनपत जी भंसाली, मुम्बई (महा.)।

1,80,000/- श्री मांगीलाल जी, श्री हरीशकुमार जी कवाड़, चेन्नई (तमिलनाडु)

12,000/- श्रीमती उषा जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)

12,000/- श्री सुमेरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)

12,000/- श्रीमती कंचन जी, श्री राजीव जी, श्री संजीव जी बापना, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)।

12,000/- श्री नरेश कुमार जी (सी.ए.) श्री डूंगरचन्द जी बूरट, जलगांव (महा.)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

ज्येष्ठ शुक्ला 14	मंगलवार	14.06.2011	चतुर्दशी, पूज्य रतनचन्द्र जी म.सा. की 166 वीं पुण्य तिथि
ज्येष्ठ शुक्ला 15	बुधवार	15.06.2011	पक्खी
आषाढ़ कृष्ण 8	गुरुवार	23.06.2011	अष्टमी
आषाढ़ कृष्ण 8	शुक्रवार	24.06.2011	अष्टमी
आषाढ़ कृष्ण 14	गुरुवार	30.06.2011	चतुर्दशी, पक्खी
आषाढ़ शुक्ला 8	शुक्रवार	08.07.2011	अष्टमी
आषाढ़ शुक्ला 14	गुरुवार	14.07.2011	चतुर्दशी, पक्खी, चातुर्मास प्रारम्भ
श्रावण कृष्ण 8	शनिवार	23.07.2011	अष्टमी

'मुक्ति का राही' प्रश्न-पुस्तिका में संशोधन

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर शाखा द्वारा 'मुक्ति का राही' पुस्तक पर आयोजित प्रतियोगिता की प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली 16 में छपे टेबल को इस प्रकार पढ़ा जाए-

शा	भि	शि	न	र्ज	का	क
नि	स	र	प्र	रो	न	च
र	हि	सं	रि	मा	त	यो
त्य	भा	व	त	च	न	ता
प्र	सा	क	स	म	ना	यु
अ	ग	ध्या	र	य	क	त
पु	त्म	मि	ष	णि	गी	षि
भा	त	रु	श्रु	र	ता	ध

विशेषण

1.	(7)	6.	(6)
2.	(6)	7.	(5)
3.	(6)	8.	(5)
4.	(6)	9.	(5)
5.	(6)	10.	(4)

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा क्रियान्वित

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक,इतिहास मार्तण्ड, युग प्रवर्तक, युगमनीषी, आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष 2011 को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई। इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है।

इस योजना के माध्यम से गत पांच वर्षो से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार हैं-

नियमावली

卐 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

卐 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

卐 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

卐 आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा।

卐 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	**Up to Class 10th**	**11th & 12th**	**Graduation & Post Graduation**	**Professional Etc.**
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

卐 चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।

卐 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए। **आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-** B.Budhmal Bohra, No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.- 044-42728476, Email- guruhasti_scholarship@yahoo.com

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है। आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है। आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन-पत्र Download कर सकते हैं।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान) फोन नं. 2575997, 2571163 फैक्स नं. 0141-2570753

प्रकाशित साहित्य-सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	दर रु.
1.	अमरता का पुजारी	15
2.	अमृत-वाक्	10
3.	अजीव पर्याय	5
4.	आवश्यक सूत्र (हिन्दी-अंग्रेजी)	10
5.	आहार संयम और रात्रि भोजन त्याग	4
6.	आचारांगसूत्र (मूल)	10
7.	आध्यात्मिक आलोक	40
8.	आध्यात्मिक पाठावली	2
9.	आनुपूर्वी	10
10.	अहिंसा निउणा दिट्ठा	40
11.	अध्यात्म की ओर*	30
12.	अन्तगडदसासूत्र	30
13.	भक्तामर स्तोत्र	10
14.	चौदह नियम	4
15.	24 ठाणा का थोकड़ा	5
16.	दशवैकालिकसूत्र	40
17.	दशवैकालिकसूत्र (हिन्दी भावार्थ)	20
18.	दीक्षा कुमारी का प्रवास	25
19.	दो बात	5
20.	दुर्गादास पदावली	5
21.	एकादश चरित्र संग्रह*	15
22.	गजेन्द्र सुक्ति सुधा*	20
23.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-1	15
24.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-2	15
25.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-3	15
26.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-4	15
27.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-5	15
28.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-6	15
29.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-7	15
30.	गजेन्द्र पद मुक्तावली	5
31.	गमा का थोकड़ा	10
32.	गुणस्थान स्वरूप	3
33.	गुरु गरिमा एवं श्रमण जीवन	100
34.	ज्ञातासूत्र की कथायें	10
35.	ज्ञान लब्धि, द्रव्येन्द्रिय का थोकड़ा	2
36.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1*	15
37.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-2	25
38.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-3*	15
39.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-4	25
40.	जैन इतिहास के प्रसंग भाग-1 से 40	5
41.	जैन आचार्य चरितावली	15
42.	जैन स्वाध्याय सुभाषित माला*	10
43.	जैन तमिल साहित्य और तिरुकुरल	20
44.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-1*	225
45.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-2	225
46.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-3	225
47.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-4	225
48.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास संक्षिप्त	75
49.	जैनागम	50
50.	जैन विचारधारा में शिक्षा	25
51.	जैन धर्म में ध्यान	70
52.	झलकियाँ जो इतिहास बन गईं	15
53.	जीवन निर्माण भजनावली	2
54.	जीवन अमृत की छाँव*	20
55.	जीव धड़ा	3
56.	जीव पज्जवा, काय स्थिति	5
57.	कर्म प्रकृति	2
58.	कर्मग्रन्थ	15
59.	कुलक कथायें	20
60.	कायोत्सर्ग	50
61.	लघुदण्डक	3
62.	नवतत्त्व	5
63.	निसीहज्झयणं (मूल)	10
64.	निर्ग्रन्थ भजनावली	40
65.	नमो गणि गजेन्द्राय	20
66.	पच्चीस बोल (विवेचन सार्थ)	10
67.	25 बोल (मूल)	3
68.	पाँच बात	5
69.	पथ की रुकावटें	15
70.	प्रश्नव्याकरणसूत्र भाग-1	45
71.	प्रश्नव्याकरण सूत्र भाग-2	35
72.	प्रार्थना प्रवचन	15
73.	प्रथमा पाठ्यक्रम (प्रतिक्रमणसूत्र)	5
74.	प्रतिक्रमण विशेषांक	50
75.	प्रेरक कथाएँ	20
76.	पर्युषण साधना	5
77.	पर्युषण सन्देश	20
78.	पर्युषण पर्वाराधन	15
79.	मुक्तक-मुक्ता	15
80.	मुक्ति का राही	100
81.	रत्नसंघ के धर्माचार्य*	20
82.	रत्नस्तोक मंजूषा	5
83.	67बोल उपयोग, संज्ञा और	2
84.	47 बोल, 50 बोल व 800 बोल	3
85.	समिति गुप्ति-गति आगति	2
86.	सामायिक सूत्र प्रवेशिका पाठ्यक्रम	5
87.	सप्त कुव्यसन*	5
88.	षड्द्रव्य एवं विचार पंचशिका	5
89.	सिरि अन्तगडदसाओसूत्र	35
90.	सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी	5
91.	शिवपुरी की सीढ़ियाँ*	15
92.	शास्त्र स्वाध्याय माला	20
93.	श्रमण आवश्यक सूत्र	10
94.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	5
95.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	10
96.	श्रावक के बारह व्रत	5
97.	श्री सामायिक सूत्र (सार्थ)	3
98.	श्री नवपद आराधना*	5
99.	श्री नन्दीसूत्रम्	40
100.	सुख विपाक सूत्र*	10
101.	स्वाध्याय स्तवन माला	30
102.	सामायिक साधना और स्वाध्याय	10
103.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1	30
104.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-2	50
105.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-3*	50
106.	उत्तराध्ययनसूत्र हिन्दी	50
107.	उत्तराध्ययनसूत्र पद्यानुवाद	20
108.	युवा सँवारे यौवन	20
109.	वैराग्य शतक	5
110.	व्रत प्रवचन संग्रह	10
111.	बृहत्कल्पसूत्रम् (सटीकम्)	30
112.	बृहद् आलोयणा	5

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 25 अगस्त से 01 सितम्बर तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 31 जुलाई 2011 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं...
....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.......................................
....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?...................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?......................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव...
....
10. अन्य विशेष विवरण..

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679 फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279, 94145-69982

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

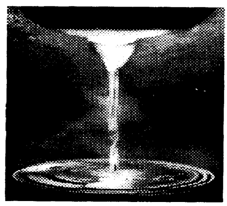
Electric Arc Furnace

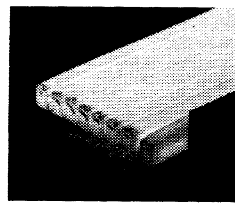
Billets

Rolling Mill

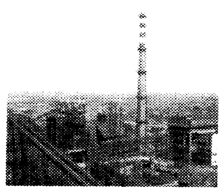
Captive Power Plant

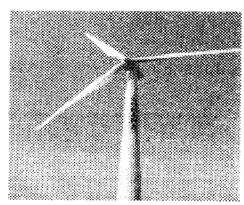
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय !   हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

युवा शक्ति उर्ध्वारोहण "The Power of Youth"

युवक परिषद् की ओर से 'युवा शक्ति उर्ध्वारोहण' **"The Power of Youth"** का आयोजन दिनांक 23 जून से 26 जून, 2011 तक चैन्नई में किया जा रहा है, जिसमें युवक परिषद् के केन्द्रीय कार्यकारिणी पदाधिकारी, सदस्य एवं शाखा पदाधिकारियों की सपरिवार उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। बच्चों को आधुनिक तरीकों से संस्कार एवं युवाओं और श्राविकाओं के जीवन विकास के सूत्र दियें जायेगें, अत: बच्चों व धर्मसहायिका के साथ पधारें।

दिनांक 23 व 24 जून, 2011 को कोडैकानल में कार्यक्रम रहेगा। दिनांक 25 व 26 जून को प्रात: से सायं 4.30 बजे तक रत्नसंघ के अटम् पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्यश्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्ति महासति श्री ज्ञानलताजी म.सा. के सान्निध्य में धार्मिक शिविर रहेगा। दिनांक 25 जून को सायं 6.30 बजे युवक परिषद् केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित होगी। आपको दिनांक 22 जून को सायं 4.00 बजे से पहले चैन्नई पहुँचना है। **सम्पर्क करें – बुधमल बोहरा,** चैन्नई (अध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद) **044–42728476, 9444235065 राजकुमार गोलेच्छा, पाली** (कार्याध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद) **9829020742, मनोज कांकरिया, जोधपुर** (महासचिव, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद) **9414563597**

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का दीया जलाईये, सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक / डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income TaxAct, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें –**

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164)
4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597)
7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411)
11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जून, 2011 ★ ज्येष्ठ, 2068

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.

Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131

Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।